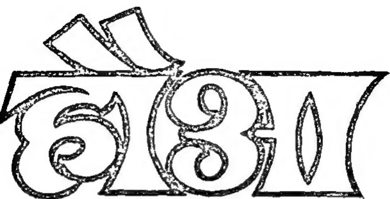


[illegible] नौसेनापति कानोजी आंग्रे के जीवन पर आधृत
ऐतिहासिक उपन्यास

हौआ



चिल्ड्रन बुक सोसायटी
महरौली, नई दिल्ली-३०

अपनी बात

कान्होजीराव आंग्रे का नाम बहुत कम लोगों, बालकों या किशोरों ने सुना-पढ़ा होगा। वह मराठों की समुद्री शक्ति के मुख्य स्तम्भ थे। उनके नेतृत्व में मराठों की समुद्री सेना बहुत शक्तिशाली बनी। दुश्मन उनके नाम से थर-थर काँपता था।

हमारे देश के सेनापतियों, विशेषतः नौसेनापतियों में कान्होजी-राव आंग्रे का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। उनसे पहले हमारी समुद्री ताकत बहुत कमजोर थी। जंजीरा के सिद्दियों, मुगलों, डचों, फ्रेंचों, पुर्तगालियों और अंग्रेजों से बार-बार भय बना रहता था। लेकिन कान्होजी ने अपने अदम्य साहस, शौर्य एवं चतुराई से उन पर काबू पाया और नौसेना को शक्तिशाली बनाया। निर्धन घराने में जन्म लेकर वह अपनी योग्यता के बल पर सर्वोच्च नौ-सेनापति बन सके।

यह बड़े गर्व का विषय है कि ऐसे कुशल मराठा नौसेनाध्यक्ष की याद को अमर बनाए रखने के लिए भारतीय नौसेना ने बम्बई-स्थित अपने बहुत बड़े प्रतिष्ठान का नाम आइ. एन. एस. आंग्रे रखा है। इस इतिहास-पुरुष के महान कृत्यों के लिए यह उपयुक्त सम्मान है।

ऐसे व्यक्तियों के चरित्र को पढ़ना प्रेरणाप्रद होता है। इसे पढ़-कर बाल-किशोर, प्रबुद्ध पाठकों को और भी बहुत-कुछ मिलेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

—लेखक

एक

झलक

दिन अब भागने के लिए तैयार बैठा था। सूरज का लाल गरम गोला अपने तन की जलन दूर करने के लिए पहाडियों के पीछे फैले अथाह सागर में डुबकी लगाने के विचार से पश्चिम के रास्ते नीचे उतर रहा था। उजाले को अंधेरे ने डसना शुरू कर दिया था। और वह काला पडने लगा था। आकाश की नीली चादर धुंधली पड़ चुकी थी। कहीं-कहीं तारे एक-एक कर नीली चादर में उभरने लगे थे। पछी दलो में अपने-अपने घोंसलों की ओर उमड़ रहे थे। दुधारु चौपाए गले में बंधी घंटियों का मधुर स्वर करते हुए रास्तो मे धूल उडाए अपने-अपने डेरों की ओर बढ़ रहे थे। धीरे-धीरे तारे अधिक सख्या में उभर कर आकाश में चारों ओर दूर-दूर तक छितरते जा रहे थे।

खेतों में बिखरी अनेक झोपड़ियाँ अनाज के दानों की तरह बिखरी हुई बड़ी सुन्दर लग रही हैं। उनके तेल के दिए जल कर प्रकाश फैलाने लगे हैं। गाएँ झोपड़ी के बाहर साफ-सुथरे आगन में बछड़ों को चाटती हुई रंभा रही हैं। बछड़े थनों के पास जाने के लिए तड़प रहे हैं।

इनमें एक झोंपड़ी तुकोजी की है। वह एक सीधा-सादा गरीब आदमी है। उसके पास एक कबरी गाय है। तुकोजी ने आंगन में आकर गाय के आगे चारा डाल दिया और बछड़े को छोड़ दिया। बछड़ा लपककर माँ के पास आया और सट कर थनों से दूध पीने लगा। कुछ क्षणों के बाद तुकोजी ने बछड़े को अलग कर पास के खूँटे से बाँध दिया और बालटी लेकर दूध दोहने लगा। हवा में कुछ अधिक ठंडक भर चली थी। उसके झोंके बदन को काट-से रहे थे। झोंपड़ी के अन्दर से भारी-भरकम आवाज़ हवा के झोंकों के साथ बाहर आने लगी—

शांताकारम् भुजग शयनम्
पद्मनाभम् सुरेशं विश्वाधारम्
गगन सदृशम् मेघवर्णम् शुभांगम

लक्ष्मीकांतम्, कमलनयनम्
योगिभिः ध्यानगम्यम्
वंदे विष्णु भवभय हरय
सर्वलोक एक नाथम्······

यह मधुर आवाज थी कान्होजी की : तुकोजी के एक मात्र लाडले बेटे की। सुबह, दोपहर, रात तीनों समय खूब भजन करना, खेलना-कूदना और पहाड़ियों में सैर-सपाटा करना—यह कान्होजी का प्रतिदिन का नियम था। लेकिन इतना होने के बावजूद माँ-बाप ने उस पर अच्छे संस्कार डाले थे। महाराष्ट्र में पुराने समय से ही यह प्रथा चली आई है कि दिया-बत्ती लगने पर बालक हाथ-मुंह-पैर धोकर भगवान की मूरति के सामने बैठ कर गिनती-पहाड़े, रामरक्षा, गणेश-स्तुति, शिव-विष्णु-स्तुति, मनाचे श्लोक आदि का पाठन करते हैं। इस पठन को मराठी भाषा में 'परोचा' कहा जाता है। इसका पठन करने से बालक का मन पवित्र रहता है। उसमें सद् विचार जागते

हैं। दिल और दिमाग फिजूल की बातों में न भटक कर सही मार्ग चलता है। चरित्र में दृढ़ता आती है।

कान्होजी के मुख से निकलते हुए परोचा के शब्द उसकी मां कृष्णाबाई बड़े ध्यान से सुन रही थी। उसे कौतुक हो रहा था अपने लाड़ले के उच्चारण सुन कर। संस्कृत के श्लोक कितनी सफाई और स्पष्ट शब्दों में कह रहा था! वह चूल्हे पर ज्वार की रोटियां सेंक रही थी, पर कान कान्होजी के पठन की ओर लगे हुए थे। बीच-बीच में वह हुंकार भर रही थी।

कुछ ही देर बाद तुकोजी दूध से भरी बाल्टी अन्दर ले आया। वह भी कान्होजी-द्वारा कहे जाने वाले श्लोक बड़ी आत्मीयता से सुन रहा था। अन्दर आकर उसने बेटे पर प्यार-भरी नजर डाली। बाल्टी को थाल से ढक कर उसने हाथ-पैर धोए और भोजन के लिए बेटे का परोचा खत्म होने की प्रतीक्षा करने लगा। कान्होजी तन्मयता से कह रहा था—

शुभम् करोति कल्याणम्
आरोग्यम् धनसम्पदा
शत्रुबुद्धि विनाशाय
दीपुज्योति नमस्तुते···

मां कृष्णाबाई ने रोटियां सेंक कर परात में ढक दी। फिर वह नारियल गिरि और लहसन की चटनी सिलबट्टे पर पीसने लगी।

कान्होजी कह रहा था—

निर्विघ्नम् कुर्मेदेव सर्व कारेयु सर्वदा
गणनाथा सरस्वती रविशुक्र बृहस्पति
पंचेतानि स्मरे नित्यम वेदवाणी प्रभृत्यये।···

श्लोक पूरे कह लेने के बाद कान्होजी उठ खड़ा हुआ। पास ही दीवार में बहुत बड़ा आला था। इसमें शंकर, दत्तात्रेय, विष्णु तथा

इनमें एक झोंपड़ी तुकोजी की है। वह एक सीधा-सादा गरीब आदमी है। उसके पास एक कबरी गाय है। तुकोजी ने आंगन में आकर गाय के आगे चारा डाल दिया और बछड़े को छोड़ दिया। बछड़ा लपककर माँ के पास आया और सट कर थनों से दूध पीने लगा। कुछ क्षणों के बाद तुकोजी ने बछड़े को अलग कर पास के खूँटे से बाँध दिया और बालटी लेकर दूध दोहने लगा। हवा में कुछ अधिक ठंडक भर चली थी। उसके झोंके बदन को काट-से रहे थे। झोंपड़ी के अन्दर से भारी-भरकम आवाज़ हवा के झोंकों के साथ बाहर आने लगी—

शांताकारम् भुजग शयनम्
पद्मनाभम् सुरेशं विश्वाधारम्
गगन सदृशम् मेघवर्णम् शुभांगम

लक्ष्मीकांतम्, कमलनयनम्
योगिभिः ध्यानगम्यम्
वंदे विष्णु भवभय हरय
सर्वलोक एक नाथम्······

यह मधुर आवाज थी कान्होजी की : तुकोजी के एक मात्र लाडले बेटे की। सुबह, दोपहर, रात तीनों समय खूब भजन करना, खेलना-कूदना और पहाड़ियों में सैर-सपाटा करना—यह कान्होजी का प्रति-दिन का नियम था। लेकिन इतना होने के बावजूद माँ-बाप ने उस पर अच्छे संस्कार डाले थे। महाराष्ट्र में पुराने समय से ही यह प्रथा चली आई है कि दिया-बत्ती लगने पर बालक हाथ-मुंह-पैर धोकर भगवान की मूरति के सामने बैठ कर गिनती-पहाड़े, रामरक्षा, गणेश-स्तुति, शिव-विष्णु-स्तुति, मनाचे श्लोक आदि का पाठन करते हैं। इस पठन को मराठी भाषा में 'परोचा' कहा जाता है। इसका पठन करने से बालक का मन पवित्र रहता है। उसमें सद् विचार जागते

हैं। दिल और दिमाग फिजूल की बातों में न भटक कर सही मार्ग चलता है। चरित्र में दृढ़ता आती है।

कान्होजी के मुख से निकलते हुए परोचा के शब्द उसकी माँ कृष्णाबाई बड़े ध्यान से सुन रही थीं। उसे कौतुक हो रहा था अपने लाड़ले के उच्चारण सुन कर। संस्कृत के श्लोक कितनी सफाई और स्पष्ट शब्दों में कह रहा था! वह चूल्हे पर ज्वार की रोटियां सेंक रही थी, पर कान कान्होजी के पठन की ओर लगे हुए थे। बीच-बीच में वह हुंकार भर रही थी।

कुछ ही देर बाद तुकोजी दूध से भरी बाल्टी अन्दर ले आया। वह भी कान्होजी-द्वारा कहे जाने वाले श्लोक बड़ी आत्मीयता से सुन रहा था। अन्दर आकर उसने बेटे पर प्यार-भरी नजर डाली। बाल्टी को थाल से ढक कर उसने हाथ-पैर धोए और भोजन के लिए बेटे का परोचा खत्म होने की प्रतीक्षा करने लगा। कान्होजी तन्मयता से कह रहा था—

शुभम् करोति कल्याणम्
आरोग्यम् धनसम्पदा
शत्रुबुद्धि विनाशाय
दीपुज्योति नमस्तुते···

मां कृष्णाबाई ने रोटियां सेक कर परात में ढक दी। फिर वह नारियल गिरि और लहसन की चटनी सिलबट्टे पर पीसने लगी।

कान्होजी कह रहा था—

निर्विघ्नम् कुर्मेदेव सर्व कारेषु सर्वदा
गणनाया सरस्वती रविशुक्र बृहस्पति
पंचेतानि स्मरे नित्यम वेदवाणी प्रभृत्यये।···

श्लोक पूरे कह लेने के बाद कान्होजी उठ खड़ा हुआ। पास ही दीवार में बहुत बड़ा आला था। इसमें शंकर, दत्तात्रेय, विष्णु तथा



हनुमान की पीतल की मूर्तियां फूलों से ढकी सजी थी। इनकी नित्य-प्रति पूजा-अर्चना होती। कथा-कीर्तन होते। सुबह-शाम दोनों समय आरती होती, फूलबात बना कर समई जलाई जाती, इस समय भी समई जल रही थी। समई में तिल का तेल भरा था। उसका प्रकाश आले में फैल रहा था और अलग-अलग आकृतियों में दीवार पर पड़ कर कांप उठता था। कान्होजी ने हनुमान जी की प्रतिमा पर श्रद्धा से गुलाब के फूल चढ़ाये और हाथ जोड़ कर ऊँचे स्वर में पुकारा··· 'हर···हर महादेव। शंभो हर···हर।'

तुकोजी बेटे की ओर देख मन ही-मन मुस्कराये। उन्हें देख कृष्णा-बाई भी कान्होजी की ओर निहार कर मुस्करा दी। ज्वार की मोटी-मोटी रोटियाँ और लहसुन की चटनी का भोजन तैयार हो गया था। उन्होंने प्यार से पूछा—'भोजन करने में कुछ देर है या परोस दूँ?'

'हां कुछ देर है, जरा बेटे के मुंह से समर्थ रामदास के श्लोक सुन लूँ। थोड़ी शांति और आनन्द मिलेगा। क्यों बेटे सुनाओगे न? याद हैं या नहीं तुम्हें?'

कान्होजी प्रसन्नता से कह उठा—'हां-हां क्यों नहीं पिताजी, मुझे समर्थ रामदास जी के 'करुणाष्टक' और मनाचे श्लोक पूरे याद हैं। दो-चार सुन लीजिये—

अनुदिन अनुतापे तापलो रामराया।
परम दीन दयाला, नीरसो मोहमाया।
अचपल मन माझे नावरे आवरीतां।
तुजविण शिण होतो धाव रे धाव आतां।
जनीं सर्व सूखी असा कोण आहे।
विचारे मना तूं चि शोधुनि पाहे॥
मना त्वांचि रे पूर्वसंचित केलें।
तया सारिखे भोगणे प्राप्त झालें॥···

कान्होजी आगे श्लोक बोलना ही चाहता था कि तभी तुकाजी ने कहा—"बस बेटा ! अब आओ भोजन कर लें। कान्हा की मां, भोजन परोसो। बहुत भूख लगी है।"

कृष्णाबाई ने झटपट पानी से लोटा-गिलास भरे और भोजन परोसा। ज्वार की मोटी-मोटी रोटियाँ और लहसुन की तीखी लाल-चटनी थाली में परोसी। नमक और प्याज भी काट कर रख दिया। यही उनका भोजन था। बाप-बेटा दोनों भोजन करने में मग्न हो गये।

वे अभी भोजन कर ही रहे थे कि एक दुबले-पतले छरहरे बदन के लंबे-तड़ंगे व्यक्ति ने दरवाजे पर दस्तक दी। पुकारा, 'तुकोजीराव।'

तुकोजी ने आवाज पहचान ली। वह उनका ही मित्र था और गाँव का मुखिया भी। उन्होंने तुरन्त आत्मीयता से कहा, 'कौन भीख काका ! आओ भाई आओ ! अन्दर आओ, विराजो।'

भीखू काका ने झोंपड़ी में प्रवेश किया और अन्दर आकर 'राम-राम' कह कर चटाई पर आ विराजे। तुकोजी ने जवाब में हाथ उठा कर राम-राम कहा और आवभगत के स्वर में बोले—'काका, भोजन कर लो। लहसून की चटनी बड़ी स्वादिष्ट बनी है। जरा स्वाद चक्खो।'

'शुक्रिया भाई साहब, बस मैं अभी-अभी भोजन करके आ रहा हूं। घर में चावल की खीर बनी थी। सो जरा ज्यादा ही भोजन खाया गया है।' भीखू काका ने कहते हुए बंडी की जेब से तमाखू की पोटली निकाली और चूने के साथ हथेली पर मीड़ कर उसे मुंह में डाला और धीमी आवाज में बोला, 'मैं सुवर्ण दुर्ग के मराठा जल-सेनापति से मिला था। सिद्धोजी गुज्जर यहां अपने रिश्तेदार के पास आया हुआ है। मेरी उसकी पुरानी जान-पहचान है। वह मुझे बहुत मानता है और मेरा आदर करता है। मैंने उससे तुम्हारे बारे में बात की है।

बताया है कि मेरा एक मित्र किसान है। उसकी छोटी-सी खेती-बाड़ी है। जो अनाज वह खेत में उगाता है वह उसके छोटे-से परिवार के लिए पर्याप्त है। उसकी इच्छा है सेना में भर्ती होकर देश-सेवा करने की। वह तलवार चलाना, निशाना साधना, पट्टा घुमाना आदि युद्ध की बातें बखूबी जानता है। अगर हो सके तो उसका कल्याण कर दो। मेरी बात वह नहीं टाल सका। बोला—"अपने मित्र को ले आओ। मैं बातचीत करके अभी उसकी नौकरी पक्की कर देता हूं।" अगर चाहो तो मेरे साथ चलो। उससे बात कर लेना।

सुन कर तुकोजी बहुत प्रसन्न हुआ। खुशी के मारे उसका मन बल्लियों उछलने लगा। हंस कर कह उठा—"यह बहुत अच्छा किया तुमने भीखू काका! मैं आपका अहसान जीवन-भर नहीं भूलूंगा। ईश्वर की कृपा से सपना सच होने वाला है। मैं अपने बेटे कान्होजी को भी सिपाही बनाने की सोच रहा हूं। देश की कुछ सेवा हो जाये तो बहुत खुशी होती है। मैं भोजन कर लूं फिर चलते हैं। हो सकता है सिद्धोजी गुज्जर मान जाये।'

भोजन कर चुकने के बाद तुकोजी ने हाथ धोए, कुल्ला किया और साफी से हाथ पोंछे। इसके बाद सरोते से सुपारी बारीक कतर कर मुंह में डाली। फिर पत्नी से बोला—अच्छा तो मैं काका के साथ जा रहा हूं। जरा देर हो जाए तो चिन्ता न करना। और कान्होजी के कपड़े धोकर कल तयार रखना। मैं परसों हरणाई गांव जाकर उसे श्रीपाद गुरु के पास छोड़ आऊंगा। चार-पांच वर्ष उनके सान्निध्य में रहकर शिक्षा-दीक्षा ग्रहण कर लेगा तो अच्छा सुविचारी नागरिक बन जाएगा। संसार में किसी से मात नहीं खाएगा। मुसीबतों का धैर्य से सामना करने की उसमें शक्ति आ जाएगी। वह चतुर बन जाएगा।

'अच्छी बात है,' कृष्णाबाई ने आनन्द-विभोर होकर कहा—"मैं कल ही उसकी तैयारी कर देती हूं। मेरा बेटा पढ़-लिख कर

विद्वान् होगा, इससे बढ़ कर माँ-बाप को और क्या चाहिए। मुझे तो बेहद खुशी हो रही है।'

पत्नी की बातें सुनकर तुकोजी के मन को बड़ा समाधान मिला, उन्हें अपार आनन्द हुआ। "अच्छा तो मैं जाता हूं।" कह कर कपड़े पहन वह भीखू काका के साथ हो लिये।

पति के जाने के तुरन्त बाद आनन्द में डूबी कृष्णाबाई उसी की थाली में रोटी और चटनी लेकर भोजन करने बैठ गई। कान्होजी भोजन कर झोंपड़ी के बाहर आया। उसने गाय पर प्यार से हाथ फेरा और बछड़े को पुचकारा। बरामदे में काफी घास-चारा फैला पड़ा था। कान्होजी ने हाथ से उठाकर एक कोने में जमा किया। फिर झाड़ू से बुहार लगा कर आंगन को साफ किया। थोड़ा चारा गाय और बछड़े के आगे डाल दिया। गाय लंबी जीभ बाहर-अन्दर कर घास पर मुंह मारने लगी। लेकिन बछड़े ने केवल मुंह लगा कर सूंघा, खाया नहीं। वह कान हिला कर हंबरने लगा।

कान्होजी उसकी ठिठोली को प्यार से देख कह उठा—जानता हूं, तुझे क्या चाहिए। लेकिन अभी नहीं, सुबह मिलेगा तुझे अपनी माँ का दूध। वह उसी खुशी में अन्दर चला आया। तब तक कृष्णाबाई भोजन कर बर्तन मांज चुकी थी। कान्होजी ने दो बिस्तर बिछा दिए। एक अपने और मां के लिए और दूसरा पिता के लिए। फिर वह बिस्तर पर अधलेटा होकर माँ की ओर देख बोला—"मां, आज कोई कहानी सुनाओगी न ?"

कृष्णाबाई ने सुपारी मुंह में डाली और बेटे की बगल में लेटते हुए बोली—"क्या सुनाऊँ बेटा ? रामायण की पूरी कहानी सुना दी है। सम्पूर्ण महाभारत भी हो चुका। पृथ्वीराज चौहान, राणा सांगा और छत्रपति शिवाजी का चरित्र तूने पढ़ ही लिया है। अब रही गीता-वेद-पुराण आदि की बातें। वह मुझे नहीं मालूम। अब परसों

से तू श्रीपाद गुरु के आश्रम में रहने जा रहा है। अब वे तुझे सारी कहानियाँ सुनायेंगे। वहाँ खूब लिख-पढ़ कर योग्य बनना।

तभी सहसा कुछ सोच कर कान्होजी बोले—'माँजी, यकायक पिताजी कहाँ चले गये, भीखू काका के साथ ?'

"सुवर्ण दुर्ग का जल-सेनापति सिद्दोजी गुज्जर गाँव में आया हुआ है। उसी के पास नौकरी की बात करने तेरे बापू गए है। वे सिपाही बनना चाहते है। देश के काम आना चाहते हैं। बहुत दिनों से वह यही सोच रहे थे। लेकिन अवसर नही मिलता था। आज अचानक सेनापति का गाँव में आना हुआ है। रही खेती की बात। सो उसके लिए येसाजी को नौकर रख लिया है। वह अगले रविवार मे खेत की जुताई प्रारम्भ करेगा।' फिर बोली—खैर तुझे इन बातों से अभी कोइ मतलब नहीं। तुझे सीखने-समझने के लिए बहुत-सी बातें हैं।

'वह कौन-सी माँ ?'

कृष्णाबाई ने कहा—मनुष्य को सदा अपना चरित्र उज्ज्वल और ऊँचा रखना चाहिए। चरित्र ससार मे सबसे अनमोल वस्तु है। हर चीज पैसों से खरीदी जा सकती है पर चरित्र नहीं।

'हाँ माँ जो ! श्री रामचन्द्र जी की तरह ! उनका चरित्र कितना ऊँचा था। कितना उज्ज्वल था !'

'इसीलिए तो वह भगवान कहलाए बेटा ! जब तक मानव जाति इस धरती पर विद्यमान रहेगी, रामचन्द्र जी की भगवान के रूप में पूजा होगी।'

कृष्णाबाई आगे बोली—इन्सान को सदा अपना मन शुद्ध और पवित्र रखना चाहिए। इससे आत्मा सबल होती है। और आत्मबल चरित्र तथा जीवन को हमेशा ऊँचा उठाता है। धर्मराज युधिष्ठिर और लक्ष्मण के चरित्र तुम सुन चुके हो। क्यों ?

'हाँ माँ साहेब !' कान्होजी ने प्रेरणा से कहा। उनकी आँखें चमक
ही थीं। उन्होंने मां की आँखों में देखा—प्रतीक्षा थी उनमें ! अभी
कोजी लौटे नहीं थे।

कान्होजी विस्तर से उठे। पानी पीकर उसने दरवाजा खोला
ौर झांक कर देखा। दूर तक कोई दिखाई नहीं दे रहा था। वह पुनः
ाकर विस्तर पर लेट गए। कृष्णाबाई ने जानकर भी पूछा—आ
गए तेरे बापू ?

'नहीं !' वह बोला।

कृष्णाबाई ने कहा—ईमानदारी सबसे बड़ी चीज है। मनुष्य को
सदा ईमानदार होना चाहिए। अपने प्रति और दूसरे के प्रति। जो
बात स्वयं उसे ठीक न जचे उसका प्रयोग दूसरे के प्रति नहीं करना
चाहिए। हिम्मत-हौसला कभी नहीं हारना चाहिए।

'इसीलिए बापू दिन-भर मेहनत करते हैं। पसीना बहाते हैं लेकिन
फिर भी उनके चेहरे पर हमेशा मुस्कान बनी रहती है। वे कभी
हिम्मत नहीं हारते। क्यों माँ साहेब ?'

'हाँ, ठीक कहते हो, और सदा याद रखना बेटा, कि काम से कभी
जी नहीं चुराना। आज का काम आलसवश कल पर नहीं छोड़ना।
ईमानदारी से हर इन्सान को अपना काम करते रहना चाहिए। उसका
फल भगवान पर छोड़ दो। वह जो कुछ करता है सदा ठीक ही करता
है। ईश्वर में सदा विश्वास रक्खो और हमेशा मन में अच्छे विचारों
को ही आने दो। अन्याय का सदा प्रतिकार करो। शत्रु को भी क्षमा
करना हम भारतीयों का धर्म रहा है। लेकिन इसका मतलब यह न
समझना कि यदि शत्रु हमें बार-बार तकलीफ दे या नुकसान
पहुँचाने का प्रयत्न करे तो भी उसे क्षमा करें। नहीं, उसे
ऐसा दंड देने का भी हम में बल हो कि वह पुनः आंख उठाकर
हमारी ओर देखने का साहस न कर सके···कहते-कहते कृष्णाबाई

की नींद लग गई। नौ वर्षीय कान्होजी भी सो गया। रात को देर से तुकोजी घर लौटे तो दोनों को उनके आगमन का पता न चला। रात ज्यादा बीतने के कारण बिस्तर पर पड़ते ही उनकी भी आँख लग गई।

कान्होजी के पिता का पूरा नाम था तुकोजीराव। वह उन दिनों बेरोजगार, बेवतन व्यक्ति की तरह मराठा राज्य में घूम रहे थे। घूमते-भटकते वह पूना के निकट इसी गाँव अंगारवाड़ी में आ पहुंचे। गाँव के पटेल ने उनकी हालत पर रहम खा कर पाच बीघा जमीन का छोटा-सा टुकड़ा खेती-बाड़ी के लिए नाम कर दिया। बस तभी से उनके कुल ने अंगारवाड़ी में रहने के कारण अपना उपनाम आंग्रे रख लिया। अब वह तुकोजी राव आंग्रे कहलाने लगे। इसी झोपड़ी में सन् १६६९ में उनकी पत्नी कृष्णाबाई ने एक सुन्दर बालक को जन्म दिया। वह दिन कृष्ण-जन्माष्टमी का था। इस शुभ दिन के उपलक्ष में बालक का नाम कान्होजी (श्री कृष्ण) रखा गया। उसका जन्म होने पर गाँव के पुरोहित-पंडित ने बालक की जन्मकुण्डली फैला कर देखी और खुश हो कर बोला—तुम बड़े भाग्यवान हो। इस बालक का राजयोग है। यह अवश्य ही समुद्री शक्ति का महान् सेनापति बनेगा। माँ-बाप यह भविष्यवाणी सुन कर बहुत प्रसन्न हुए। दोनों बालक को बहुत प्यार करने लगे। उनके लाड़-प्यार और उचित संस्कारों के वातावरण में पलकर कान्होजी बड़ा हो रहा था।

कृष्णाबाई अधिक पढ़ी-लिखी नही थी। लेकिन उसने बालक को लिखने-पढ़ने का ज्ञान कराया। उसके मन पर ऐसे सस्कार डाले जो राजकुल के लोगों में होते है। प्रतिदिन माँ के मुख से तरह-तरह की ज्ञान और नीतिपरक बाते सुन कर बहुत छोटी आयु मे ही कान्होजी के विचार प्रौढ़ हो गए। उसकी बुद्धि बडी तीक्ष्ण थी।

—oo—

दो

उदय

सूर्य उदय नहीं हुआ था। लेकिन रात के अंधकार में धुंधलापन आ चुका था और वह धीरे-धीरे बढ़ता ही जा रहा था। पेड़ों पर बने घोंसलों में पक्षियों को जाग आ गई थी। उनमें किलबिल शुरू हो गई थी। बागों में कलियाँ चटखने लगी थीं। वह मुसकुराने के लिये उतावली हो कर हवा के झोंके में झूल रही थीं। प्रकृति ने पूर्व दिशा में सैंकड़ों मन गुलाल बिखेर दिया था। ताजा ठंडी हवा किसी आजाद किये बन्दी की तरह इतराती हुई डोल रही थी।

कृष्णाबाई कुएँ से पानी भर कर नहा ली थी। उसने सिर धोया था। बाल पोंछ कर सूखने के लिये पीठ पर खुले छोड़ दिये थे जो कमर के नीचे तक लहरा रहे थे। सुबह की भूपाली मधुर स्वर में गाते हुये उसने गाय के आगे सानी रख दी और पति को जगा कर दूध दोहने के लिये कहा। इसके बाद उन्होंने शिव-स्तुति कहना प्रारम्भ किया, आंगन में पानी छिड़का और फिर देहरी तथा आंगन में रंगोली काढ़ने लगी।

पत्नी की आवाज सुन तुकोजी हड़बड़ा कर उठे और झट-से

निवट कर गाय का दूध दोहने बैठ गये। उधर कृष्णाबाई ने मीठ स्वर में पुकारा—कान्हा बेटा उठो, जल्दी से नहा-धोकर तैयार हो जाओ। थोड़ी ही देर में बैलगाड़ी पहुंचने वाली है। तुम्हें गुरुजी के यहाँ जाना है न? फूर्ती करो। बापू दूध दोह रहे हैं।

माँ की ममतामयी आवाज कान्होजी के कानों में अन्दर तक पैठ गई। उसे जैसे फूर्ती की तरग छू गयी। वह उछल कर बिस्तर पर बैठ गया। फिर धीरे-धीरे आँखें खोल कर वातावरण का जायजा लेने लगा। माँ के शब्दों ने उसके मन में उत्साह भर दिया। वह उमंग से उठ खड़ा हुआ और आँखें मलते हुए बाहर गाय के पास आया। कौतुक से बोला—बापू, आज गुरुजी के पास चलोगे न?

'हाँ हाँ बेटा, जल्दी से निवट कर नहा-धो लो। खडोबा की पूजा करो और नये कपड़े पहन लो। मैं आज ही तुम्हें गुरुजी के आश्रम में छोड़ आता हूं। तुम्हें दो-तीन वर्ष उन्ही के आश्रम में रह कर विद्या पढ़नी होगी। इस बीच माँ और बापू के तुम्हे दर्शन नही होंगे, समझे? वहाँ मन लगा कर खूब पढ़ना-लिखना और विद्वान् बनना। अगर योग्य बन गये तो पूना चल कर छत्रपति शिवाजी के दरबार में तुम्हे उनके चरणों में सौप दूंगा।

दूध दोहते-दोहते तुकोजी ने बेटे पर एक सरसरी दृष्टि डाल कर देखा। उसके चेहरे पर अपार उत्साह और आनन्द छाया हुआ था। मन प्रसन्नता से उछल पड़ता था उसका। उसने मुस्कराकर केवल इतना कहा—'अच्छा बापू, मैं खूब पढ़ूंगा। विद्वान् होऊंगा। आपकी इच्छाओं को पूरा करूंगा। मेरी ओर से आप निश्चिन्त रहें। आप को निराश न होना पड़ेगा।'

'मुझे तुम से यही उम्मीद है बेटा! तुम कुल का नाम रोशन करो यही मेरी हार्दिक इच्छा है। पढ़-लिख कर विद्वान् और योग्य सेना-नायक बनो तो तुम्हें मराठा शासन में अवश्य ही ऊँचा और सम्मान-जनक पद मिलेगा।' दूध दोहना निपटा कर बाल्टी अन्दर ले जाते

ए तुकोजी ने आशा व्यक्त की। उनके चेहरे पर अपार समाधान झलक रहा था। बेटे के कथन से मन में उचित आदर-गर्व भर गया था।

कृष्णाबाई खाना पका रही थी। लेकिन उसके कान बाप-बेटे की बातचीत पर लगे हुए थे। मन-ही-मन खण्डोबा को लाख-लाख धन्यवाद देते हुये वह रोटियाँ सेक रही थी। झटपट रोटी बनाकर उसने चूल्हे पर दूध गरम करने के लिये रख दिया। फिर वह चौका साफ करने में उलझ गई। झाड़ू से बुहारी देते हुये वह बोली—
एजी सुनते हो कान्हा के बापू !

'हाँ, कहो सुन रहा हूं, क्या आज कोई नई बात है क्या ? नई खबर कोई ?' तुकोजी ने मुस्कराते हुए पूछा।

'हमारा कान्हा आश्रम में कितने दिनों के लिये जा रहा है ?'

'पढ़ाई पूरी कर लेने तक वह आश्रम में ही रहेगा। कम-से-कम तीन-चार वर्ष तो लग ही जाएंगे। क्यों क्या बात है ? बहुत चिन्तित हो गई हो !'

'वहाँ आश्रम में मेरे बेटे की देखभाल कौन करेगा ? कब खाता है, क्या खाता है, क्या ओढ़ता है, क्या पहनता है—इसकी देखभाल कौन करेगा ?

'चिन्ता न करो कान्हा की माँ ! आश्रम में गुरुजी होंगे ही। वे ही तुम्हारे लाड़ले बेटे की देखभाल करेंगे। समय पर उठना, समय पर पढ़ना समय पर खाना, समय पर खेलना, सब कुछ समय पर होगा। वह अनुशासन में रहना सीख जायेगा। योग्य बनेगा अपना बेटा।'

'हाँ ऐसा ही हो ईश्वर करे। मैंने तो खण्डोबा की मन्नत माँगी है कि मेरा बेटा सर्वगुण, सर्वकला-संपन्न बने और मराठा दरबार में ऊँचा पद हासिल करे तो अगारवाड़ी गाँव के तमाम लोगों को भोज खिलाऊँ और खण्डोबा पर अभिषेक करूँ सवा मन दूध का।' कृष्णाबाई

ने उत्सुक हो कर कहा। उसके मुख पर असीम तेज उमड़ आया।

'अच्छा! यह तो बहुत अच्छी बात सुनाई तुमने। भगवान खण्डोबा की हम पर कृपा बनी रहेगी, ऐसा मेरा विश्वास है। आज तक उसी की कृपा से हम उन्नत होते आये हैं और आगे भी हमें उस की कृपा मिलेगी, मुझे आशा है।'

'आओ दूध पी लो। गरम हो गया है।' कृष्णाबाई ने दूध का पतीला चूल्हे से नीचे उतार कर कहा। फिर बोली—'और आप ने कब जाने का इरादा किया है? आप के जाने के बाद तो यह घर बिल्कुल सूना हो जायेगा। अकेलापन मुझे काटने को दौड़ेगा।'

'मैंने अगले सप्ताह जाने का निश्चय किया है। सिद्धोजी गुज्जर पूना जा रहे हैं, वे लौटते हुए पुनः अंगारवाड़ी रुकेंगे। मैं भी उन्हीं के साथ जाऊंगा। काका ने उनसे मेरा परिचय कराया और कुछ ही देर में वह मुझसे ऐसे घुलमिल गए जैसे हम दोनों की बहुत पुरानी घनिष्ठ मित्रता हो। और वे मुझे अपने ही पास याने स्वर्ण दुर्ग में ही रखना चाहते है।'

'और मैं यहां अकेली ही रहूंगी? कान्हा आज जा रहा है, आप अगले सप्ताह जाएगे। मैं इस घर में अकेली रह जाऊंगी। मेरा मन यहां कैसे लगेगा? मैं कहती हूं कि मुझे भी अपने साथ ले चलो। पांच वर्ष हो गए, मैं गांव से कहीं नहीं गई हूं। मेरा जी भी अब उकता गया है।' कृष्णाबाई ने अपने कजरारे अजानु विलम्बित बालों को संवारते हुए कहा।

'उदास न हो कान्हा की मां! मैंने तुम्हे भी स्वर्ण दुर्ग ले जाने का विचार किया है। लेकिन पहले मुझे जाने दो। मैं वहां पर ठीक-ठाक जमा लूं। फिर वहां तुम्हे ले चलूंगा। यहां खेती की सारी देखभाल काका के आदमी के जिम्मे रहेगी। वह इसी झोपडी में रहेगा।' तुकोजी ने शांत भाव से कहा।

सुन कर कृष्णाबाई के दिल को समाधान मिला। वह बालों का जूड़ा बांधते हुए कह उठी—'तब ठीक है। मुझे बड़ा संतोष मिला। हम वहीं अपना नया घर बसा-जमा लेंगे। सेनापति के प्रभाव-क्षेत्र में रहने का अवसर-आनन्द भी मिलेगा।'

'हाँ, हाँ अवश्य। वहाँ हमारा अच्छा मान-सम्मान होगा कान्हा की माँ ! सेनापति की नौकरी में कुछ ही महीने काम करने के बाद वह मेरी जल्दी ही पद-वृद्धि भी कर देंगे। मुझे विश्वास है कि मेरी मेहनत, ईमानदारी और कर्त्तव्य-निष्ठा सेनापति को अवश्य आकर्षित करेगी। मैं सेना में सम्मिलित हो कर नौसेना के आयुधों में परिवर्तन लाने की सोच रहा हूं। इस परिवर्तन से वह अधिक प्रभावशाली और मारक बनेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।'

कृष्णाबाई पति की बातें ध्यान से सुन रही थीं। उन्हें अपने पति पर अभिमान हो रहा था। मन-ही-मन वह ईश्वर से प्रार्थना करने लगीं कि तुकोजी के मन में जलसेना-आयुधों की जो भी विकास-योजना है वह सफल और पूरी हो। मराठा शासक छत्रपति की नजरों में वह चढ़ जाए और उन्हें योग्य सम्मान मिले।

तुकोजी ने अपनी पत्नी की ओर कौतुक-भरी दृष्टि से देखा। वे उसकी सुन्दरता की ओर देख कर अघाते रहे। फिर धीमे स्वर में पुकार कर कहा—'क्या सोच रही हो कृष्णा ? मन में अवश्य ही कोई-न-कोई बात उमड़ रही है। बोलो क्या बात है ?'

विचारों मे डूबी कृष्णाबाई ने जूड़े पर रखा हुआ हाथ दूर किया और चौंक कर बोली—'कुछ भी तो नहीं कान्हा के बापू ! मैं तो बाल संवार रही थी।'

वह तो मैं भी देख रहा हूं देवो जी ! पर मन की बात चेहरे पर उमड़े बिना नहीं रहती। और वही हालत तुम्हारी भी है। तुम अवश्य ही कुछ-न-कुछ सोच रही हो। बताओ न क्या बात है !'

कृष्णाबाई ने शर्म से अपने होंठ दाब लिए। हाथों को ऊपर उठा

कर उसने अपने सुन्दर जूड़े को गोल रोबदार बनाया और बोली--'मैं आपकी मनोकामना पूर्ण होने के लिये खण्डोवा की प्रार्थना कर रही थी। शिवजी की भी मनौती माँगी है। उनकी कृपा से आपको अवश्य अपने उद्देश्य में सफलता मिलेगी और हमारा नाम ऊँचा होगा।'

इस बीच कान्होजी नाले की ओर जा कर निवट आया और नहा-धोकर कपड़े पहन भगवान की पूजा करने के लिये। फूल चुन लाया वह बोला—'बापू, आज मैं पूजा कर लूँ। अगर कहो तो गुरु के आश्रम में शिक्षा-प्राप्ति के लिये जाते हुए पहले ईश्वर और माता-पिता का आशीर्वाद प्राप्त कर लूं।'

तुकोजी माँ-बेटे की ओर देख मुस्कराये। खुशी में बोले—'हाँ-हाँ, क्यों नहीं बेटा। तुम ही तो हमारे कुल के दीपक हो। ईश्वर की पूजा कर खूब आशीर्वाद प्राप्त करो। भगवान तुम्हारे भाग्य का सितारा बुलन्द करे। और सहसा कुछ याद कर बोले—'कान्हा की माँ, आज तुम्हारा बेटा विदा हो रहा है। उसकी कुछ खातिर तो करो। वह भारत माता का सच्चा-अच्छा सपूत बनने जा रहा है।'

कृष्णाबाई फूर्ति से कह उठी—बिल्कुल, इसमें क्या सन्देह है ? मैं अभी बनाती हूं मीठा केदार से पगा मीठा-मीठा हलुवा। पूड़ियां भी सेंक ली हैं। हलवा-पूड़ी साथ भी बाँध देती हूं।'

'मगर प्याज की गाँठ बांधना न भूलना !' तुकोजी ने प्रसन्नता से कहा—'तुम हलुवा बनाओ, तब तक मैं काका के यहाँ हो आता हूं। मुझे गाँव से लौटने में दो दिन लगेंगे। काका सुबह-शाम आकर कुशल-मंगल पूछ जाया करेंगे।'

इसके बाद तीनों अपने-अपने काम में लग गये। कान्होजी बड़ी श्रद्धा और प्रेम भाव से भगवान की पूजा में जुट गया। कृष्णाबाई कढाई में घी-सूजी डाल कर भूनने लगी। तुकोजी काका से मिलने बाहर चले गये।

सूरज काफी ऊपर निकल आया था। उसकी उजली किरणों ने रोशनी से सारी प्रकृति को धोकर साफ कर दिया था। प्रकृति में चेतना आ गई थी। लोग अपने दिन के काम में जुट गए थे। किसान अपने खेतों पर बैलों की सहायता से जुताई करने में मग्न थे। आकाश में बादलों के छोटे-छोटे काले-सफेद टुकड़े हवा के रथ पर बैठे किलोलें कर रहे थे। औरतें कलसों या मिट्टी के गढ़ों को सिर अथवा कमर पर लादे आ-जा रही थीं। ग्वाले गाय-भैंसों को हाँकते हुए पहाड़ी जगल की राह चल पड़े थे।

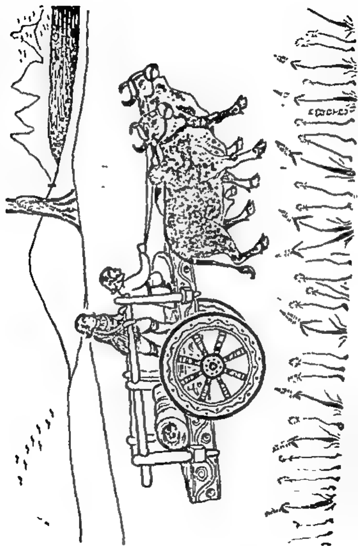
थोड़ी ही देर बाद तुकोजी घर लौट आये। उन्होंने देखा, कान्हा पूजा-अर्चा करके बैठा उन्हीं का इन्तजार कर रहा था। कृष्णाबाई नई गोधड़ी सी रही थी। पिता को देखते ही वह उठ खड़ा हुआ और अधीर होकर बोला—'बापू चलना है न ?'

'हाँ-हाँ बेटा, क्यों नहीं ? अपने सब काम निपटा लिये न ? सामान सारा बाँध लिया ? मेरा अंगोछा और कुर्ता-पाजामा भी ले लिये या नहीं ?' तुकोजी ने पूछा।

'हाँ, बापू सब तैयारी हो चुकी है। आप ही के चलने की राह देख रहा हूं। लेकिन बापू, अभी तक बैलगाड़ी तो आई नहीं। फिर जाएंगे कैसे ?'

'वह अभी जल्दी ही आ रही है। मैं दमाजी के घर हो आया हूं। वह खुद गाड़ी ला रहा है। आओ जल्दी से नाश्ता कर लें। हाँ भाई, जल्दी परोसो।'

इसके तुरन्त बाद तीनों ने छक कर नाश्ता किया। हलुवा-पूड़ी पर खूब हाथ मारा। इधर-उधर की हँसते-खिलते हुये बातें कर वे भरपेट छक गये। तभी घंटियों की आवाज द्वार पर सुनाई दी। पुनः पुनः बजते घंटियों के स्वर मधुर लगने लगे। तुकोजी ने कहा—लो भाई गाड़ी आ गई। जल्दी तैयार हो जाओ।



कान्होजी जल्दी से उठा। उसने दौड़ कर सामान गाड़ी में रखा। अन्दर जाकर शिव-खण्डोबा को प्रणाम किया, फिर पिता-माता के चरण छूये। पिता ने सिर पर हाथ फेर कर उसे आशीश दिया। माता कृष्णाबाई ने बेटे को गले से लगाया और उसका मुख चूमा। उसकी आँखों से आँसू बह निकले। उसने चेहरे पर मुस्कान न लाकर गीली आँखों से विदा दी। बाप-बेटा गाड़ी में जा बैठे। गाड़ी चल दी। घंटियों का नाद करते हुये बैल दौड़ पड़े। कृष्णाबाई उनकी ओर, गाड़ी आँखों से ओझल होने तक, देखती रही। फिर लौट कर अपने काम में लग गई।

घने जंगलों में उबड़-खाबड़ पगडंडियों पर बैल बड़ी मुस्तैदी से फुर्ती के साथ चलते रहे। गाड़ी अपने लक्ष्य की ओर बढ़ती जा रही थी। दोपहर हो रही थी। बैल भी थक गये थे और सुस्ताना चाहते थे। अतः नदी के किनारे, पेड़ों के झुरमुट में बन्ध खोल कर बैलों को छोड़ दिया गया। फिर दमाजी और बाप-बेटा ने नदी के जल से हाथ-मुँह धोये और पोटली खोल कर भोजन किया। इसके बाद तीनों पेड़ों की छांव में विश्राम करने लगे। थोड़ी देर विश्राम कर पुनः वे अपने मार्ग पर आगे चल दिये।

मौसम सुहावना हो रहा था। आकाश में बादल छा रहे थे। सूरज की गर्मी को बादलों की छाया हलाहल की तरह निगल कर धरती को ठंडक पहुंचा रही थी। हवा एकदम शीतल होकर पेड़ों, झाड़ झखाड़ों से खेल रही थी। छोटे-मोटे पशुओं की मस्ती-भरी उछल-कूद बहुत भली लग रही थी। जैसे-जैसे गाड़ी आगे बढ़ने लगी, बादल गहरे होने लगे और वर्षा की संभावना बढ़ चली।

लगभग पांच मील और आगे पहुंचे तो घना अंधेरा छाया हुआ था और तेज हवा चल रही थी। बिजली कड़क रही थी। दमाजी ने चाबुक मार कर बैलों की चाल और तेज की। वे अपनी पूरी ताकत

स हवा स हाड़ करन लग । लाकन तज हवा क झाका क का
बैलों को आगे बढ़ना कठिन हो गया, चाल फिर मंद पड़ गई । ।
देखते-देखते पानी बरसना शुरू हो गया । ऐसा पानी बरसने
कि झड़ी लग गई । बादल गड़गड़ाहट करते हुए एक-दूसरे पर टू
लगे । और उनके टूटने मे बिजली चमक कर लपलपाने लगी ।

बैलगाड़ी के लिए आगे बढ़ना दूभर हो गया । तुकोजी
कान्होजी बिल्कुल भीग गए । उनमें कपकपी भरने लगी और वे
थर कांपने लगे और आगे चलना असम्भव देखकर उन्होंने गाड़ी
डंडी से हटा ली और पेड़ के नीचे डेरा डाल दिया, आराम क
लगे । गांव अभी यहां से बीस-पच्चीस मील दूर था । तमाम ज
और पहाड़ी भाग मूसलाधार वर्षा की चपेट मे आ गया था
चारों ओर जहां-तहां पानी ही पानी भरा पड़ा था । पेड़ों पर
कीड़ों की किरकिराहट दिल मे भय पैदा कर रही थी । हवा थम
थी । घुटन बढ़ रही थी । वर्षा जोरो पर थी ।

बड़े इन्तजार के बाद सुबह ने आंखें खोलीं । वह अंधेरे में प्रक
भरने लगी और रात का काला आंचल चूर-चूर होकर बिखर
था । पक्षियों में चुलबुली पैदा हो गई । वे भागने के लिए अ
घोंसले मे तैयार बैठे थे । उन्हे इन्तजार था कि रोशनी कुछ और
जाए और ये दाना-पानी चुगने बाहर उड़ सकें । आकाश में बाद
अभी भी वैसे ही छाए हुए थे और बिजली चमचमा उठती थी
सुबह के प्रकाश में धुंधलका भरा हुआ था । बारिश थम गई थी
तुकोजी ने दमाजी को गाड़ी जोड़ने की सलाह दी । वह तुरन्त तैय
हो गया और गाड़ी जोड़ दी । वे पुनः चल पड़े ।

हरणाई गांव नजर आने लगा था । लेकिन बरसात में डूबा हुआ
खूब तेज वर्षा हो रही थी । पानी जमा होता जा रहा था । तुको
ने गाड़ी रुकवाई नही । गांव पहुंचना ही उचित समझा । [illegible]
से आगे बढ़ने का प्रयास कर रहे थे ।

कान्होजी जल्दी से उठा। उसने दौड़ कर सामान गाड़ी में रखा। अन्दर जाकर शिव-खण्डोवा को प्रणाम किया, फिर पिता-माता के चरण छूये। पिता ने सिर पर हाथ फेर कर उसे आशीश दिया। माता कृष्णावाई ने वेटे को गले से लगाया और उसका मुख चूमा। उसकी आँखों से आँसू वह निकले। उसने चेहरे पर मुस्कान न लाकर गीली आँखों से विदा दी। वाप-वेटा गाड़ी में जा वैठे। गाड़ी चल दी। घंटियों का नाद करते हुये वैल दौड़ पड़े। कृष्णावाई उनकी ओर, गाड़ी आँखों से ओझल होने तक, देखती रही। फिर लौट कर अपने काम में लग गई।

घने जंगलों में उवड़-खावड़ पगडंडियों पर वैल बड़ी मुस्तैदी से फुर्ती के साथ चलते रहे। गाड़ी अपने लक्ष्य की ओर वढ़ती जा रही थी। दोपहर हो रही थी। वैल भी थक गये थे और सुस्ताना चाहते थे। अतः नदी के किनारे, पेड़ों के झुरमुट में वन्ध खोल कर वैलों को छोड़ दिया गया। फिर दमाजी और वाप-वेटा ने नदी के जल से हाथ-मुँह धोये और पोटली खोल कर भोजन किया। इसके वाद तीनों पेड़ों की छांव में विश्राम करने लगे। थोड़ी देर विश्राम कर पुनः वे अपने मार्ग पर आगे चल दिये।

मौसम सुहावना हो रहा था। आकाश में वादल छा रहे थे। सूरज की गर्मी को वादलों की छाया हलाहल की तरह निगल कर धरती को ठडक पहुंचा रही थी। हवा एकदम शीतल होकर पेड़ों, झाड़ झखाड़ों से खेल रही थी। छोटे-मोटे पशुओं की मस्ती-भरी उछल-कूद वहुत भली लग रही थी। जैसे-जैसे गाड़ी आगे बढ़ने लगी, वादल गहरे होने लगे और वर्षा की संभावना वढ़ चली।

लगभग पांच मील और आगे पहुंचे तो घना अंधेरा छाया हुआ था और तेज हवा चल रही थी। विजली कड़क रही थी। दमाजी ने चावुक मार कर वैलों की चाल और तेज की। वे अपनी पूरी ताकत

से हवा से होड़ करने लगे। लेकिन तेज हवा के झोंकों के कारण बैलों को आगे बढ़ना कठिन हो गया, चाल फिर मंद पड़ गई। फिर देखते-देखते पानी बरसना शुरू हो गया। ऐसा पानी बरसने लगा कि झड़ी लग गई। बादल गड़गड़ाहट करते हुए एक-दूसरे पर टूटने लगे। और उनके टूटने से बिजली चमक कर लपलपाने लगी।

बैलगाड़ी के लिए आगे बढ़ना दूभर हो गया। तुकोजी तथा कान्होजी बिल्कुल भीग गए। उनमें कपकपी भरने लगी और वे थर-थर कांपने लगे और आगे चलना असम्भव देखकर उन्होंने गाड़ी पग-डंडी से हटा ली और पेड़ के नीचे डेरा डाल दिया, आराम करने लगे। गांव अभी यहां से बीस-पच्चीस मील दूर था। तमाम [illegible] और पहाड़ी भाग मूसलाधार वर्षा की चपेट में आ [illegible] चारों ओर जहां-तहां पानी ही पानी भरा पड़ा था। पेड़ों पर [illegible] कीड़ों की किरकिराहट दिल में भय पैदा कर रही थी। हवा [illegible] थी। घुटन बढ़ रही थी। वर्षा जोरों पर थी।

बड़े इन्तजार के बाद सुबह ने आंखें खोलीं। वह [illegible] भरने लगी और रात का काला आंचल चूर-चूर होकर [illegible] था। पक्षियों में चुलबुली पैदा हो गई। वे [illegible] घोंसले में तैयार बैठे थे। उन्हें इन्तजार था कि [illegible] जाए और वे दाना-पानी चुगने बाहर बढ़ [illegible] अभी भी वैसे ही छाए हुए थे और बिजली [illegible] सुबह के प्रकाश में धुंधलका भरा हुआ था। [illegible] तुकोजी ने दमाजी को गाड़ी जोड़ने की [illegible] हो गया और गाड़ी जोड़ दी। वे पुन: [illegible]

हरणाई गांव नजर आने लगा था। [illegible] खूब तेज वर्षा हो रही थी। [illegible] ने गाड़ी रुकवाई नहीं। गांव [illegible] से आगे बढ़ने का प्रयास कर रहे थे।

वैलगाड़ी गाँव के निकट पहुंची। गांव की सीमा पर गाड़ी रुकी, वैल खोल दिए गए। तुकोजी ने दमाजी से वहीं ठहरने के लिए कहा और वेटे को लेकर गाँव के उस पार नदी किनारे पर वने आश्रम की ओर चल दिए। नदी में उफान आया हुआ था। चारों ओर हरियाली ही हरियाली नजर आ रही थी। हल्की वर्षा हो रही थी। आश्रम के भीतर काशीनाथ भट आसन पर वैठे दुर्गा सप्तशती पढ़ रहे थे।

तुकोजी वेटे के साथ वाहर ही वैठ गये। जव पारायण समाप्त हुआ तो उन्होंने दोनों को वुलवाया। तुकोजी नें वेटे को प्रणाम करनें के लिए कहा। काशीनाथ ने हंसकर कहा—आप ही का नाम तुकोजी आंग्रे है न ? मुझे अंगारवाड़ी के चौधरी का संदेशा मिल गया है। आप अपने वेटे को मेरे आश्रम में शिक्षा के लिये रखना चाहते हैं न ?

'जी हाँ, जी हाँ, यह मेरा एक मात्र वेटा कान्होजी है। शिक्षा-दीक्षा के लिये आपके पास इसे रखना चाहता हूं। विश्वास है आपकी सेवा में रह कर खूव पढ़-लिख जाएगा और विद्वान् वनेगा।'

भट जी स्वीकृति में मुस्करा दिये। उन्होंनें कान्होजी को स्नेह से अपनें पास खींचा। उसके सिर पर ममता से हाथ फेरते हुये—'क्या नाम है तेरा ?' यह प्रश्न किया।

'कान्होजी आंग्रे ! प्यार से लोग मुझे कान्हा कहते हैं।' वालक ने विना झिझक उत्तर दिया।

'तुम्हें मेरी आज्ञा माननी होगी। नियम के अनुसार सारे काम करनें होंगे। तभी तुम खूव पढ़-लिख सकते हो, विद्वान वन सकते हो। वोलो क्या मंजूर है ?'

'जी हाँ, आपकी आज्ञा का मैं पालन करूँगा। मुझे अपना शिष्य वना लीजिये।' वालक ने दृढ़ स्वर में कहा।

और उसी दिन तुकोजी राव लौट पड़े।

तीन

परिवर्तन

काशीनाथ भट के आश्रम में रहने से कान्होजी की दिनचर्या समय के साचे में ढल गई। उसका प्रत्येक कार्य निश्चित समय पर होने लगा। सुबह उसे ब्रह्म मुहूर्त में यानि चार बजे से पहले उठना पड़ता। वह उठकर बाल्टा-लोटा लिये घाट पहुंचता। वहां नहाकर कपड़े धोता, उन्हें सुखाने झाड़ियां पर फैला देता और लोटे में नदी का जल भरकर भूतेश्वर शिव मंदिर में जाकर शिवजी पर जल चढ़ाता। शिवस्तुति, शिव पंचाक्षरी आदि श्लोकों का पाठ पढ़ता और 'शिव हर-हर' तथा 'हर हर महादेव' के नारे जोर जोर से लगा कर मंदिर को गुंजा देता।

पूजा-पाठ करने के बाद लौटकर वह गुरु जी से वेदों की ऋचायें तथा पुराणों के श्लोक सुनकर उन्हें याद कर लेता। पाठन-मनन का यह कार्य संध्या से रात तक भी होता और उपदेश तथा नीति-कथाएँ भी सुनने को मिलतीं। उसके बाद भोजन कर वह आश्रम की गायों को चराने के लिये पहाड़ी की ओर ले जाता। वहां गांव के लड़कों से खेलता, उनसे बातें करता, पेड़ो पर चढ़ कर फल तोड़ कर खाता,

नदी में जी भर कर तैरता। खूब जी भर कर खेल-कूदकर गायों के लिये सूरज डूबने से पहले ही आश्रम लौट आता। इस के बाद फिर सायंकाल का कार्यक्रम प्रारम्भ होता।

आश्रम में आये कान्होजी को लगभग एक वर्ष हो रहा था। इस अवधि में उसने विद्यार्थियों में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त कर लिया था। गुरु की उस पर विशेष कृपा तथा स्नेह था! उसने वेद तथा पुराणों के संस्कृत श्लोकों तथा ऋचाओं को कंठस्थ कर लिया था। संस्कृत वह अच्छी बोल लेता था। उसे समझता भी था।

लेकिन यह योग्यता उसे अपने भाग्य से वंचित न कर सकी। उसके हाथ की रेखाएँ उसे किसी और ही धुन में उलझाये दे रही थीं। उस काम के लिये जो उसके नसीब में था, वातावरण भी वैसा ही अनुकूल था। हरणाई गाँव में अधिकतर आबादी सैनिकों की थी। ये सैनिक मराठों की नौसेना में थे। उनकी गिनती उत्तम तथा योग्य कुशल सैनिकों में होती थी। वे दस-पन्द्रह दिनों बाद गाँव में आकर अपने परिवार वालों से मिल जाते। इस दौरान वे अपने बच्चों को नौसेना के युद्ध के साहसी एवम् वीरता-भरे प्रसंग और युद्ध के लिये उपयोग में लाये जाने वाले समुद्री जहाज तथा बड़ी-बड़ी जंगी नौकाओं के बारे में विस्तार से बताते थे। इससे बालकों के मन पर उचित प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। उनका दृष्टिकोण तथा वृत्ति इस वातावरण से तैयार हो रही थी और वे सैनिक के रूप में उभर कर आ रहे थे।

कान्होजी जब आश्रम की गायों को चराने के लिये पहाड़ी पर ले जाता तो इन बालकों से बातें करता और उनके मुख से अपने पिता-द्वारा फ्रांसीसी तथा डच बेड़ों से हुये युद्धों का चटपटा वर्णन सुनता तो उसकी भुजाएँ फड़क उठतीं। देश के लिये कुछ कर गुजरने की उसमें साध पैदा हो गई। उसका मन जोश से भर उठता और

वह सैनिक बनने का सपना देखने लगा। इसी बीच उसे सूचना मिली कि तुकोजी नौ-सैनिक बनकर स्वर्ण दुर्ग चले गये है। माता कृष्णाबाई भी गाँव छोडकर उनके साथ गई हैं। इस खबर से उसकी इच्छाओं को और भी बल मिला। अब कान्होजी का उद्देश्य बिल्कुल बदल गया। वह सैनिक बनने के साधनों में जुट गया। अपने मन तथा धारणा को उसने अनुरूप बनाया।

अब कान्होजी का दोपहर तथा सूर्यास्त के बीच का समय सैनिक गतिविधियों की जानकारी प्राप्त करने तथा हथियार आदि देखने-चलाने में बीतने लगा। वह गुरुजी के सामने तो गायें लेकर निकलता लेकिन जगल में पहुंच कर उनकी देखभाल अपने एक साथी मित्र को सौंप कर आप सैनिक बालको के घर पहुंच जाता। उनकी माताओं से मिलता। उनमे बातचीत होती। तरह-तरह का ज्ञान प्राप्त करता। वे घर में रखे हुये युद्ध के हथियार, जैसे ढाल, तलवार, भाले, पट्टे आदि दिखातीं और उनके बारे में जानकारी देती। उन्होंने कान्होजी की ग्रहण-शक्ति तथा ज्ञान-पिपासा देखी तो दंग रह गईं। वे पूछतीं—कान्होजी, तुम्हें काशीनाथ भट क्या सिखाते हैं ?

कान्होजी ने कहा—'शास्त्र, वेद-पुराण और स्मृति ग्रंथ आदि की शिक्षा देते है। शासन और नीतिशास्त्र का अध्ययन कराते हैं। दर्शन की पुस्तके तथा पोथियों को मैंने बहुत पढा है। रामायण तथा महा-भारत और गीता तो मुझे कंठस्थ है।'

'तो तुम्हें संस्कृत भी अच्छी आती होगी ? उसका मतलब समझ जाते होगे ?' उन्होने कौतुक से पूछा।

'हाँ, मैंने सभी ग्रंथ वेद-पुराण संस्कृत में याद कर रखे हैं। उन सबका अर्थ मुझे आता है। आश्रम मे कोई भी ऐसा विद्यार्थी नहीं है जिसे एक भी ग्रंथ पूरा याद हो और उसका मतलब समझता हो।' कान्होजी ने बड़े अभिमान से कहा।

'तब तो तुम बड़े विद्वान हो कान्होजी ! तुम्हारे पिता जी किसान होंगे। तुम्हारे घर खेती-बाड़ी का काम होता होगा। काफी जमीन होगी।' यशवंत की मां ने कौतुक से पूछा।

कान्होजी बोला—हां मां जी, मेरे पिता किसान हैं। हमारे पास बहुत थोड़ी भूमि है। उस पर साल भर में दो फसलें उगाते हैं। पैदा हुये अनाज से केवल हमारे घर का ही बड़ी मुश्किल से गुजारा हो पाता है। लेकिन अब मेरे पिताजी ने खेती छोड़ दी है। अब वे स्वर्ण दुर्ग में सिपाही बन गये हैं। सर्वोच्च सेनापति सिद्धोजी गुज्जर के वह प्रधान सैनिक हैं। उन्हीं के साथ दुर्ग में रहते हैं।

'वे प्रधान सैनिक हैं और तुम शास्त्रों का अध्ययन कर रहे हो ! यह बात कुछ जची नहीं। तुम्हें भी पिता की तरह योग्य सैनिक बनकर मराठा साम्राज्य की सेवा करनी चाहिये। आज मराठों की नौ-सैनिक शक्ति चिन्ताजनक है। उन पर पुर्तगाली, डच-फ्रेंच तथा मुगलों की नौसेना बार-बार प्रहार करने में लगी हुई है। वे मराठा शक्ति को नष्टप्राय देखने का प्रयत्न कर रहे हैं। ऐसी विकट हालत में नौसेना को कुशल सैनिकों तथा सेनानायकों की तीव्र जरूरत है। अगर तुम दिल से चाहो तो इस कार्य में हाथ बटा सकते हो।'

'आप ठीक कह रही हैं माता जी ! मैंने भी अपना निश्चय बदल दिया है। मैं भी एक सैनिक बनना चाहता हूं : मेरा फैसला अटल होता है। दो-एक दिनों में मैं अपनी योजना पर अमल करने का विचार कर रहा हूं। कल ही मैं गुरुजी से स्पष्ट बात कर उन्हें अपना उद्देश्य बता दूंगा। मुझे विश्वास है कि वे मेरा विरोध नहीं करेंगे। बल्कि मुझे मेरे उद्देश्य में सहायता देंगे। वे समझदार विद्वान हैं और देश की हालत को जान कर मुझे अपने कर्त्तव्य से विमुख नहीं करेंगे।' यह कह कर कान्होजी गायों को साथ लेकर सूरज की बुझती किरणों के साथ-साथ आश्रम में लौट आया। उसके सहपाठियों को उसके

विचारों का पता था लेकिन किसी ने भी गुरुजी को यह बात नहीं बताई।

उस दिन से कान्होजी लगातार इसी उधेड़-बुन में लगा रहा। उसने अपने साथियों से अनेक प्रकार की तलवारें एकत्र कर ली थी। उनका उपयोग करना वह सीखने लगा था। नदी के गहरे जल में वह घंटों तैरने का अभ्यास करता जिससे समुद्र में तैरने के समय उसे कठिनाई न हो। व्यायाम भी उसने शुरू कर दिया था।

सुबह का समय था। कान्होजी ने घाट पर नहा-धोकर शिवजी की पूजा की और लौटकर अपने आसन पर चुपचाप बैठ गया। उसके सामने किताब खुली रखी थी। लेकिन वह याद नहीं कर रहा था। किन्हीं दूसरे ही विचारों में वह खोया हुआ था।

काशीनाथ भट उसके पीछे आकर खड़े हो गये। वे उसकी मनोदशा निहारते रहे। लेकिन कान्होजी का ध्यान उस ओर नहीं था। वह उनका आना न जान सका। देर तक देखते रहने के बाद उन्होंने धीरे से पुकारा—'कान्होजी!'

पर कान्होजी को सुनाई न दिया। वह शिवलीलामृत के पृष्ठ पलटने लगा था जो सुबह की ठंडी हवा में थरथरा रहे थे। आश्रम के बाहर वाटिका में फूल खिलने प्रारम्भ हो गये थे और उनकी मधुर सुगंध चारों ओर बिखर रही थी। हवा के संग वह आश्रम के अन्दर भी प्रवेश कर गई थी। कान्होजी का मन उस गंध से मदमस्त हो रहा था। कितनी ही देर तक वह यों ही बैठा रहा। तभी गुरुजी की पुकार उसके कानों पर पड़ी। वह चौंक उठा और गुरुजी की ओर देखने लगा।

'क्या बात है कान्हा? कहाँ खोये हुये हो? लगभग दस-पन्द्रह रोज से मैं तुममें एक खास परिवर्तन देख रहा हूं। लगता है तुम्हारा मन पढ़ाई में नहीं है। शिवलीलामृत का दूसरा अध्याय याद कर लिया? कुछ बड़ा अवश्य है पर है बहुत रम्य और बोधक'

कान्होजी होश में आ गया। उसने केवल गुरुजी का एक ही वाक्य सुना—'शिवलीला का दूसरा अध्याय याद कर लिया ?' और उसने कुछ सोच निडर होकर सिर हिलाया और कहा— नहीं गुरुजी, मुझे याद नहीं हुआ और वास्तव में मैंने याद किया भी नहीं। याद करने का विचार भी नहीं है।'

'लेकिन क्यों ? क्या कारण है याद न करने का ? क्या तुम पढ़ाई छोड़ देना चाहते हो ?' गुरुजी ने भौचक्के होकर पूछा। उन्हें अपने इस श्रेष्ठ शिष्य से ऐसी उम्मीद न थी।

कान्होजी शांत भाव से निडर स्वर में बुदबुदाया—गुरुजी, धृष्टता के लिए क्षमा चाहता हूँ। मैं अब यह विद्या नहीं पढ़ूंगा। आपके चरणों में रह कर मैंने अब तक जितना अध्ययन और ज्ञान प्राप्त किया है वह मेरे जीवन के लिए पर्याप्त है। अब मैं और अधिक ऐसी पुस्तकों का अध्ययन करने की आवश्यकता नहीं समझता। आज ही सुबह मैंने सब ग्रंथ-पोथियाँ बाँध कर टाँड पर रख दी हैं। जब आपको जरूरत पड़े निकाल लीजिए।'

काशीनाथ जी को काटो तो खून नहीं। अवाक् होकर कह उठे —'कान्हा यह क्या कह रहा है ! अरे तू नहीं पढ़ेगा तो और कौन पढ़ेगा ? तू मेरा सर्वप्रिय शिष्य है। शिष्य को पढ़ा-लिखा कर योग्य बनाना उसे अपने पैरों पर खड़ा होने लायक बनाना क्या गुरु का कर्त्तव्य नहीं ?'

'अवश्य है ! और वह आपने किया है !'

'फिर तू क्यों उससे मुँह मोड़ रहा है ? तुम विद्याध्ययन क्यों त्यागना चाहते हो ?' गुरु ने निराश होकर पूछा।

कान्होजी हाथ जोड़कर बोला—'मैं पैरों पर खड़ा होने से कहाँ मुँह मोड़ रहा हूँ गुरुजी ! मुझे अपनी भुजाओं पर पूरा भरोसा है। मैं पढ़ूँगा, विद्या सीखूँगा, अपने हाथ से कमाकर पेट भरूँगा।

और आप गुरुजनों के आशीर्वाद से मैं कुछ ज्यादा ही बनूंगा।'

'तो फिर क्यों नहीं पढ़ते तुम ?'

'मैं जो पाना चाहता हूँ वह यह विद्या नहीं गुरुजी। वह दूसरी विद्या है जिससे देश की सेवा हो सकती है। मैं जो विद्या सीखना चाहता हूँ वह इससे हजार गुना बढ़कर और समय के अनुकूल है। और सब कहते हैं कि वही विद्या इस समय देश की विकट दशा में सबसे उपयोगी है।'

'कौन-सी दूसरी विद्या ?'

'शस्त्र-विद्या ! युद्ध-नीति के पाठ ! हर हर महादेव की गूंज !' कान्होजी ने गर्व से कहा—'आज इसी विद्या की मराठा राज्य को ज्यादा जरूरत है। वेद और पुराण, देवी-देवताओं के स्तवन हमारे देश को गुलाम होने से नहीं बचा सकते।'

'कान्हा, यह तू कह रहा है ! अरे भला विद्याध्ययन से किसी का नुकसान हुआ है। यह विद्या तो हमारे संस्कार बनाती है हमारा चरित्र सबल रखती है। हमारे आचार-विचार शुद्ध रहते हैं। भला शास्त्र-पुराणों का पठन-अध्ययन कौन नहीं करना चाहेगा ?'

'मैं भी इस बात से इनकार नहीं करता गुरुजी ! लेकिन मनुष्य को समय के मुताबिक बदलना चाहिए। उसकी मांग को समझना चाहिए। आज वक्त की यही पुकार है। मैंने निश्चय कर लिया है *कि शास्त्रों का अध्ययन त्याग कर शस्त्रों का अध्ययन करूंगा।* काम वही करना चाहिए जिसकी देश को सर्वोपरि जरूरत हो। मैं थोड़ा-सा सैनिक-अभ्यास कर नौसेना में भर्ती हो जाना चाहता हूं।'

पौ फटने को थी। रात के अनगिनत काले-काले घड़े फूट पड़े थे और रस रोशनी बनकर बिखर रहा था। काशीनाथ भट ने झोपड़ी में जलता हुआ दीपक बुझा दिया। सूरज को अर्घ्य चढ़ाने के बा यह पुनः कुटियामें लौट आए और बोले—'मैंने पहले इस बात' ?

कल्पना तक नहीं की थी कि एक दिन कान्होजी अपना इरादा वदल सकता है।

कान्होजी का दिल भर आया और वोला—'मैंने आपका दिल दुखाया है इसके लिए मैं क्षमा चाहता हूं। लेकिन मैं वतन की हालत देखकर चुप नहीं वैठ सकता। मुझे सपना आया है और मैं उसे पूरा देखना चाहता हूं।'

काशीनाथ जी ने चौंक कर लोटा नीचे रख दिया और कौतूहल से पूछा—'कैसा सपना कान्हा ! कुशल तो है न ? प्रतीत होता है पांच-सात दिनों से सपने देखते हो ? कहो जरा मैं भी सुनूं।'

कान्हा मुस्कराया। शान्त और मन्द स्वर में वोला—मैंने कल रात सपने में देखा कि मेरे सामने एक स्त्री खड़ी है। वड़ी तेजस्वी और सुन्दर। वह सफेद साड़ी और चोली पहने है। उसके वाल काले-कजरारे रेशम-से नरम-चमकीले और एड़ी छू रहे हैं। लेकिन उसका चेहरा एकदम उदास और पीला लग रहा है। उसके हाथ में हथकड़ियां हैं, मोटी और भारी। उस मानिनी की आंखों में आंसू। वह रो रही है। मुझे देखा तो मुस्कराई और पास आकर वोली—'लाल ! मेरे हाथों में हथकड़ियां देख रहे हो ? क्या ये हमेशा के लिए रहेंगी ? तुम इन्हें तोड़कर मुझे स्वतन्त्र नहीं करोगे ?'

'अब बताइये गुरुजी ! केवल शास्त्र पढ़ते-रहने से यह काम कैसे पूरा होगा ? इसके लिए मैं सैनिक बनूंगा। और सैनिक बन कर देश के दुश्मनों से जम कर लोहा लूंगा। इसके लिए मुझे सैनिक-शिक्षा चाहिए। वह आपके ही प्रयत्नों से प्राप्त होगी।'

यह सुनकर काशीनाथ भट गद्गद् हो उठे। इसे ईश्वरी आज्ञा समझकर वह सहमत हो गये। कान्हा के सिर पर हाथ रखकर बोले—प्रिय शिष्य, अगर तुम्हारा यही इरादा है तो मुझे खुशी है। मैं तुम्हारे मार्ग में अवरोध न बनूंगा, वरन् मैं तुम्हारे ध्येय में सहायक बनूंगा। तुम एक कुशल सैनिक बनकर मराठा शक्ति का विस्तार करो। अपनी वीरता और कुशल नेतृत्व से दुश्मन की शक्ति को क्षीण कर देश का नाम ऊँचा करो, यही मेरी कामना है।

'आप का आशीर्वाद चाहिए गुरुदेव ! आपकी शुभकामनाएँ हों और मार्ग-दर्शन तथा उचित सलाह-मशवरा मिलता रहे तो मुझे आत्मविश्वास है कि मैं मुसीबतों से संघर्ष करते हुए ऐसे कार्य करूंगा जो मराठा शक्ति की उन्नति में सहायक सिद्ध होंगे। मैं निश्चय ही पुर्तगाली, डच तथा फ्रेंच शक्तियों से लोहा लेकर उनकी ताकत को छिन्न-भिन्न कर डालूंगा।

मेरा आशीर्वाद है कान्हा ! तुम्हारे नाम की चर्चा मराठों के इतिहास में हो। ईश्वर तुम्हें अवश्य सफलता देगा। मैं आज ही इस कार्य में जुट रहा हूं। चार-आठ दिन में मैं तुम्हे योग्य व्यक्ति के पास पहुंचा दूंगा।'

उस दिन से कान्होजी का ध्येय और स्वभाव बिल्कुल बदल गया। उसने सारी पुस्तकें-पोथियां चादर के टुकड़े में बांध कर टांड पर रख दी। अब वह निश्चिन्त होकर आश्रम में रहता और गायों को चराने के लिए जगल में ले जाता। उन्हे चरने के लिए छोड़ कर गांव के लडकों के घर में जाता और उनसे खेलता, समुद्री बेड़े वारे में उनकी माताओं से बातें करता, उनके यहां भोजन करता खाता-पीता और मौज उड़ाता।



एक दिन वह चौपायों को लेकर जंगल में पहुंचा। उस दिन जोर का तूफान आया। तेज आँधी ने जंगल के सैंकड़ों पेड़ उखाड़ फेंके। चौपाए भय से जहाँ राह दिखे वहाँ भागने लगे और बहुत दूर तक निकल गये। कान्होजी को उन्हें ढूंढने के लिए काफी भागना-दौड़ना पड़ा। बड़ी मुश्किल से उसने उन्हें हाँक कर एक जगह जमा किया।

इस भाग-दौड़ में दोपहर हो गई। सूरज सिर पर धधकने लगा। कान्होजी काफी थक गया था। उसके हाथ-पैर दर्द करने लगे थे। वह जंगल में जमीन पर चादर बिछाकर लेट गया और आराम करने लगा। कुछ ही देर में उसे नींद लग गई। धूप तेज पड़ रही थी और गर्मी का प्रकोप बहुत बढ़ गया था।

आकाश लाल सुर्ख हो गया था और सूरज ने उग्र रूप धारण कर लिया था। लेकिन कान्होजी को बेहद थकान के कारण इसका होश नहीं था। उसे तेज धूप में भी गाढी नींद लग गयी थी। तभी पास की बाँबी से निकल कर पीले-नीले रंग का लम्बा नाग विचरता हुआ उस ओर निकल आया। पास आकर उसने फन फैलाया और कान्होजी के सिर पर छाया की। यह महान शुभ शगुन था।

ठीक इसी समय काशीनाथ भट निकट के गाँव से सत्यनारायण की कथा करके लौट रहे थे। उन्होंने देखा—कान्होजी आराम से सोया हुआ है और नाग देवता उस पर छाया किये हुए हैं। यह देख गुरुजी को विश्वास हो गया कि कान्होजी भविष्य में निश्चय ही राजा बनेगा। उन्होंने तुरन्त घर लौट कर बालक की कुण्डली फैलाई और अध्ययन करके पाया कि इस लड़के के ग्रह राजा बनने के हैं। उन्होंने निश्चय कर लिया कि कल ही बालक को किसी योग्य सैनिक अधिकारी के सुपुर्द कर देना उचित होगा।

—०—

चार

अलग सांचे में

अगले दिन सुबह काशीनाथ भट कान्होजी को लेकर वाई गाँव की ओर रवाना हुए। बालक कान्होजी की खुशी का तो ठिकाना ही न था। अपनी इच्छा पूरी होते देख उसका मन गुदगुदा रहा था। रास्ते-भर वह मस्ती में गुरुजी से अनेक विनोदी बातें कर अपनी खुशी व्यक्त कर रहा था।

काशीनाथ जब वाई गाँव पहुंचे तो साँझ हो गयी थी। सूरज का सुर्ख गोला पश्चिम के किनारे हट कर अपनी किरणों के जाल को समेट रहा था। हवा ठण्डी हो गयी थी। चौपाये सान्ध्य वेला में अपने घरों की ओर लौट रहे थे। कर्मकाण्डी ब्राह्मण ऊँचे स्वरों में लय के साथ 'सन्ध्या' करने में मग्न हो रहे थे।

काशीनाथ सेनापति दत्ताजी जाधव की कोठी पर पहुँचे तो विदित हुआ कि वे छत्रपति संभाजी से मिलने सतारा गये हुये हैं और दो-एक दिन में ही वापस लौट आयेंगे। काशीनाथ भट ने उनकी पत्नी से कुशल-मंगल पूछी और उल्टे पैर वापिस लौट कर अपने एक मराठा मित्र दिनकर शेंडे के यहाँ ठहर गये।

दो दिन बाद मराठा सेनापति के पधारने की सूचना मिली। काशीनाथ और कान्होजी सजधज कर कोठी पर पहुंचे। दोनों का साक्षात्कार हुआ। दत्ताजी जाधव बालक कान्होजी को देखकर ठिठक गये, ठगे-से रह गये।' उसके चेहरे पर अपार तेज था। आँखें बड़ी-बड़ी और चंचल। रंग सांवला, गठा हुआ ताकतवर शरीर और ऊँचा कद। रौब ऐसा जैसे किसी देश का राजकुमार हो। उसे देखने से ऐसा लगता था कि वह समुद्र, सूर्य और धरती का ऐसा लौह-जीव है जो भयंकर समुद्री तूफानों, झुलसा देने वाली धूप और जमीन की कठोरताओं का निर्भय होकर सामना कर सकता है।

सेनापति जाधव तो सचमुच अपना ज्ञान ही खो बैठे। बड़ी देर तक उसे देखते ही रह गये। उन्हें लगा, यह बड़ा होने पर दुश्मनों की नौसेना शक्ति का काल सिद्ध हो सकता है।

कान्होजी ने सम्भल कर अपना अंगरखा यों ही ठीक किया और आगे बढ़कर सेनापति को नमन किया। फिर चुपचाप उनकी ओर देखता हुआ खड़ा रहा। काशीनाथ भी बातचीत का सिलसिला खोजने लगा।

सेनापति जाधव यकायक होश में आकर चौंक पड़े। कान्होजी की ओर टकटकी लगाकर हँसते हुए बोले—यह कौन तेजस्वी बालक है। गुरुजी, क्या यह आपके साथ आया है! आपका शिष्य है क्या ?

'जी हाँ, सेनापति जी !' कान्होजी ने गुरुजी की ओर एक नजर डालकर मुस्कान के साथ कहा।

'क्या नाम है तुम्हारा बच्चे ?'

'मेरा नाम कान्होजी आंग्रे है, श्रीमान जी !' बालक ने तत्परता से कहा।

'यहाँ मेरे पास किस काम से आये हो ?' सेनापति ने पूछा।



तभी काशीनाथ झट तैयार होकर बोले—'जाधव जी, यह मेरा शिष्य है ! बड़ा योग्य और समझदार है। इसकी हार्दिक इच्छा नौ-सैनिक बनने की है। बड़ी लगन है इसमें। यदि इसे अवसर मिल जाये तो यह मराठा राज्य की जी जान से सेवा करेगा। मैं इसे आपके सुपुर्द करने आया हूं। आप इसके सैनिक शिक्षक हैं। यह आपका शिष्य है। फिर योग्य बनने पर आप ही इसे नौ-सेना की सेवा में रख लीजियेगा।'

सेनापति बहुत प्रसन्न हुए। फिर भी बालक की विचारधारा परखने के उद्देश्य से हंस पड़े और बोले—'कान्होजी, कोई खास बात है क्या ? तुम सैनिक ही क्यों बनना चाहते हो ?'

कान्होजी ने हाथ जोड़कर गम्भीर स्वर में कहा—'मैं मिट्टी का कर्ज चुकाना चाहता हूं श्रीमान ! और यह कर्ज सैनिक बनकर ही चुकाया जा सकता है। आज देश को सैनिकों की नितान्त आवश्यकता है। उनके रक्त का अर्घ्य पाने के लिये वह आकुल होकर प्रतीक्षा कर रही है। भारत माँ के पैरों में पड़ी हुई बेड़ियां मैं काटकर फेंक देना चाहता हूं। मैं इसके लिये शपथ ले चुका हूं। अपने प्राणों का बलिदान करने के लिये मैं तत्पर हूं।'

बालक की बात सेनापति के मन में घर कर गई। शंकित होकर उन्होंने पूछा—'लेकिन ये बेड़ियां डाल कौन रहा है ? उन्हें कौन तोड़ सकता है और कैसे ?

'सात समन्दर पार के विदेशी व्यापार के आकर्षण से खिंच कर हमारे देश के समुद्री किनारों पर चले आते हैं। फिर यहां आकर उन्हें इस पर अधिकार करने का मोह पैदा होता है। इसके लिये वे हमारे देश के लोगों में व्याप्त आपसी फूट का फायदा उठाते हैं। किन्हीं दो लड़ने वालों में कमजोर का पक्ष लेकर उसे मदद देते हैं युद्ध के हथियार तथा गोला-बारूद की। जब वह पक्ष विजयी है तो खुश होकर उसे जमीन का छोटा-सा इनाम देकर अपने

रखते हैं । धीरे-धीरे इसी तरह अपनी ताकत बढ़ाकर, हमें आपस में लड़ाकर कमजोर कर देंगे और हमीं पर राज करने लगेंगे । हम अपनी आपसी फूट की उलझन में पड़कर उनकी गुलामी में इस बुरी तरह जकड़ जायेंगे कि दो-तीन सौ साल हम सिर ऊँचा न उठा सकेंगे ।' कान्होजी ने भाव-विभोर होकर आवेश में कहा ।

फिर कुछ क्षण बाद कान्होजी गम्भीर होकर बोला—'देश हमारा है श्रीमान ! विदेशी ताकतें हमारी नौसेना को नष्ट करने पर तुली हुई हैं । हमारी जन्म-भूमि, देश-माता दासता में बंध रही है। हम हाथ पर हाथ रखे निश्चिन्त बैठे हैं । लेकिन अब समय आ गया है । हमें एक होकर उनका विरोध, उनका मुकाबला करना होगा ।'

'अगर तुम्हें अवसर मिला तो तुम क्या करोगे ? क्या तुम में इतना साहस, इतनी हिम्मत है कि उनसे लोहा लेकर उनके छक्के छुड़ा सको ?'

कान्होजी ने नम्रता से हाथ जोड़कर कहा—'श्रीमान जी, मैं इसी लिये आपकी शरण में उपस्थित हुआ हूं । आप मुझे नौसेना की उत्तम शिक्षा दीजिये, फिर देखिये इस सैनिक का करतब ! छोटा मुंह बड़ी बात कभी नहीं करूँगा ! लेकिन मैं प्रतिज्ञा कर चुका हूं कि भारत माँ की बेड़ियाँ काट कर ही चैन लूँगा । मेरा जीवन इस हेतु समर्पण है । यह सब सोच-विचार कर हृदय में बड़ी-बड़ी उम्मीदें और विश्वास लेकर यह शिष्य यहाँ आया है । मुझे आशा है आप योग्य प्रशिक्षण देकर इस अकिंचन को सेवा का अवसर प्रदान करेंगे। मुझे अपना लीजिये ।'

कान्होजी बड़े जोश में आकर सेनापति से बातें कर ही रहा था कि उसी समय उनका पुत्र मालोजी आ पहुंचा । उसके साथ उसके दो मित्र और भी थे । पिता के सामने एक अजनबी तेजस्वी बालक को सामने देख वे तीनों चौंक कर वहीं खड़े हो गये ।

सेनापति ने उनको देखा तो बुलाया। मालोजी सहमता हुआ वहां पास चला आया।

दत्ताजी ने लड़के की ओर देख कर कहा, 'आज तुम्हारा यह नया भाई आया है। यह तुम्हारे साथ ही रहेगा। इसे वह सारी शिक्षा देनी है जो मैंने तुम्हें दी है। इसके साथ किसी प्रकार का पक्षपात नहीं होना चाहिये, यह ध्यान रहे। इससे भाई-जैसा बर्ताव करना। मैं दो-तीन प्रशिक्षकों को और नियुक्त करता हूं जो अपनी-अपनी कलाओं में निपुण हैं और कान्होजी को शिक्षा देकर माहिर कर देंगे। इसका पूरा नाम कान्होजी तुकोजी आंग्रे है। लेकिन हम-तुम इसे कान्होजी ही कहकर पुकारेंगे। इसे आठ मास में ही प्रारम्भिक सैनिक शिक्षा देकर निपुण कर देंगे। इसके बाद मैं इसे मराठा नौ-सेना में भर्ती कर दूंगा। फिर आगे अपने गुणों से यह अपने योग्य स्थान बना लेगा'

सेनापति के मुंह से बात सुनी तो कान्होजी बाग-बाग हो उठा। दौड़कर उसने दत्ताजी के चरण पकड लिये। बोला, 'मैं कितना खुश-नसीब हूं कि मुझे श्रीमानजी ने अपना दूसरा बेटा माना। आपका यह अहसान मैं जीवन-भर न चुका सकूंगा।'

दत्ताजी ने कान्होजी को ऊपर उठा लिया और प्यार से सिर पर हाथ फेर कर कहा—'बेटा, मैं आज ही तुम्हारी शिक्षा का सारा प्रबन्ध कर दूंगा। कल से तुम अपना काम प्रारम्भ कर देना और जीवट तथा परिश्रम से शिक्षा प्राप्त करना। वैसे तुम यहीं कोठी में हमारे साथ रहोगे।'

इसके बाद काशीनाथ भट कान्होजी को आशीर्वाद देकर हरणाई गांव लौट गये। कान्होजी अपनी दिनचर्या में लग गया।

—oo—

पाँच

निपुण

सेनापति दत्ताजी जाधव की कोठी में कान्होजी बड़ी शान-शौकत और ठाठ-बाट से रहने लगा। उसे मालोजी से भाई का प्यार, मंजुला से बहन का स्नेह और हीराबाई से माँ की ममता मिली। इन तीनों ने उसे वह सब-कुछ दिया जिससे कान्होजी का चरित्र बना। उसका आत्मबल सबल हुआ। मुसीबतों से टकराने का असीम साहस उसमें पैदा हुआ।

तलवारबाज त्र्यंबकजी से उसने तलवार चलाना सीखा। अलग-अलग प्रकार से तलवार चलाने में उसने कुशलता प्राप्त की। भाँति-भाँति की तलवारें इकट्ठा करना उसका शौक हो गया। इन सब को बड़ी खूबी और दांव-पेंच के साथ चलाने में वह निपुण हो गया। बिना रुके वह दो-दो घंटे तलवार चला सकता था।

इसके साथ ही पट्टा चलाना भी वह भली-भाँति सीख गया। पट्टा वह इतनी फुर्ती और चपलता से चला लेता कि जो उसकी लपेट में आ गया वह बच के नहीं निकल सकता था। उसकी कुशलता देख दत्ताजी फूले न समाते थे। इन्हीं दिनों उसने तैरना भी सीखा।

गहरे-से-गहरे पानी में कूदने से वह नहीं डरता था। वल्कि उसे आनन्द आता था। जब वह पानी में उतरता तो घंटों तक तैरता रहता था। उसने इतना ज्ञान प्राप्त कर लिया कि वह समुद्र में भी विना भय के तैर सके।

तैरने के अलावा वह अखाड़े में खूब कसरत और व्यायाम करता। अनथके वह एक-एक हजार डंड-बैठकें लगा लेता था। तरह तरह के आसन सीख कर उसने अपने शरीर के हर अंग को लोहे की तरह भारी और कसदार बनाया। फिर उसने घुड़सवारी भी सीखी। घोड़े पर बैठ बगैर रुके वह तीस-तीस चालीस-चालीस मील का सफर कर लेता। उसे घोड़े की अच्छी परख भी हो गई। इसके अलावा उसने वोलचाल का ढंग, शिष्टाचार और मराठों की नौसेना शक्ति के वारे में पूरी जानकारी भी हासिल की।

शरीर की इन तमाम मेहनतों के कारण उसको भूख बहुत तेज हो गई। वह दिन में चार-चार बार भोजन करता। भोजन में मास का समावेश उसने कर लिया था। धीरे-धीरे उसके भोजन की मात्रा बढ़ती गई। उसकी खुराक तिगुनी हो गई। अब दिन-भर में वह पांच सेर मांस, बीस रोटियां, आधा सेर घी, चार सेर भैंस का दूध पचाने लगा। कुछ ही दिनों में वह सांड की तरह ताकतवर और हृष्ट-पुष्ट हो गया। अब उसका व्यक्तित्व ऐसा हो गया कि देखते ही आदमी की नजर उस पर ठहर जाये और उसकी शक्ति का लोहा माने। वह ऐसे-ऐसे किस्से और कहानियाँ लोगो को सुनाता कि वे उसके दीवाने हो जाते।

शाम हो गई थी। अंधेरा पड़ने लगा था। सूरज पहाड़ियों के पीछे जाकर छुप गया था। चौपाए रास्ते मे कतारें बांधे लौट रहे थे। उनके गले में बंधी घंटियों का स्वर कानों को बहुत मधुर लग रहा था। पंछीगण टोलियों में दूर-दूर से आकाश के रास्ते उड़ते हुये अपने-अपने घोसलों की ओर लौट पड़े थे। वाई गांव की चौपाल पर

वीस-पच्चीस लोग और लगभग उतने ही वालक इकट्ठे हो गये थे। आज कान्होजी ने उन्हें शारीरिक वल के वारे में कहानियाँ सुनाने का वायदा किया था। वे सव उसके आने की आकुल होकर प्रतीक्षा कर रहे थे।

थोड़ी ही देर में कान्होजी अपना कार्यक्रम निपटा कर चौपाल पर आया। उसने सव लोगों से राम-राम कर किस्से सुनाने शुरु किये। चौपायों के वल और समझ की अनेक कथायें सुनाते हुये वह सांड के वल की वातें सुनाने लगा। वोला—पशुओं में सांड का वल भी वहुत होता है। वह मस्ती में आकर विरोध करने वाले का सामना करता है। हर कोई मनुष्य उससे टकरा नहीं सकता।

तभी एक ग्रामवासी ने उठकर कहा—'कान्होजी, तुम्हारे वल की दूर-दूर के गांवों में चर्चा हो रही है। देश के नामी पहलवान तुमसे मात खाये वैठे हैं। अगर तुम सांड से मुकावला कर उसे पछाड़ दोगे तो हम तुम्हारा लोहा भी मान जायेंगे।'

कान्होजी ने आव देखा न ताव झट से कह उठा—इसमें कौन वड़ी वात है। आप इस मुठभेड़ का आयोजन करें। मैं सांड से जूझने के लिये किसी भी दिन तैयार हूं। लेकिन इस प्रतियोगिता के लिये आपको कोई पुरस्कार रखना होगा। अगर मैं हार गया तो भविष्य में अखाड़ेवाजी करना छोड़ दूंगा। लेकिन अगर मुठभेड़ में जीत गया तो आप लोग मुझे क्या देंगे ?

कान्होजी की शर्त सुनकर उपस्थित लोग आपस में काना-फूसी करने लगे। थोड़ी देर तक आपस में वीत-चीत होती रही, फिर उठ कर गांव के पाटिल ने कहा—कान्होजी, मुकावला कल ही हो जाये। चारों ओर दीवार से घिरा घोरपड़े जी का जो वड़ा मैदान है उसी में यह दंगल होगा। अगर तुम जीत गये तो हम पचास स्वर्ण दीनार इनाम में देंगे। यदि तुम हार गये तो सांड के लिए एक मास तक भोजन का खर्चा आपसे वसूल किया जायेगा।

कान्होजी तत्काल कह उठा—'मुझे मंजूर है। कल ही दंगल का प्रबन्ध करवाइये। मैं खुशी से लड़ूंगा।' कह कर वह प्रसन्न हो वहां से चला गया।

दूसरे दिन सुबह ही से घोरपड़े के मैदान में चहल-पहल शुरू हो गई। क्या बालक क्या जवान और क्या वृद्ध सबके सब मैदान की ओर उमड़ पड़ रहे थे। कान्होजी ने सेनापति से भी इस आयोजन की चर्चा की। उन्होंने भी यह कार्यक्रम देखने की स्वीकृति दी। उन्हें कान्होजी के इस विकट साहस पर अभिमान हो रहा था। देखते ही देखते मैदान पर काफी तगड़ी भीड़ एकत्र हो गई। लगभग चार-पांच हजार लोग वहां आयोजन देखने के लिये आ पहुचे।

कान्होजी मल्ल-युद्ध की पोशाक पहन मैदान में उपस्थित हुआ। सांड को भंग पिलाकर कान्होजी के सामने छोड़ दिया गया। दोनों में गुत्थम-गुत्था होने लगी। लोग बड़ी उत्सुकता तथा कौतूहल से कान्होजी का बल एवम् फुर्ती देखने लगे। लगभग दो घंटे तक यह युद्ध चलता रहा। कभी सांड पीछे हटता तो कभी कान्होजी। आखिर सांड को पसीना आ गया। उसके मुंह से फेन निकलने लगा। कान्होजी उस पर हावी हो गया। उसने सांड के सींग पकड़ [illegible] और उसे मैदान के अन्दर चारों ओर धकेल कर घुमाया। [illegible] अचम्भे से कान्होजी के बलिष्ठ शरीर को देख तथा इस [illegible] उसकी मजबूती का अन्दाज लगाकर वाह-वाह कर उठे। [illegible] गया। उसका सारा नशा जोर में खत्म हो गया। वह [illegible] भाग निकला।

कान्होजी जीत गया। लोगों ने आनन्द [illegible] देर तक जोर-जोर से तालियां बजाकर उसका [illegible] ज्यादा खुशी सेनापति दलाजी को हुई। [illegible] कान्होजी को गले लगाया। उसकी पीठ [illegible]

से उसे दस सोने की मुहरें इनाम में दीं। गांव के पाटिल ने उसे शाल-पगड़ी और सोने के पचास दीनार भेंट किये।

इस विजय से कान्होजी की चर्चा दूर-दूर तक फैल गई। गांव के लोगों को उस पर बड़ा अभिमान हुआ। वे लोग उसे बड़ा आदर देने लगे। उसे गांव का देवता समझने लगे।

कान्होजी भी अच्छा-खासा गबरू पहलवान बन गया था और योग्य सैनिक भी। उस समय तक विकसित सभी तरह के लड़ाई के हथियारों का वह सफलतापूर्वक प्रयोग कर सकता था।

इन्हीं दिनों गांव के निकट जंगल में एक खूंखार शेर के आने का पता चला। उसने लगभग आठ मनुष्यों को मार डाला तथा दस भेड़ें और चार गायों को निकट की बस्तियों से उठाकर ले गया। अब जंगल में से गुजरने की किसी की भी हिम्मत नहीं होती थी। उस गाँव में आने-जाने का मार्ग जंगल में से होकर था। वाई और उसके आस-पास जंगल के चारों ओर बसे गाँवों के लोगों में खूंखार शेर के कारण बड़ा आतंक फैल गया।

खूंखार शेर को मारने के प्रयत्न हो रहे थे। इसी समय लोगों ने कान्होजी के बल और पौरुष की चर्चा सुनी तो उन्हें विश्वास हो गया कि कान्होजी इस मुसीबत और खतरे से गाँवों के लोगों की रक्षा कर सकता है। यह सोचकर वे दल बना कर सेनापति दत्ताजी की कोठी पर पहुंचे। उन्होंने खूंखार शेर के बारे में समस्त जानकारी दी। उसके कारण हुए जान और माल का नुकसान आंका। फिर प्रार्थना कीकि कान्होजी अगर चाहे तो शेर का मुकाबला कर उसे यमलोक पहुंचा सकता है।

यह सुन दत्ताजी जाधव ने कान्होजी को बुलाकर सारी स्थिति समझाई और इस कष्ट से लोगों को छुटकारा दिलाने के बारे में बात-चीत की। कान्होजी ने क्षण-भर सोचा और खूंखार शेर का अंत

करने के लिये तैयार हो गया। वह बोला—सेनापति जी, आप चिंता न करें। मैं शेर से लड़ूंगा और उसको मार डालूंगा।

सेनापति ने कहा—कान्होजी, तुम शेर का स्वभाव तो जानते ही हो। उसका स्वभाव बड़ा चतुर होता है। उसके दांव घातक होते हैं। और वह बड़ा फुर्तीला तथा हिंसक प्रवृत्ति वाला जानवर है। तुम उसे सांड समझ कर सामना नहीं करना।

'नहीं-नहीं सेनापति जी ! क्या आप यह समझते हैं कि मुझमें यह जानने-समझने की ताकत अथवा बुद्धि नहीं ? मैं शेर की प्रवृत्ति को खूब समझता हूं। मैं उससे लड़ूंगा, भिड़ूंगा और मार डालूंगा। आप को निराश नही होना पड़ेगा। मैं कल सुबह ही जगल के लिये प्रस्थान करूंगा। आप चिंता न कीजिये।'

'अच्छा बेटे, सम्भल कर जाना। उसकी हरकतों पर बारीक नजर रखना, उससे सतर्क रहना। खबर आई है कि उसके मुंह इन्सान का खून लगा है।' सेनापति ने चिंतित होकर कहा।

'जी सेनापति जी ! आप बिल्कुल निश्चिन्त रहें। मै अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त कर लौटूंगा, इतना मुझे विश्वास है। मै शेर को छका-छका कर मार डालूंगा। उसकी लाश यहां ले आऊंगा। हम उसमें मसाला भर कर मरे शेर को दीवानखाने में सजायेंगे। इस काम में सफल हुआ तो गाव वालो से इनाम दिलवाइएगा।'

'अवश्य बेटे अवश्य। शेर के मर जाने से गांव के लोग चैन की नींद सो सकेंगे। उन्हे अपने चौपायों से भी हाथ न धोना पड़ेगा। वे लोग तो तुम्हे खुश होकर बहुत सारा धन इनाम में देंगे। मैं भी तुम्हें इस सफलता पर दो नई तलवारें, एक पगड़ी और सौ रुपया इनाम दूंगा।' दत्ताजी ने बड़े गर्व से कहा।

'अच्छी बात है। मैं सुबह ही जंगल चला जाऊंगा। मुझे जरा जल्दी जगा देना। मेरे साथ केवल चार आदमी रहेंगे। मेरी रक्षा के लिए नहीं। बल्कि शेर की लाश यहां उठा लाने के [illegible]

से उसे दस सोने की मुहरें इनाम में दीं। गांव के पाटिल ने उसे शाल-पगड़ी और सोने के पचास दीनार भेंट किये।

इस विजय से कान्होजी की चर्चा दूर-दूर तक फैल गई। गाँव के लोगों को उस पर बड़ा अभिमान हुआ। वे लोग उसे बड़ा आदर देने लगे। उसे गांव का देवता समझने लगे।

कान्होजी भी अच्छा-खासा गबरू पहलवान बन गया था और योग्य सैनिक भी। उस समय तक विकसित सभी तरह के लड़ाई के हथियारों का वह सफलतापूर्वक प्रयोग कर सकता था।

इन्हीं दिनों गाँव के निकट जंगल में एक खूंखार शेर के आने का पता चला। उसने लगभग आठ मनुष्यों को मार डाला तथा दस भेड़ें और चार गायों को निकट की बस्तियों से उठाकर ले गया। अब जंगल में से गुजरने की किसी की भी हिम्मत नहीं होती थी। उस गाँव में आने-जाने का मार्ग जंगल में से होकर था। वाई और उसके आस-पास जंगल के चारों ओर बसे गाँवों के लोगों में खूंखार शेर के कारण बड़ा आतंक फैल गया।

खूंखार शेर को मारने के प्रयत्न हो रहे थे। इसी समय लोगों ने कान्होजी के बल और पौरुष की चर्चा सुनी तो उन्हें विश्वास हो गया कि कान्होजी इस मुसीबत और खतरे से गाँवों के लोगों की रक्षा कर सकता है। यह सोचकर वे दल बना कर सेनापति दत्ताजी की कोठी पर पहुंचे। उन्होंने खूंखार शेर के बारे में समस्त जान-कारी दी। उसके कारण हुए जान और माल का नुकसान आंका। फिर प्रार्थना कीकि कान्होजी अगर चाहे तो शेर का मुकाबला कर उसे यमलोक पहुंचा सकता है।

यह सुन दत्ताजी जाधव ने कान्होजी को बुलाकर सारी स्थिति समझाई और इस कष्ट से लोगों को छुटकारा दिलाने के बारे में बात-चीत की। कान्होजी ने क्षण-भर सोचा और खूंखार शेर का अंत

करने के लिये तैयार हो गया । वह बोला—सेनापति जी, आप चिंता न करें । मैं शेर से लड़ूंगा और उसको मार डालूंगा ।

सेनापति ने कहा—कान्होजी, तुम शेर का स्वभाव तो जानते ही हो । उसका स्वभाव बड़ा चतुर होता है । उसके दांव घातक होते है । और वह बड़ा फुर्तीला तथा हिंसक प्रवृत्ति वाला जानवर है । तुम उसे सांड समझ कर सामना नही करना ।

'नहीं-नहीं सेनापति जी ! क्या आप यह समझते हैं कि मुझमें यह जानने-समझने की ताकत अथवा बुद्धि नही ? मैं शेर की प्रवृत्ति को खूब समझता हूं । मैं उससे लड़ूंगा, भिड़ूंगा और मार डालूंगा । आप को निराश नहीं होना पड़ेगा । मैं कल सुबह ही जंगल के लिये प्रस्थान करूँगा । आप चिंता न कीजिये ।'

'अच्छा बेटे, सम्भल कर जाना । उसकी हरकतों पर बारीक नजर रखना, उससे सतर्क रहना । खबर आई है कि उसके मुंह इन्सान का खून लगा है ।' सेनापति ने चिंतित होकर कहा ।

'जी सेनापति जी ! आप बिल्कुल निश्चिन्त रहें । मैं अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त कर लौटूंगा, इतना मुझे विश्वास है । मैं शेर को छका-छका कर मार डालूंगा । उसकी लाश यहां ले आऊँगा । हम उसमें मसाला भर कर मरे शेर को दीवानखाने में सजायेंगे । इस काम में सफल हुआ तो गांव वालों से इनाम दिलवाइएगा ।'

'अवश्य बेटे अवश्य । शेर के मर जाने से गांव के लोग चैन की नींद सो सकेंगे । उन्हें अपने चौपायों से भी हाथ न धोना पड़ेगा । वे लोग तो तुम्हें खुश होकर बहुत सारा धन इनाम में देंगे । मैं भी तुम्हें इस सफलता पर दो नई तलवारें, एक पगड़ी और सौ रुपया इनाम दूंगा ।' दत्ताजी ने बड़े गर्व से कहा ।

'अच्छी बात है । मैं सुबह ही जंगल चला जाऊँगा । मुझे जरा जल्दी जगा देना । मेरे साथ केवल चार आदमी रहेंगे । मेरी रक्षा के लिए नहीं । बल्कि शेर की लाश यहां उठा लाने के लिये ।' यह कह

कर कान्होजी उछलता-कूदता अखाड़े की ओर चला गया।

अगली सुबह कान्होजी को जल्दी जगाया गया। उसने निपट कर नहा-धो लिया। मंदिर में जाकर शिवजी की पूजा की। मृत्युंजय का पाठ किया। लोहे का छाती-कवच, भुजा-कवच और पैर-कवच धारण कर उस पर पाजामा और अंगरखा पहना और घोड़े पर सवार हो जंगल की ओर दौड़ पड़ा। उसके पीछे चार सैनिक और थे। सबके सब हर खतरे का सामना करने के लिये तैयार थे।

लगभग डेढ़ घंटा दौड़ने के बाद घोड़ों ने जंगल में प्रवेश किया। प्रवेश करने के बाद कान्होजी घोड़े से उतर पड़ा। साथ ही साथी भी। सब ने अपने घोड़े एक वृक्ष के तने से बाँध दिये और कान्होजी के पीछे चल दिये। कान्होजी निर्भय होकर शेर की खोज में घूमने लगे। पिछली रात वर्षा बहुत तेज और काफी हो गई थी। इस कारण सारा जंगल धुला हुआ स्वच्छ लग रहा था। पेड़ों पर हरयाली और नरमी निखर आई थी। मिट्टी जम कर धरती पर चिपक गई थी जिससे धूल उड़ने का प्रश्न ही नहीं उठता था। इस समय आकाश साफ था।

जंगल में भटकते हुये बहुत देर हो गई। सूरज का गोला ठीक सिर पर आ गया। धूप की तेजी जंगल में भी महसूस होने लगी। वातावरण में बिल्कुल गुमसुमी छाई हुई थी। हवा चुप थी पर उसमें ठंडक थी। पत्ते हिलते-डुलते नहीं थे। उसे देख ऐसा लगता था मानों पशु-पक्षी भी विश्राम कर रहे हों। न कहीं जंगली जानवर की गुर्राटी सुनाई पड़ती थी, न पंछी की फड़फड़ाहट। सब ओर मौत की-सी शान्ति थी। कोई किसी से बोलता नहीं था। यह देख कान्होजी का दिल भी उचट गया। वह चलते-चलते रुक गया और बोला—'सुभानराव, पता नहीं और कितना भटकना है। जंगल के आधे भाग का चप्पा-चप्पा छान डाला पर खूंखार शेर कहीं नहीं मिला।'

सुभानराव ने कहा—'मेरा विचार है कि शेर यहाँ से थोड़ी दूर

बहते हुये झरने के आस-पास बीहड़ झाड़ी में होगा। वहां जंगल इतना घना है कि सूरज का प्रकाश भी नहीं पहुंच पाता। बहुत साल पहले एक तेंदुये ने उत्पात मचा रखा था। वह भी उसी बीहड़ में रहता था। दिन भर वह वहां विश्राम करता और रात को गांवों में घुस कर इन्सानों को और चौपायों पर घातक हमले कर उन्हें अपने जबड़े में दबोच कर इसी घनी झाड़ी में आकर उनका भोजन करता था।'

'तो उसी ओर चलते हैं, कान्होजी ने निडरता से कहा—'आप सतर्क होकर चलिये, कहीं दुबक कर बैठा केसरी आप पर वार न कर दे। मेरी चिंता न करना। मैं तो हाथों से ही उससे निपट लूंगा। मैं उससे कुश्ती लड़ना चाहता हूं। देखता हूं उसमें कितनी शक्ति है।' जोश से कहते हुये कान्होजी ने सैनिकों की ओर देखा। उनके तन पर पसीना आ गया था और बेहद भयभीत हो गये थे।

पांचों व्यक्ति आगे बढ़ते रहे। ऊबड़-खाबड़ और पथरीली जगहों को पार कर वे एक पहाड़ी के निकट आ पहुंचे। वहां से कुछ दूरी पर एक छोटा सा झरना नजर आया। झरना देखते ही कान्होजी की जान में जान आई। उसके दिमाग में तरह-तरह की बातें उलझने लगीं। शेर कैसा होगा, उसका स्वभाव किस प्रकार का होता है, उसमें कितना बल होगा, कैसे दांव-पेंच वह अजमायेगा; आदि कितने ही विचार उसे झकझोड़ने लगे। इसी हालत में वह आगे बढ़ने लगा। सामने झाड़ियों का सघन झुरमुट था जिसमें जानवर के छिपे हुये बैठे रहने की सम्भावना थी। इसीलिए पांचों बड़े सम्भल कर इधर-उधर देखते हुये आगे बढ़ने लगे। थोड़ी दूर जाने के बाद अचानक बबनराव ठिठका और कान्होजी का हाथ पकड़ता हुआ फुसफुसा कर बोला—'कान्होजी, सामने देखिये। झरने के किनारे पेड़ की छाया में कौन खड़ा है। कितना खूबसूरत नजारा है।'

कान्होजी ने चौंक कर विस्मय से देखा—सामने एक विशाल

राज खड़ा था । खड़ा-खड़ा यह विश्राम कर रहा था । वह मजे में
ं मूंद और खोल रहा था । किसी पंछी की चहचहाट सुन कर
र की ओर देख लेता था । कभी किसी आहट को परखने के लिये
न सतर्क कर लेता और फिर कुछ खतरा न पाकर मौज से कान
ले कर देता था । कान्होजी ने धीमे स्वर में कहा—'मैं देख रहा हूं
बनराव । तुम्हारा मतलब शेर से है न ? डर तो नहीं लग रहा !'

'जी नहीं ! मैं तो एकदम तैयार हूं मुकाबले के लिये । कहीं आप
ो नहीं डर रहे ?' बबनराव ने कहा ।

'बिल्कुल नहीं बबनराव ? मुझ तो बेहद खुशी हो रही है । कब
केसरी मेरा सामना करता है और कब मैं उसका काम तमाम करता
हूं इसके लिये मेरा मन बेचैन हो रहा है । मेरे हाथ भिडन्त के लिये
मचल रहे हैं । यह मेरा शिकार है । मेरे हाथों ही यह मरेगा । वायदा
कीजिये आप लोग कि मुझे किसी तरह की मदद नहीं देंगे । मैं साफ-
साफ कहे देता हूं कि मुझे अकेले ही शेर से निपटने दीजिये, कोई
उसका विरोध नहीं करेगा । नहीं देंगे न ?'

चारों सैनिक कह उठे—'बिल्कुल नहीं । आप निडर होकर अकेले
ही गजराज का मुकाबला करें । हम किसी प्रकार आपकी सहायता
नहीं करेंगे । हम देखना चाहते हैं कि आप में कितना बल, कितनी
चपलता और साहस है ।'

'ठीक है । मैं यही चाहता हूं । अब आप लोग कृपया पेड़ पर चढ़
कर हमारी भिडन्त देखें ।'

'जो हुक्म !' कह कर चारों सैनिक बरगद के एक बहुत पुराने
ऊंचे पेड़ पर चढ़ कर जा बैठे ।

कान्होजी जोश में भर कर अभिमान से कह उठा—बस यह ठीक
है । अब देखना मजा, कैसे उस शेर को ललकार कर जूझता हूं । वन-
राज को नानी याद आ जायेगी ।' इतना कह कर कान्होजी दृढ़ता के
साथ कुछ कदम आगे बढ़ा ।

सूरज सिर पर से हट गया था। उसकी किरणें तिरछी पड़ने लगी थी, लेकिन तब भी उस घने जंगल में ठंडी हवा बह रही थी, जिससे वातावरण शीतल हो चला था। आकाश तपे लोहे की तरह लाल सुर्ख हो रहा था, पर रोशनी में भयानक गर्मी नही थी। खूंखार शेर मुंह झुकाये झरने पर पानी पी रहा था। वह बहुत मस्त हो गया था और उसमें अजीब सुस्ती छाई हुई थी। वह पूंछ हिलाकर और फट-कार कर शरीर को व्यायाम करा रहा था। कान्होजी बगैर किसी भय अथवा दहशत के उसके सामने आकर खड़ा हो गया। उसने शेर का ध्यान हटाने के विचार से एक पत्थर उठा कर उस पर मारा। पत्थर तड़ाक से उसके माथे पर आ लगा। पत्थर के आघात से शायद शेर का माथा घूम गया था। उसने चिल्ला कर भयंकर दहाड मारी। जंगल का शांत वातावरण एकबारगी थर्रा उठा। शेर ने गुर्रा कर कान्होजी को देख लिया। क्षण भर वह गुर्राया, जोश में भर कर लंबी पूंछ दो-तीन बार पटकी और कान्होजी पर झपट पड़ा।

कान्होजी उसका वार झेलने के लिए पहले ही से तैयार बैठा था। उसने पूरे बल के साथ शेर के मुंह पर मुक्कों का प्रहार किया जिसे शेर सहन न कर सका। वह जोर से दहाडा। कान्होजी ने भी चिल्ला कर जोश प्रकट किया और उससे भिड़ गया। शेर ने अपने पुष्ट लम्बे नाखूनों का प्रयोग किया पर उसका हमला कान्होजी बचा गया। उसने शेर के दोनों अगले पैर हाथों से जकड़ लिए और उसके पेट पर कई ठोकरें मारी। शेर तिलमिला उठा। उसने अपनी पूरी ताकत लगाई और क्रोध से दोनों जबड़े खोल कर कान्होजी का सिर पकड़ना चाहा। पर कान्होजी कच्ची गोलियां नही खेला था। उसने दोनों हाथों से कस कर शेर के जबड़े पकड़ लिए और उन्हें चिघाड़ते हुए फाड़ने का प्रयत्न किया। शेर का सारा जोर व्यर्थ सिद्ध हुआ और उसके जबड़े फट गये। अब कान्होजी ने फुर्ती से कटार निकालकर शेर का मस्तक छेद डाला।



सिंह ने अंतिम कोशिश करने के लिए अपने पैर कान्होजी पर मारे। पर कान्होजी कब हिलने वाला था। वह उसके दोनों पैरों से चिपट गया। अब धीरे-धीरे शेर को मूर्छा आने लगी और उसका जोश ढीला होता गया। दस-पन्द्रह मिनट के बाद उसने गरज कर दम तोड़ दिया। आठ फुट लम्बा और साढ़े चार फुट ऊंचा जंगल का राजा कान्होजी के चरणों पर लम्बा पड़ा था।

कान्होजी ने प्रसन्नता से सैनिकों को आदेश दिया कि वे पेड़ से उतर आयें और शेर को लाद कर ले चलें। कान्होजी ने फिर झरने का आनन्द से पानी पिया और थोड़ी देर सुस्ताया। उसके शरीर का जोड़-जोड़ दर्द कर रहा था। तन पर कई जगह नाखून से घाव हो गये थे जिनमें से खून बाहर निकल कर जम गया था। लेकिन कान्होजी को इसकी परवाह नहीं थी। वह खुशी से उछल रहा था।

इसके बाद शेर को घोड़े पर लदवा कर कान्होजी सैनिकों के साथ घर लौट आया। सैनिको ने बड़े जोश मे आकर सेनापति दत्ताजी को कान्होजी की बहादुरी-भरी मुठभेड़ की कहानी सुनाई। उसके इस साहस की चर्चा हवा की तरह गांवों में फैल गई। गांववाले आकर उस विकराल सिंह को देखने लगे। उन्होने कान्होजी के साहस की भूरि-भूरि प्रशंसा की और अनेक पुरस्कार दिये। दत्ताजी ने कान्होजी की पीठ ठोकी। उसे इनाम दिया। फिर बोले—कान्होजी, तुम अपने में एक निपुण नौजवान हो। मेरे यहां की शिक्षा पूरी हो चुकी। अब कल ही मैं तुम्हे सुवर्णदुर्ग ले चलता हूं। कल से तुम्हें सेना में नौकरी मिल जाएगी। अपने करतब दिखाने का अवसर मिलेगा। तुम्हें हर काम मे सफलता मिले और तुम्हारा नाम [illegible] हो यही मेरा शुभ आशीश है।

और अगले ही दिन कान्होजी सुवर्ण दुर्ग पहुंच [illegible] सर्वोच्च सेनापति सिद्धोजी गुज्जर ने उसके [illegible] होकर कान्होजी को सैनिको का छोटा अधिकारी [illegible]

छः

सफलता

सुवर्ण दुर्ग के फौजी नौ सेना के मुख्य कार्यालय में रह कर एक मास के भीतर ही कान्होजी ने सारी हालत ध्यान से समझ ली। समुद्री लड़ाई में काम आने वाले हथियारों को देखा-परखा और उनका उपयोग समझा, उनकी मारक शक्ति को आंका। मराठों की नौ सेना के समुद्री जहाजों को देखा। उनकी गिनती जानी। जहाजों में प्रत्येक तरह के युद्ध का अभ्यास देखा। उसकी बारीकियाँ जानीं-समझीं। हर तरह के जहाज में बैठ समुद्र में काफी दूर-दूर तक की यात्राएं कीं। समुद्र की लहरों और उसकी उग्र-भयंकर शक्ति को पहचाना। समुद्र के वातावरण से अपना तादात्म्य-स्थापन करने का प्रयत्न किया।

इतना कुछ करके ही कान्होजी चुप नहीं बैठा। वह अपने जहाज में बैठ समुद्र में आने-जाने वाले पुर्तगाली, डच तथा अंग्रेजी जहाजों पर भी हो आया। उनके आकार-प्रकार और सुविधाओं का भी उसने अध्ययन किया। यही नहीं, वह लुक-छुप कर मराठों के सबसे बड़े तथा शक्तिशाली दुश्मन सिद्दी की नौ सेना के जहाजों को भी देख



आया। उनके युद्ध करने वाले चार जंगी जहाजों पर चढ़ कर उनका निरीक्षण भी उसने किया।

यह सब दौड़-धूप उसने इस आत्मीयता से की मानों उसके जीवन से इन सब बातों का गहरा सम्बन्ध हो। हर बात और दृष्टि से उनकी तुलना अपने आरमार (जहाजी बेड़े) से की। गहन अध्ययन और छान-बीन के बाद उसने अनुभव किया कि मराठों की नौ सेना में जहाजों की संख्या बहुत कम है। उनकी वृद्धि करना बहुत जरूरी है। अनेक जहाज बहुत पुराने होने के कारण बड़ी जर्जर अवस्था में हैं। वे युद्ध में लड़ाई के लायक नहीं हैं। उन्हें सेवा-निवृत्त कर उनके स्थान पर पुर्तगाली ढंग के हथियारों तथा तोप और गोला-बारूद से युक्त जहाज होने चाहियें। इनके अतिरिक्त समुद्री तूफानों में भी समुद्र पर चलने वाले हल्के और तीव्रगामी अंग्रेजी जहाजों का निर्माण किया जाना चाहिये। जब तक इन जहाजों का निर्माण नहीं किया जाता तब तक मराठों की नौ सेना-शक्ति में सुधार की कोई आशा नहीं है। इन बातों का अध्ययन करते हुए कान्होजी ने यह भी अनुभव किया कि मराठा सैनिकों में कुशलता, कर्मठता और अनुशासन की नितान्त कमी है। जिसका होना बहुत आवश्यक है।

इस समय कान्होजी गल्लीवत में बैठ कर पचास-साठ मील सागर पर घूम कर लौटा। इस यात्रा में उसकी जंजीरा के सिद्दी के जहाजों से मुलाकात हुई। एक जहाज के अधिकारी से बात की। उसने अपने पास जमा मुहरों में से दस सोने की मुहरें भेंट कर अपने यहाँ ऊँचे ओहदे की नौकरी दिलाने का लालच दिया और बदले में उसने जंजीरा की नौ सेना शक्ति का पता देने के लिये कहा तो वह बोला, 'मेरा नाम दौलत खान है और मैं सिद्दी की नौ सेना का एक बिल्कुल छोटा अधिकारी हूं। मुझे सिद्दी की सेना में नौकरी करते हुए दस वर्ष से अधिक हुये हैं। मैं ईमानदारी और परिश्रम से नौकरी

कर रहा हूं। लेकिन मुझे सिद्दी ने कोई तरक्की नहीं दी न ही मुझे ऊँचा ओहदा मिलने की उम्मीद है।

कान्होजी ने अचरज से पूछा, 'वह क्यों ?'

दौलतखान बोले, 'वह इसलिये कि दो-तीन साल पहले मुझसे एक गलती हो गई। मराठों के साथ लड़ाई में हम जीत गये। हमने मराठों के एक जालिम फौजी अफसर हीरोजी फर्जंद को कैद कर लिया। दूसरे दिन हमें उसे सिद्दी के सामने पेश करना था। पर न जाने कैसे वह हमारी कैद से भाग निकला। हमें पता भी न चल सका। जब सिद्दी को इस बात की खबर मिली तो वह आग-बबूला हो उठा। उसने मुझे बहुत लताड़ा। भला-बुरा कहा और बोला—मुझे शक हो रहा है कि तुम मराठों से मिल गये हो। हो सकता है कुछ ले-दे कर तुमने ही हीरोजी फर्जंद को छोड़ दिया हो। मैं तुम्हारी कभी तरक्की नहीं करूँगा। इसी ओहदे पर आखिर तक सड़ते रहो।

'तो तुम हमारे पास आ जाओ। मैं तुम्हें सेना में ऊँचे ओहदे की नौकरी दिला दूँगा, मैं वायदा करता हूँ।' कान्होजी के इस वचन पर वह राजी हो गया। फिर उसने सिद्दी नौ-शक्ति के बारे में बताया कि उसके पास लड़ाई के चार सौ साठ जहाज है। आठ हजार सिपाही हैं जो समुद्री लड़ाई लड़ते है। उसके पास जहाजों पर रखी जा सकने वाली लम्बे पल्ले की मार करने वाली हल्की डेढ़ सौ तोपें हैं। मराठों की नौ शक्ति हम से आधी भी नहीं है। फिर मराठा सिपाही भी केवल लूट-मार के लिए ही लड़ने वाले प्रतीत होते है। उन्हें अपने शासक से कोई प्रेम दिखाई नहीं देता। वे केवल अपने ही स्वार्थ के लिए लड़ते हैं। भला ऐसी हालत जहाँ हो वहाँ के राजा को क्या कामयाबी मिल सकेगी, यह तुम्ही बताओ।'

कान्होजी सागर के किनारे रेत पर बैठा इन्हीं बातों को ध्यान से सोच रहा था। मन ही मन वह इस बात का भी अनुमान लगा रहा था कि सिद्दी से लोहा लेने के लिये मराठा नौ-शक्ति को कैसे संगठित

किया जाये ? इसके लिए काफी संख्या में जंगी जहाज, वहुत सारो माल ढोने वाली नौकाएं और गोला-वारूद का होना जरूरी है। यह सव कैसे प्राप्त किया जा सकता है ? कौन देगा इतना सव, फिर मेरी सुनेगा भी कौन ? मैं तो एक मामूली अधिकारी हूं। मुझे इतना अधिकार है ही कहाँ कि मैं अपनी मर्जी और समझ के अनुसार कुछ कर ही सकूँ। यदि मैं अधिकार पासकूं तो मैं नौ सेना में आमूल-चूल परिवर्तन कर उसे ऐसा मजवूत तथा शक्तिशाली वना दूँगा कि विदेशी ताकतें हमारी ओर आँख उठा कर देखने का साहस न कर सकेंगी।

दोपहर ढल चुकी थी। सूरज का विंव सिर पर से लुढक गया था। सूरज का प्रकाश यद्यपि गर्म था, लेकिन सागर की लहरों पर से आने वाली हवा काफी ठंडी थी। सागर पर फेनिल लहरों का ताण्डव नर्तन हो रहा था। लहरें स्वाभाविक जोश के साथ वहुत ऊंची उठ कर पुनः नीचे गिर पड़ती थीं जिससे फेन पैदा हो जाता था और वह तरगों के वहाव के साथ उमड़ कर तट से टकरा जोर की आवाज मुखरित कर भयानकता पैदा करने की कोशिशें करता था।

लेकिन कान्होजी का प्रकृति की इस अदम्य लीला की ओर ध्यान नहीं था। वह अपने ही विचारों में उलझा हुआ था। सिद्धोजी गुज्जर उसके पास कव आ खड़े हुए इसकी उसे सुध नहीं थी। वड़ी देर तक वे कान्होजी की ओर निहारते रहे। उसे समझने की कोशिश करते रहे। लेकिन जव काफी देर हो गई और कान्होजी की तंद्रा न टूटी तो उन्होंने उसके कंधे पर हाथ रख कर पुकारा— कान्होजी ! जागो भाई। काफी देर हो गई तुम्हें यहाँ वैठे हुए। वापस लौटना नहीं है क्या ?'

और पुकार सुन कान्होजी चौंक पड़ा। उसने योंही आंखें तरेर कर पीछे की ओर देखा तो सिद्धोजी को खड़ा पाया। नौ सेना के सुरखैल सर्वोच्च सेनापति को अपने पास खड़ा देख उसका शरीर कांप उठा। तपाक से खड़े हो कर उसने फौजी ढंग से सेनापति का अभि-

वादन किया। सकपका कर वह कह उठा—'मेरे लिये क्या आज्ञा है हुजूर!'

सिद्धोजी गुज्जर हंस पड़े और बोले—नहीं भाई, कोई आज्ञा नहीं है। मैं किले में बैठा बड़ी देर से तुम्हें देख रहा था। लेकिन तुम यहीं बैठे रहे। मैंने सोचा कोई बात जरूर है जो तुम खोये हुये-से यहां बैठे हुये हो। तुम्हारी तबियत तो ठीक है न?

'जी हां हुजूर, बिल्कुल ठीक है। मैं एकदम भला-चंगा हूं। और भला ऐसे भारी-भरकम शरीर को हो भी क्या सकता है?' कान्होजी ने विनोदी स्वर में कहा और हंसा।

जवाब में सिद्धोजी खिलखिला कर हंस पड़े और बोले—मैं तुम्हारे व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हूं कान्होजी। भवानी तुम्हें अंतिम दम तक भला-चंगा रखे यही मेरी कामना है। दत्ताजी जाधव सुबह यहां आये थे तुम्हारी कुशल-मंगल पूछने। पर तुम यहां दिखाई नहीं दिये। बड़ी देर तक उन्होंने तुम्हारी प्रतीक्षा की। तुम्हारे बारे में उन्होंने मुझे सब-कुछ विस्तार से बताया। तुम्हारी दिलेरी की घटनाएँ भी उन्होंने सुनाईं। सुनकर मैं दंग रह गया। यह सचमुच किसी मामूली इंसान की बात नहीं हो सकती। मुझे तुम पर बहुत अभिमान है। छत्रपति संभाजी से मिल कर मैं तुम्हें योग्यता के अनुसार बड़ा पद दिलाने का आग्रह करूँगा। आगे तुम्हारी किस्मत। मेरी शुभ कामनाएँ तुम्हारे साथ हैं और रहेंगी।

सिद्धोजी की बातें सुन कर कान्होजी का मन गुदगुदा गया। उसे अपार हर्ष हुआ। हाथ जोड़ कर विनम्रता से बोला—यह तो आपका बड़प्पन है हुजूर। वैसे यह बंदा साधारण कृषक परिवार में जन्मा है। तकदीर का सितारा चमका तो इस क्षेत्र में पदार्पण कर सका भाग्य यहां खींच लाया आपकी सेवा में। यों मेरी ऐसी कोई खास योग्यता या वंश-परंपरा नहीं जो अपने को ऊँचे पद का अधिकार

समझूँ। आप लोगों का आशीर्वाद रंग लाये तो अनहोनी भी होनी में बदल सकती है। आपका वरदहस्त सदा मेरे सिर पर रहे यही मेरी कामना है।

कान्होजी की विनम्रता और मधुर स्वभाव सिद्धोजी के मन में घर कर गया। वे भाव-विभोर हो गये तो आँखें गीली हो उठीं। दबे भाव से बोले—कान्होजी, तुम सदा फलो-फूलो यही ईश्वर से प्रार्थना है। मैं निस्संतान हूं। मेरे कोई औलाद नहीं हुई और न होगी। ईश्वर का दिया सब-कुछ है। पर औलाद नहीं। यही दुख था सो तुम्हारे यहाँ आने से वह भी दूर हो गया। मैं तुम्हें अपना बेटा समझता हूं। क्या तुम इस रिश्ते के लिये तैयार हो? कृपया 'हां' कहो, इंकार न करना। मेरी सारी धन-दौलत तुम्हारी हैं।' यह कह कर उन्होंने उम्मीद से कान्होजी की ओर देखा और उत्तर की प्रतीक्षा करने लगे।

सिद्धोजी की अभिलाषा सुन कर कान्होजी गदगद हो उठा। उस ने सेनापति की इच्छा का सम्मान किया और चरण छूकर बोला, 'आपकी आकाँक्षा मेरे सिर-माथे पर। मैं जो कुछ भी बनूंगा वह आपके आशीर्वाद का ही फल होगा। वैसे मैं वचन देता हूं कि आपका और अपना नाम रोशन करने में कोई कसर न उठा रखूंगा।'

यह सुनकर सिद्धोजी ने गदगद हो कर कान्होजी को गले लगा लिया और उसका मस्तक चूमा। फिर बात बदल कर स्नेह से पूछ बैठे—'सुबह से कहाँ गायब थे तुम? मैं तुम्हें कहां-कहां खोजता फिरा! तभी अचानक तुम्हारा अभिन्न मित्र बालाजी मिला। उससे मालूम हुआ कि तुम समुद्र की सहल पर सुबह के पहले ही निकल गये हो। बोलो बेटा, कहाँ तक घूम आये?'

कान्होजी विचारों में खोया हुआ था, सो चौंक कर कह उठा—मैं जंजीरा गया था। सिद्दी के जंगी जहाजों का भी निरीक्षण कर

आया हूं। वहां के एक छोटे नौ सेना-अधिकारी दौलत खान से मुलाकात हुई। वह सिद्दी की नौकरी छोड़ कर मराठा नौ सेना में नौकरी प्राप्त करना चाहता है। मैंने उसे बड़ा ओहदा दिलाने का वायदा किया है। यह काम आप को करना होगा। करेंगे न आप ?

'क्यों नहीं ? जरूर करूंगा। इससे तो हमारा ही लाभ है। सिद्दी के साथ लोहा लेते समय हमें उसकी शक्ति पर नजर रखने में आसानी होगी।' सिद्धोजी ने खुश हो कर कहा।

'लेकिन सिद्दी की नौ सेना-शक्ति का भेद पाया तो सुन कर आंखें फटी रह गई। उसके साथ मराठा शक्ति की तुलना की तो मालूम हुआ कि हमारी शक्ति उनसे आधी भी नहीं है। और जो कुछ है वह भी पुराने ढंग की और खस्ता हालत में। बापू, मैं और आप सैनिक हैं। हम पर किसी से ज्यादा धरती मां का अधिकार है। हमें जान देकर भी उसकी रक्षा करनी है। महाराष्ट्र की मिट्टी मुझे अपना कर्त्तव्य निभाने के लिये पुकार रही है। मैं मराठों की नौ सेना-शक्ति को नये ढंग से संवारना चाहता हूं, जिससे हम विश्वास के साथ साहस और वीरता से विदेशी शक्ति का मुकाबला कर सकेंगे। मराठा राज्य को पतन के गर्त से हम बचा सकें यही मेरी कामना है। हमारी नौ सेना-शक्ति सुदृढ़ एवं विशाल हो इसके लिये मैं अपनी पूरी शक्ति लगाने की शपथ लेता हूं। इस के लिये मैं आप से विस्तार से बातचीत करना चाहता हूं यदि आप स्वीकृति दें तो ···'

'आओ, किले में चलकर ही बातचीत करते हैं। यहां समुद्र के किनारे बातें करना ठीक नहीं। दीवार को भी कान होते हैं, जानते हो न ! यह समय भी बड़ा टेढ़ा चल रहा है।'

'जी हां, जानता हूं !' कान्होजी ने गम्भीरता से कहा, 'और शासन की बातें खुले में होनी भी नहीं चाहिये। मैं तो जंजीरा से लौटकर यहीं किनारे बैठ गया। फिर विचारों में ऐसा खो गया कि पता ही न चला कि मैं कहां बैठा हूं। मुझे यहां बैठे कितना समय

हो गया है। खाने-पीने क़ी सुध भी नहीं रही। सुबह चलते समय दो सेर दूध और कुछ फल खा लिए थे। अब भूख अनुभव हो रही है।'

'तो चलो किले में मेरे यहाँ। वहाँ भोजन कर लेना और बातें भी होंगी। मैं तुमसे बातचीत करने के लिए बहुत उत्सुक तथा उतावला हूं।' सिद्धोजी ने बड़े स्नेह से कहा।

फिर दोनों किले की ओर चल पड़े। चलते हुए कोई कुछ न बोला। वैसे भी कान्होजी इस स्थिति में न रहा कि कुछ बात करे। उसके मस्तिष्क में विचारों का अन्धड़ फैल रहा था और लगातार जोर मारने लगा था।

महल के दीवानखाने में पहुंच कर सिद्धोजी ने हर्ष-भरे दिल से आवाज लगाई, 'रेवतीबाई आओ, देखो तो तुम्हारा बेटा और मराठा नौशक्ति का सर्वोच्च सेनानी कान्होजी आया है।'

पुकार सुनकर ऊँची-पूरी गौर वर्ण और तेजस्वी एक साध्वी सुहागन वहाँ दौड़ी आई। उसने कान्होजी को देखा तो बड़ी ममता और स्नेह से पुकार उठी—'आओ कान्होजी, आज से तुम्हारा सम्बन्ध गुज्जर कुल से हो गया। तुम हमारे लाड़ले बेटे हुए। लेकिन लोक-प्रचार में तुम्हारा ताम कान्होजी आंग्रे ही रहेगा। मसनद पर आराम से बैठो। मैं भोन परोस कर लजाती हूं।'

कान्होजी भोजन करने लगा। भोजन करते-करते वह सिद्धोजी से बात छेड़ना चाहता था। अपने मन में विचारों को संजोकर उसने कहा—मैं यह कहना चाहता हूं कि·· पर सिद्दोजी उसे हाथ से रोक कर बोले—'अभो नहीं बेटा, पहले आराम से भोजन कर लो। फिर बातें करेंगे। भोजन करते समय मन शान्त रखना चाहिए। किसी तरह की बात न करना उचित होता है। पहले पेट पूजा और फिर काम दूजा! मैं तुम्हारी बातें ध्यान से सुनूँगा। उस पर चर्चा करेंगे।'

'बहुत अच्छा बापू !' कान्होजी ने हर्ष से मुस्कराकर कहा और वह आराम से भोजन करने लगा। भींगे बहुत स्वादिष्ट बने थे। वह उन पर हाथ साफ करने लगा। साथ ही बकरे का मांस भी था। कान्होजी को यह बहुत अच्छा लगता था। लगभग आधे घंटे तक उसने छक कर खाना खाया फिर एक सेर वजन के अंगूर चटकाए। अब उसकी जान में जान आयी।

इसके बाद दोनो एकांत में वार्ता के लिए एक अलग कमरे में आ बैठे। बातचीत शुरू हुई। कान्होजी ने गम्भीरता से सारी स्थिति सिद्धोजी के सामने रख दी। फिर बोला—नौसेना में नये जहाजों के निर्माण के लिए धन की आवश्यकता होगी। उसके लिए कम से कम दो करोड़ दीनार चाहिएं। क्या इसका प्रबन्ध छत्रपति से विशेष मंजूरी लेकर हो सकता है ? दूसरे यह कि सेना में लोगों की भर्ती के लिए स्वीकृति चाहिए। उनमें अनुशासन होना नितान्त जरूरी है जिसके लिए विशेष राजाज्ञा जारी होनी चाहिए।

सिद्धोजी ने थोड़ी देर गम्भीरता से सोचा फिर उदास स्वर में कह उठे—'बेटे, तुमने जो सुझाव दिया मैं उससे पूरी तरह सहमत हूं। लेकिन अभी हमारे राज्य की हालत ऐसी नहीं कि नौसेना की शक्ति बढ़ाने या उसे सगठित करने के लिए धन खर्च कर सकें। इस समय तो मराठा राज्य भारी सकट मे गुजर रहा है। गद्दी के उत्तराधिकारो के लिए झगड़े उठ खड़े हुए है। सरदारो में राजनीति के दांव-पेंच रग ला रहे हैं। लेकिन हमें इनसे कुछ नही करना। कोई गद्दी पर आए, कोई जाए। हमें उसीका साथ देना है जो शासक बने। मुझे अपार दुःख है कि मैं छत्रपति की ओर से कोई सहायता नहीं सकता।'

'और अगर मैं अपने बल पर इस कार्य को सम्पन्न करने बीड़ा उठाऊं तो आपको कोई ऐतराज तो न होगा ? मैं

का हित करना चाहता हूं वापू ! उसकी शक्ति को सुदृढ़ देखने के लिए वचनवद्ध हूं। मैं मराठों के सुदृढ़ जहाजी वेड़े पर शान से फहराता हुआ भगवा ध्वज देखने के लिए आकुल हूं।

'मराठा राज्य का हित चाहने वाले मेरे वेटे को अनेक वधाइयाँ। मुझे इससे अधिक और गौरव क्या प्राप्त होगा ? लेकिन कान्होजी, तुम धन का प्रवन्ध करोगे कैसे ? इतना धन एकत्र करना हँसी-खेल नहीं है पुत्र !' सेनापति ने कौतूहल से पूछा।

मेरे अधीन कुछ जहाज और चुने हुए योग्य एवम् चतुर सौ सैनिक दे दीजिए। मैं समुद्र में आने-जाने वाले विदेशी तथा जंजीरा के सिद्दी जहाजों पर धावे वोलकर उन्हें लूटूँगा। उनके जहाज पकड़ कर अपने अधिकार में कर लूँगा तथा उन पर सवार लोगों को मार डालूँगा। उनमें से एक भी जान वचाकर नहीं भाग सकेगा। इस प्रकार हर लुटे हुए जहाज की वहाँ के राजा को न खवर मिलेगी और न हम परेशान होंगे।

'अगर तुम इस नीति को अपनाते हो तो मुझे कोई आपत्ति नहीं। इसमें एक तरह से हमें लाभ ही होगा। एक तो हमारी नौ-सेना के जहाजों में वृद्धि होगी। दूसरे तुम्हारे हाथ वेशुमार धन लगेगा जिसके वल पर तुम जो चाहो कर सकते हो। उनके एक-एक कर सब जहाज लुट जाने से उनकी नौ सैनिक शक्ति को भारी आघात पहुंचेगा। लेकिन इस वात का ध्यान रहे कि कोई ऐसी नौवत न आए कि छत्रपति शाहू को किसी प्रकार की कोई शिकायत मिले और उन्हें नीचा देखना पड़े या हमारी नौसेना को किसी के साथ युद्ध के लिए विवश हो जाना पड़े।' सिद्धोजी ने वड़ी सतर्कता और गम्भीरता से कहा।

इस वात को सुनकर कान्होजी फूला न समाया। उसके मन को अपार संतोष तथा वल मिला। उसकी धमनियों में जोश, उत्साह

तथा कुछ कर गुजरने की लालसा जोर मारने लगी। हाथ जोड़कर वह बोले—बापू, आप निश्चिन्त रहें। मैं अपने घावों से दुश्मन को जर्जर और परेशान कर छोड़ूँगा लेकिन कोई ऐसी नौबत नहीं आने दी जाएगी जिससे आपकी प्रतिष्ठा को किंचित भी धक्का लगे।

'बस तो फिर ठीक है। मैं आज से अपने सारे अधिकार तुम्हें देता हूं। काम तुम करोगे पर नाम मेरा रहेगा। तुम विश्वास और परिश्रम से अपने ध्येय की प्राप्ति में लग जाओ।

'जी बहुत अच्छा!' कान्होजी ने चरण छूकर कहा और चला गया। अब वह बिना ताज का बादशाह हो गया था।

—oo—

सात

शुरूआत

अगले दिन सुबह होते ही सिद्धाजी गुज्जर ने फरमान निकाला। फरमान में कान्होजी आंग्रे को यह अधिकार दिया गया कि वह अपने अनुभव के आधार पर नये सैनिकों की भर्ती कर सकता है। नये नौ सेना बेड़े को गठित कर समुद्री सीमा की रक्षा करे। वर्तमान नौसेना के सैनिकों को अनुशासन में रहने के लिये बाध्य करे। इस कार्य एवम् प्रबन्ध के लिये मराठा शासन उसे योग्य सहायता एवम् आर्थिक मदद देगा।

इस फरमान को पढ़ते ही कान्होजी को जैसे नया जीवन मिल गया। उसे कुछ कर दिखाने का सुन्दर अवसर मिल गया। उस दिन से उसके जीवन में नया कर्तृत्व पैदा हो गया। उसमें नई आकांक्षा जागी। अब वह अपने को इस योग्य समझने लगा कि वह मराठा साम्राज्य की कुछ सेवा कर सकता है। वह इसी धुन में रहने लगा।

सबसे पहले उसने छावनियों का निरीक्षण किया। प्रत्येक छावनी के अफसर से मुलाकात की। उन्हें आदेश दिया कि अपने-अपने अधिकार में रहने वाले सैनिकों में से चुन कर योग्य एवम् कर्तव्यपरायण

सैनिक छांटे और उन्हें वेतन रुपये बढ़ा दे। चुने हुये दस सैनिकों के लिये एक प्रशिक्षण-केन्द्र भी खोला गया जहां उन्हें गुरिल्ला युद्ध अर्थात् छापामार युद्ध की शिक्षा दी जाने लगी। यह प्रशिक्षण छः मास का रखा गया।

इसके अलावा कान्होजी ने प्रत्येक छावनी में जाकर मराठा सैनिकों की परेड़ में सलामी ली। उन्हें खाने-पीने, वर्दी, जूते तथा शस्त्रों साज-सवार के लिये कड़े आदेश जारी किये और इन आदेशों का पालन न करने वालों को कठोर दंड देने की व्यवस्था की। सैनिकों की सभाओं में भाषण देकर अनुशासन, ईमानदारी, परिश्रम तथा देश-प्रेम का महत्त्व बताया। इन बातों का विशेष ध्यान रखने की सलाह दी। वह जहां भी जाता सैनिकों की वर्दी तथा उनके स्वास्थ्य और सेहत की जाच करता। उनके दुख-तकलीफों को पूछता। उन्हें दूर करने में सहायता देता। इस प्रकार लगभग पांच लाख रुपये उसने खजाने से निकलवाकर जरूरतमंद सैनिकों में बांटे।

इन कार्यों से कान्होजो का सैनिकों पर बहुत प्रभाव पड़ा। वे अब अधिक निश्चिन्त होकर अपने कतव्य पर ध्यान देते। उनका मन अपने काम और सेवा में लगने लगा। साथ ही उनके मन में कान्होजी के प्रति प्रेम तथा पूज्य भावना पैदा हुई। वे उसके आदेशों का पालन करने के लिये जी जान से तैयार हो गये।

एक दिन सुबह-सुबह कान्होजी वम्बई के तटवर्ती किले में पहुंचे। वहां नौ सैनिकों की छावनी थी। उसमें लगभग बारह सौ सैनिक थे। कान्होजी ने किसी से बात नहीं की। वह एकदम सीधा सैनिक अफसर के खेमें में दाखिल हुआ। वहां देखा तो दंग रह गया। सूरज उदय हुए काफी देर हो गई थी। सैनिक सुबह की कवायद करने के लिये मैदान में एकत्र हो रहे थे। लेकिन अफसर अभी तक चारपाई पर लेटा खर्राटे भर रहा था।

कान्होजी की स्मरण-शक्ति इतनी तेज थी कि उसे सभी प्रमुख मराठा नौ सेना के अफसरों के नाम याद थे। उसने जोर से दो-तीन बार पुकारा-हीरोजी, हीरोजी…हीरोजी…पर हीरोजी कैसे सुन पाता वह तो मीठी-गाढी नींद सो रहा था। यह देख कान्होजी को ताव आया। उनकी नसों में गरम खून दौड़ने लगा। उन्होंने आगे कुछ न कहा। पास ही तिपाई पर जल से भरी गागर रखी थी। कान्होजी ने एक हाथ से सहज ही में खपर उठायी और हीरोजी पर उंड़ेल दी।

हीरोजी हड़बड़ा कर गालियाँ देते हुये उठा। क्रोध से उसके हाथ तलवार की मुट्ठी पर कस गये। लेकिन आँख खोल कर सामने देखा तो उसकी घिग्घी बंध गई। तपाक से उठ कर फौजी सलाम करते हुये विस्मय से बुदबुदाया—'राव साहब आप और इस समय यहाँ? क्या आज्ञा है मेरे लिये! आदेश भिजवा देते तो यह सेवक स्वर्ण दुर्ग आकर सेवा में हाजिर हो जाता।'

'मैं सैनिकों का निरीक्षण करने यहाँ आया हूं। लेकिन सैनिक की बात तो दूर यहाँ बड़े अधिकारी तक को अपने कर्त्तव्य से विमुख देख रहा हूं। जहाँ खुद अफसर अपना कर्त्तव्य नहीं पाल सके वहाँ साधारण सैनिक से क्या उम्मीद की जा सकती है? मुझे आप-जैसे वरिष्ठ अधिकारी से ऐसी अपेक्षा नहीं थी। कान्होजी गुस्से से आग उगलने लगे। बोले– नौ सेना में आपको कितने साल हो गये?'

'यही कोई आठ-नौ वर्ष!' भय से काँपते हुये हीरोजी बुदबुदाया और बोला—इस बार माफ कर दीजिये। अब आगे ऐसी भूल नहीं होगी। क्षमा कर दें हुजूर।'

लेकिन कान्होजी का क्रोध ठंडा नहीं हुआ। वह कह उठे, 'क्या आठ साल से ऐसी ही सेवा करते आ रहे है आप? आपने सोचा होगा इस दुर्गम किले में निरीक्षण के लिए सुबह-सुबह कौन अफसर आ

मरेगा। इसलिये आप मनमाने तौर पर दिन गुजार कर चैन की वसी बजा रहे हैं। क्या आप नही जानते कि सैनिक का जीवन कितना सचेत और फुर्तीवान होता है। मान लो अगर इस समय आप को बेखबर देखकर दुश्मन किले पर हमला बोल देता और खेमे में घुस कर खड़ा हो जाता तो बताइये आप कैसे उसका मुकाबला कर पाते ? क्या खाकर उससे लड़ते ?'

हीरोजी इस पर चुप रहा। भय से उसका गला सूख रहा था। गिड़गिड़ा कर बोला—'मुझसे भूल हुई हुजूर। मैं अपनी गलती स्वीकार करता हूं। कृपया मुझे मुआफ कर दीजिये। अब कभी ऐसी गलती नहीं होगी। मै वचन देता हूं।'

'आप तो सेना में एकदम अफसर बन कर आये थे या साधारण सैनिक भर्ती हुए थे ?,

'मैं सीधा अफसर बनकर ही आया था। छत्रपति शाहू महाराज की लाड़ली रानी येसुबाई का मैं रिश्तेदार हूं। उन्ही ने महाराज से कह कर मुझे नौसेना का अफसर बनाकर भेजा था।'

'अच्छा तो आप वसीले से आये है। आप में गुण नही बोलते वसीला बोलता है।' कान्होजी ने क्रोध से कहा और बोले, 'आज तक छत्रपति शाहू का सारा जीवन दुश्मन से युद्ध करते हुए बीता है। आपने कितनी बार लड़ाई में उनका साथ दिया है ? मतलब आज तक आपने कोई लड़ाई लड़ी हैं ?'

हीरोजी ने कांपते स्वर मे कहा—'जी नही, मुझे लड़ने का अभ्यास नहीं है न, इसलिये।'

'तो आपके लिये यह नौकरी भी उपयुक्त नही है। आप छत्रपति के दरबार में रहे तो अधिक अच्छा होगा। वहाँ हाँ मे हाँ मिलाने के अलावा और कोई काम नहीं रहा। मैं अभी महारानी येसुबाई को पत्र लिख कर सूचित कर देता हूं कि हीरोजी महाराज के द

में आ रहे हैं उनके लिये केवल वहाँ ही उपयुक्त जगह है। सैनिक का जीवन तलवार की धार होता है, चारपाई तथा लोढ़ तकिये नहीं। आप आज ही यहाँ से सतारा के लिये प्रस्थान कर दें।'

बेचारा नौसेना अफसर हीरोजी मन मसोस कर रह गया। उसे काटो तो खून नहीं था। पर अब कोई उपाय नहीं था। वह उसी दिन वहाँ से बोरीबिस्तर- गोल कर गया।

इसके बाद कान्होजी बाहर आया। मैदान में सैनिक जमा होकर कवायद कर रहे थे। उनमें से कई सैनिक केवल लंगोट और बनियान पहने हुऐ थे। केवल बहुत थोड़े-से सैनिकों के पास वर्दी थी। इनमें से भी बीस-तीस सैनिकों की ही वर्दी स्वच्छ साफ-सुथरी थी। बाकी सबों की वर्दी फटी-पुरानी या गंदी थी। कान्होजी ने वहाँ तैनात एक अधिकारी से पूछा तो उसने बताया—यहाँ के सैनिकों ने आज तक कोई लड़ाई नहीं लड़ी। न ही वर्दी का किसी ने ख्याल किया। हीरोजी से अनेक बार शिकायतें कीं तो उनका सदा एक ही उत्तर रहता था, 'सतारा शासन से वर्दी के लिये धन ही नहीं मिल रहा।' इस बारे में मैं अधिक कुछ नहीं कह सकता।

'लेकिन कागजों में लिखा है कि मराठा शासन इस किले में रहने वाले सैनिकों की वर्दी के लिये हर साल दो लाख रुपया खर्च करता है। वह भी पता नहीं कहाँ गया?' कान्होजो सोच में पड़कर बोले।

'अभी तक ऐसा ही चलता है। अब आप आ गये हैं सो सब सही हो जायेगा। यदि उचित समझें तो यहाँ भी एक प्रशिक्षण-केन्द्र स्थापित करें जिससे सैनिकों को युद्ध की शिक्षा दी जाये। यहाँ के सैनिक बड़े सरल स्वभाव के परिश्रमी तथा ईमानदार हैं। उन्हें प्रशिक्षण देने पर वे आपकी ओर से कंधे से कंधा लगा कर दुश्मनों से लोहा ले सकते हैं।' अधिकारी ने कहा।

'ठीक है, मैं इसी मास सारा प्रबन्ध कर दूंगा। लेकिन आप और आपके सैनिक मराठा शासन के प्रति वफादार रहें, यह ध्यान रखें।

'आज तक इस दुर्ग के सैनिकों को युद्ध में उतरने का अवसर नहीं मिला है। सो अब मैं इन्हें सेवा का पूरा मौका दूंगा। सैनिक हर मोहिम में साथ रहेंगे और अपनी वीरता तथा कुशलता से शत्रु पर ऐसी विजय पाते रहेंगे कि विदेशी भी दांतों तले उंगली दबा कर उनकी प्रशंसा करेंगे।'

इस प्रकार दो मास के भीतर ही कान्होजी ने नौसेना के सैनिकों को सुसंगठित किया। उनको कुशल बनाया और वह किसी भी दुश्मन की नौसेना का मुकाबला करने के लिए तैयार हो गई। नई वर्दी में सैनिक चुस्त और रौबदार दिखाई देने लगे। उनमें अनुशासन आ गया। फुर्ती एवम् एकता आ गई। वे दस-दस बीस-बीस की टोलियाँ बनाकर जहाजों में बैठ दूर-दूर तक समुद्र की सुरक्षा की टोह लेने लगे।

कान्होजी भी चुने हुये सैनिकों के साथ गल्लिवत में बैठकर सागर पर विचरने लगे। इस जहाज में लोहे की दूर-मारक हल्की तोपें थी और बहुत सा गोला-बारूद था। कान्होजी के साथ जो सैनिक थे वे प्रशिक्षण-केन्द्र में शिक्षा प्राप्त अव्वल दर्जे के योग्य कुशलता-प्राप्त अनुभवी लोग थे।

बढ़ते-बढ़ते वे काफी दूर निकल गये। सूरज उगे बहुत देर हो गई थी। अब उसकी किरणें उजली होने पर उसमें तेज गर्मी बढ़ती जा रही थी। सागर की चंचल लहरों पर पड़ने से उनकी चकाचौंध चारों ओर दूर-दूर तक फैली पड़ती थी। अब जहाज जंजीरा से चालीस मील पूर्व में पहुंच गया था। कान्होजी विचारों में खोया हुआ था। तभी सहसा उनके मित्र एवम् सैनिक साथी बालाजी विश्वनाथ ने कंधा पकड़ कर धीरे से कहा—'कान्होजी, देखो सामने क्या है ? सम्भल जाओ।'

कान्होजी ने चौंक कर देखा और कहा—'वह तो जहाज

मालूम होता है पुर्तगाली है। ऊपर पुर्तगाली ध्वज लहरा रहा है। आओ उसी ओर चलें। देखते हैं उस पर क्या लदा है। थोड़ी ही देर में पता लगा कि उसमें शराब के ड्रम और सोने की ईंटें लदी हैं। इन ईंटों की कीमत दस लाख रुपये से ऊपर होगी।

यह खबर लगते ही कान्होजी ने अपने सैनिकों को सतर्क किया और आदेश दिया कि दो सैनिकों को छोड़ शेष सभी पुर्तगाली जहाज पर तुरन्त चुपके से चढ़ कर वहाँ के प्रत्येक सैनिक पर हमला कर दें और उन्हें मौत के घाट उतार दें। काम यह इतना फुर्ती से होना चाहिए कि जहाज के अफसर को इतना मौका भी न मिले कि वह अपने सैनिकों को कुछ आदेश दे सके। तुम सब धावा बोल कर जहाज के सैनिकों को सम्भालो और मैं स्वयं जहाज के अफसर को देखता हूं कि उसमें कितना दम है। आज उसे खिला-खिला कर यमलोक पहुंचाऊँगा। बस अब फुर्ती करो। आदेश का पालन हो।

आदेश मिलते ही सभी मराठा सैनिक तैयार हो गये। मराठों का गल्लिवत पुर्तगाली जहाज के निकट तेजी से पहुंचने लगा। पास आते ही मराठा सैनिक विदेशी जहाज पर फुर्ती से दबे पाँव चढ़ गये। वहाँ के सैनिकों को किसी भी खतरे की आशंका न थी। इसलिये वे बेखबर थे और शराब के नशे में धुत थे। कान्होजी के सैनिकों ने उन्हें धर-दबोचा। जब तक उनका नशा उतरा मराठों की तलवार ने बीस पुर्तगाली सैनिकों के सिर धड़ से अलग कर दिये।

और कुछ ही क्षणों में सैनिकों का नशा एकदम हवा हो गया। उनमें भगदड़ मच गई। बचाओ···बचाओ···धोखा···बचाओ की गुहार लगाते हुये वे 'चार्ल्स' नामक मालवाहक जहाज पर भाग-दौड़ करने लगे। कान्होजी की तलवार बिजली की तरह लपलपा रही थी। वह तेजी से अफसर के कक्ष को ढूंढता हुआ जा रहा था। मार्ग में मिलने वाला कोई भी पुर्तगाली सैनिक न बचता और कट कर नीचे लुढ़क जाता।

सैनिकों की भगदड़ से अफसर की नींद खुल गई। वह कमरे से बाहर आने के लिये उठा ही था तभी कान्होजी ने कमरे में कदम रखे। उनके हाथ में खून से सनी नगी तलवार थी। एक लम्बे-तड़गे, नुकीली मूंछों वाले बलवान व्यक्ति को सामने देखकर उसे पसीना छूटा। लड़खड़ाती आवाज में वह बोला—तुम कौन हाय ?

'मैं कान्होजी आंग्रे हूं। मराठों की नौसेना का एक अधिकारी। और आप कौन हैं ?'

'मैं इस चार्ल्स जहाज का अधिकारी हूं। मेरा नाम तावोरा है। लेकिन आप यहाँ किसलिये आये हैं ? आपको मेरे कमरे में आने की इजाजत किसने दी ? मुझसे आपको क्या काम है ?'

'मैं इजाजत लेकर अन्दर घुसना नही जानता। मैं किसी से इजाजत नही मांगता। मुझे इजाजत लेने की आवश्यकता भी नहीं पड़ती। तलवार की नोक पर हर जगह के दरवाजे खुले मिलते हैं। मैंने इजाजत लेना नहीं, देना सीखा है। मुझे आपसे केवल एक छोटा-सा काम है' कह कर कान्होजी व्यगपूर्वक खूब जोर से हसा और बोला—मैं इस तलवार से आपको स्वर्ग पहुचाना चाहता हू। आपका क्या खयाल है ? इतना विश्वास दिला सकता हूं कि स्वर्ग जाने में आपको तनिक भी तकलीफ नही होगी। गर्दन से तलवार छूने पर आपको यह पता तक नही चलेगा कि कुछ हुआ है और आप ऊपर पहुंचे होंगे।'

यह सुन तावोरा का दिल भय से धड़कने लगा। उसके मन में क्रोध भडकने लगा। वह कडक उठा—'यह क्या असभ्यता है ? ठहरो मैं अभी तुम्हें मजा चखाता हू।' और यह कह कर उसने जोर-जोर से पुकारना शुरू किया—'मिचेल···मिचेल···मिचेल··!'

कान्होजी हस कर बोला—किसे बुला रहे हो तावोरा ! तुम समझते हो कि वह आकर तुम्हें मुक्त कर सकेगा ? सो

आयेगा कोई भी नहीं। जहाज का एक-एक सैनिक चुन-चुनकर काट दिया गया है। सागर की लहरें उनके मुंडों से खेल रही हैं। अब तुम भी तैयार हो जाओ। बोलो कैसे युद्ध करना चाहते हो। तलवार से या कुश्ती से ?

तावोरा काँप उठा, बोला—कुश्ती और तुमसे ! शैतान से मेरा क्या मुकाबला ! तुम एक राक्षस से कम नहीं हो। और उसने दीवार पर टंगी तलवार निकाली, उसे चूम कर ईसा मसीह को याद किया और लड़ने के लिये तैयार हो उठा।

कान्होजी ने उसे जी भर कर तलवार चलाने दी। उसके हर वार को तलवार पर झेल कर लौटाता गया। लड़ने में उसे कोई कठिनाई नहीं हो रही थी। जब वह तलवार चलाते हुये थक गया तो कान्होजी ने तलवार के एक जबरदस्त वार से तावोरा की तलवार के दो टुकड़े कर डाले और स्वयं उसने तलवार एक ओर रखकर उसे पकड़ कमरे से बाहर घसीट लाया। फिर हाथा-पाई करने लगा।

कान्होजी ने कई बार उसे उठा डैक पर पटका। मुक्के बरसाये। तावोरा के शरीर का जोड़-जोड़ दर्द करने लगा। उसकी हालत खस्ता हो गई। कुछ ही क्षणों में उसके प्राण-पखेरू उड़ गये। उसका सारा शरीर खून से लथपथ हो रहा था। कान्होजी ने उसकी लाश अपने हाथ से उठाकर सागर की एक ऊँची उठती भयंकर लहर के हवाले कर दी।

इसके बाद चार्ल्स जहाज पर से पुर्तगाली झंडा हटा कर मराठों का भगवा झंडा लहरा दिया गया। अब वह मराठा दुर्ग की ओर बढ़ने लगा। कान्होजी की यह पहली विजय थी। इस सफलता से उसका विश्वास दुगुना हो गया। वह अगले कार्यक्रम की रूप-रेखा तैयार करने लगा।

—००—

आठ

करतब

पहली सफलता के बाद कान्होजी बाज की तरह खुल कर सामने आया। दुश्मन के अधिक-से-अधिक जहाजों पर छापा मार कर उन्हें लूटना और उन पर अधिकार कर मराठा नौसेना में मिलाना उसका मुख्य लक्ष्य रहा। उसने पुर्तगाली, फ्रेंच, डच तथा अंग्रेजी जहाजों को जी भर कर लूटा। किसी पर दया नहीं दिखाई। इन हमलों में जल्दबाजी तथा पूर्ण अनुभव न होने के कारण मराठों का थोड़ा नुकसान भी हुआ। मुठभेड़ों में अनेक मराठा सैनिक मारे गये। साथ ही अनेक विदेशी सैनिक जान बचाकर भागने में सफल हुये। उन्होंने अपनी छावनियों में लौटकर कान्होजी की भयंकर शक्ति और उसके उद्देश्यों की सूचना दी।

चार मास के भीतर ही कान्होजी ने आठ पुर्तगाली जहाज जिनमें तीन मालवाहक और पांच युद्ध पोत थे लूट लिये। चार फ्रेंच युद्ध-पोत, पांच डच मालवाही जहाज झटक लिये। आठ अंग्रेजी जहाज, जिनमें पांच युद्ध-पोत, एक मालवाहक और दो छोटी नौकायें थी लूट कर अपने अधीन कर लिये। इस लूट में उसके हाथ ...

रुपये, तांबे की पन्द्रह और लोहे की बीस तोपें, बड़ी मात्रा में गोला-बारूद तथा अनेक बन्दूकें लगीं।

इस प्राप्त सामान से कान्होजी का हौसला खुल गया। विदेशी कम्पनियों को इन युद्ध पोतों के लुट जाने से भारी नुकसान हुआ। जहाजों पर हुई लड़ाइयों में इस कुशल सेना नायक का युद्ध-कौशल देख विदेशी अफसरों ने दांतों तले उंगली दबा ली। वे उसके नाम से काँपने लगे। अब उन्हें सपने में कान्होजी का राक्षसीबल सताने लगा। वे कहते 'कान्होजी सेनानायक नहीं अपितु मनुष्य वेश में कोई भयंकर राक्षस है जिसके चंगुल में फंस जाने पर जिंदा निकलना असम्भव है। युद्ध में उससे लोहा लेना मौत को असमय ही न्यौता देना है। तलवार की पकड़ उसकी इतनी कसी हुई और मजबूत होती है कि वह युद्ध करते हुये अन्य तलवार से टकराकर टूट भले ही जाये पर वह हाथ से गिरेगी नहीं। सचमुच उसके शरीर में इतनी ताकत है कि उससे लड़ना साधारण काम नहीं। जहाँ भी वह खड़ा हो जाता है पहाड़ की तरह अडिग लगता है।'

एक फ्रांसीसी जहाज पर हुई लड़ाई में अकेले कान्होजी ने अड़तालिस सैनिक तलवार के घाट उतारे। जब वह ताव में होता तो एक हाथ में तलवार आड़ी कर लेता और दूसरे हाथ से सैनिक को ऊपर उठाकर धार पर इतनी जोर से पटक देता कि कटकर दो टुकड़े हो जाता और क्षणों के लिये उसके कटे अंग हिलडुलकर शांत पड़ जाते।

इस प्रकार सैनिकों में कान्होजी का आतंक छा गया और दबदबा इतना बढ़ा कि वे उसके सामने आने से कतराने लगे। कान्होजी को देखते ही उनकी नाड़ियाँ ढीली पड़ जातीं और पसीना छूटने लगता। जब वह तलवार घुमाने लगता तब ऐसा लगता मानों बिजली लपलपा रही हो और कड़क-कड़क कर टूट पड़ना चाहती हो। ऐसे

समय उसकी नीली कजी आँखों में भयंकर क्रोध छा जाता और उसका लाल रंग उसकी आँखों में उमड़ने लगता।

सुवर्ण दुर्ग के कमांडर सिद्धोजी गुज्जर कान्होजी की महत्त्वाकांक्षा, लगन तथा वीरता एवम् चतुराई-भरे कामों से इतने प्रभावित हुये कि उन्होंने अपने इस लाडले दत्तक पुत्र के अधिकार वर्ष भर के लिये और बढ़ा दिये। उन्होंने अनुभव किया कि कान्होजी बहुत चतुर, परिश्रमी तथा ईमानदार युवक है। वह हर काम खूब सोच-विचार कर करता है। उसमें सुनियोजित ढंग से युद्ध करने की अपूर्व क्षमता है। इन गुणों के कारण सिद्धोजी इस होनहार युवक पर विशेष कृपा रखने लगे।

कान्होजी ने अपने सरल, मृदु एवम् दृढ़ प्रतिज्ञ स्वभाव के कारण दुर्ग के सभी अधिकारियों का स्नेह प्राप्त किया। वे उस पर अटूट विश्वास रखने लगे और उसकी कृपा पाने के लिये तरसने लगे। कान्होजी ने इन सभी का विश्वास प्राप्त कर लिया, इनमें से कई एक तो कान्होजी के भक्त ही हो गये। अपने चुने हुए सैनिकों तथा साथियों के साथ उसने पुर्तगाली, फ्रांसीसी, डच और ब्रिटिश कंपनियों की छावनियों पर छापामार हमले जारी रखे। उनके क्षेत्र में घुसपैठ शुरू कर दी। लूटपाट में धन के अतिरिक्त जो कुछ माल-असबाब हाथ लगता था वह सभी साथियों में बाँट देता था। एक-दो वर्ष के बाद इस प्रकार के छिटपुट आक्रमणों ने स्थायी रूप ले लिया।

पहले विदेशी, मराठा नौसेना को कुछ नहीं समझते थे। उनकी नजर में मराठों की नौसेना-शक्ति बिल्कुल नहीं के बराबर थी। मराठों के जहाज हल्के तथा युद्ध की दृष्टि से एकदम कमजोर तथा असुविधाजनक थे। दूसरे, मराठा सैनिकों में युद्ध-कला की भारी कमी थी। साधारण जन सेवा में भर्ती किये जाते थे जो युद्ध के समय अभ्यास न होने के कारण मामूली मुठभेड़ में ही मारे जाते या भाग

निकलते। उनमें एकता न थी। आपसी फूट उनको खोखला किये दे रही थी।

लेकिन कान्होजी ने सारी सत्ता अपने हाथ में लेकर अपने अथक परिश्रम तथा सुनियोजित कार्यक्रमों से सेना में एकता तथा आपसी प्रेम की अटूट भावना पैदा कर सैनिकों को ताकतवर बनाया। उनमें स्वदेश-प्रेम की भावना कूट-कूट कर भर दी। विदेशी जहाजों को लूट कर जो अपार धन प्राप्त किया उससे युद्ध के समुद्री जहाजों का निर्माण कराया। इस धन से उसने बासठ जंगी जहाज बनवाये। प्रत्येक जहाज लड़ाई की दृष्टि से उपयोगी एवं सुविधाओं से पूर्ण बनाया गया। ये जहाज भयंकर समुद्री तूफान में भी अडिग एवं पूर्ण सुरक्षा में चल सकते थे। इन पर एक-एक जहाज में बीस-बीस हल्की और दूर तक मार करने वाली तोपें लगी थीं। इस प्रकार कान्होजी ने मराठों के समुद्री बेड़े को एक नया जीवन प्रदान किया। सेना को संगठित बनाया। अनेक नये तरह के युद्ध के हथियार बनवाये। इस काम में उसने एक पुर्तगाली तथा एक फ्रांसीसी नौसेना के अधिकारी की सहायता ली। इन दोनों अधिकारियों को एक जबरदस्त मुठभेड़ में कान्होजी ने घायल कर दिया था। उनकी एक-एक टांग कट गई थी। कान्होजी उन्हें पकड़ कर अपने यहाँ ले आया था। वहाँ उनका इलाज हुआ। और दोनों भले-चंगे हो गये। कान्होजी ने उन दोनों को नहीं छोड़ा। इसका कारण यह था कि कान्होजी को पता चल गया कि ये दोनों व्यक्ति इंजीनियर हैं और युद्ध के हथियार बनाते हैं। फ्रांसीसी अधिकारी लोहे तथा ताँबे की तोपें ढालने में भी कुशल था। पुर्तगाली को गोला-बारूद तैयार करना आता था।

कान्होजी आंग्रे ने दोनों अधिकारियों को अपने यहाँ नौकर रखा। उन्हें पाँच सौ रुपया माहवार देना कबूल किया। मराठा छावनी में उनके साथ अच्छा वर्ताव किया गया। उन्हें सैनिकों तथा अफसरों से उचित सम्मान मिला। अपंग होने के कारण उन्होंने अपनी सेना में

वापस लौटना ठीक न समझा और वे कान्होजी की सेवा में रहने के लिये तैयार हो गये।

युवक कान्होजी ने अपनी देख-रेख में दो बड़े कारखाने स्थापित किये। एक तोपें ढालने का कारखाना और दूसरा गोला-बारूद बनाने का कारखाना। ये दोनों कारखाने समुद्र के किनारे सुवर्ण दुर्ग की बस्ती में स्थापित किये गये। दोनों विदेशी अधिकारी अलग-अलग कारखाने के उत्पादन अफसर नियुक्त किये। इन कारखानों में पचास-पचास लोगों को रोजगार मिला। अफसरों की देखभाल में कारखाने में उत्पादन का काम तेजी से प्रारम्भ हुआ। हल्की, सुन्दर पर मजबूत तोपें ढाली जाने लगी। उनके लिये गोला-बारूद दूसरे कारखाने में बड़ी मुस्तैदी से तैयार किया जाने लगा।

इस व्यवस्था को पूरा करने के बाद कान्होजी ने अपना सारा ध्यान जजीरा की ओर लगाया। जंजीरा का सिद्दी मराठों का सबसे प्रबल और जानी दुश्मन था। उसकी समुद्री सेना और जहाजी बेड़ा बहुत बड़ा था। फिर मराठों से लोहा लेन के लिये उसे समय-समय पर मुगलों को सहायता मिलती रहती थी। इस प्रकार दोनों मिलकर मराठों को नौसैनिक ताकत को तहस-नहस करने पर तुले हुए थे।

प्रारम्भ के आठ महीनों में मराठों व सिद्दी के बीच अनेक मुठभेड़ हुई जिनमें लूट का बहुत सारा धन कान्होजी के हाथ लगा। लेकिन मुकाबले में अनेक मराठा सैनिक मारे गये। इनमें आठ मराठा गल्लीबत नष्ट हुए और दो मालवाहक नौकाएं डूब गयी। लेकिन इस नुकसान के बावजूद कान्होजी को अनेक अनमोल अनुभव प्राप्त हुये। इन अनुभवों के आधार पर उसने हमलों का ढग बदला और लड़ाई के तौर-तरीकों में परिवर्तन किये।

इसके बाद कान्होजी ने दौलतखान को दिया हुआ वचन पूरे

किया। उसने दौलतखान को नौ सेना का अधिकारी नियुक्त किया। हमलों में अपने साथ उसे रखने का फैसला हुआ। दौलतखान ने भी मराठा नौ सेना के प्रति अन्त तक वफादार रहने का वचन दिया। उसने सिद्दी के जहाजी वेड़े के वारे में वहुत सारी वातें वतायीं। सिपाहियों के लड़ने का तरीका समझाया। वह वोला—कुछ चुने हुए सैनिक मुझे सौंप दो। मैं अपने ढग से सैनिकों को प्रशिक्षण दूंगा। उन्हें सिद्दी के खिलाफ लड़ने के लिये तैयार करूंगा। मैं उनका भूर्ता वनाकर रख दूंगा।

'ठीक है, मैं तुम्हारी भावना और सेवा की सराहना करता हूं। तुम इसी तरह हमारा साथ देते रहोगे, यह मैं विश्वास करता हूं। तुम्हारे आदेश के अनुसार सुवर्ण दुर्ग में एक प्रशिक्षण-शिविर स्थापित कर देता हूं। तम सैनिकों की सलामी लेकर तथा प्रत्येक से वातचीत कर मनचाहे सैनिक चुन लो और उन्हें शिविर में प्रशिक्षण देकर योग्य एवं कुशल वनाओ।

इतना कहकर कान्होजी चले गये और प्रशिक्षण-शिविर स्थापित करने के काम में लग गये। उसी दिन एक विशेष प्रशिक्षण-केन्द्र स्थापित किया गया। अगले दिन से दौलतखान ने दो सौ चुस्त सैनिक चुनकर उन्हें शिक्षा देनी प्रारम्भ की।

प्रशिक्षण की इस अवधि में कान्होजी ने छोटे-मोटे वारह हमले किये। सिद्दी की नावों तथा जहाजों को वड़ी वेरहमी से लूटा। लगभग चालीस सैनिकों को मार डाला। अन्य वन्दी सैनिकों को मुक्त करने के निमित्त तीस हजार स्वर्ण दीनार वसूल किये। लेकिन सिद्दी साधारण मनुष्य नहीं था। वह तो वड़ा घुटा हुआ राजनीतिज्ञ और अनुभवी सेना-अधिकारी था। वात ही वात में पलटने की उसमें आदत थी। वह परले सिरे का क्रूर तथा निर्दयी व्यक्ति था। उसने दिल्ली के मुगल सरदारों को वेवकूफ वनाकर अपने पैरो तले

रखा था। मुगल सम्राट उसकी चापलूसी में ही अपना हित समझता था। वह हर सप्ताह हजारों दीनारों तथा सैनिकों को उसे सहायता देता था। सिद्दी का ठाठ-बाट और शान खूब बढ़ी-चढ़ी थी।

कान्होजी से बदला लेने पर वह आमादा हो गया। उसने सेना को आदेश दिया कि वह छत्रपति शाहू के राज्य में घुसकर लूटमार करे और धन-माल लावे। सिद्दी का आदेश मिलते ही पाँच सौ सैनिक जंगी जहाजों में बैठ कर पेण की खाड़ी की ओर बढ़े। इन जहाजों पर काफी तोपें और गोला-बारूद लदा था। और सैनिक किसी भी मराठा जहाजी बेड़े का मुकाबला करने की हालत में थे।

सिद्दी के जंगी जहाज पेण की खाड़ी में पहुंचे तो रात पड़ चुकी थी। घना अंधेरा छाया हुआ था। वह अमावस की रात थी। चाँद छुट्टी लेकर किसी दूसरी दुनिया में जा बैठा था। उसकी याद में आकाश में अनगिनत तारे गुमसुम होकर धधक रहे थे। सागर के पानी में अजीब-सी हलचल थी। लहरें ऊँची उठ-उठ कर मानो तारों को ठंडा करने का बेतुका-सा प्रयत्न कर रही थीं। विचित्र खामोशी में खाड़ी का प्रांत डूबा हुआ था।

वह स्थिति सिद्दी सेना के लिये बिल्कुल उपयुक्त थी। अधिकारी ने खाड़ी में घुस कर लंगर डाल दिये। अब वह और रात गुजरने की प्रतीक्षा करने लगा। मराठा नौ सेना को इस धोखा-धड़ी का पता न चल सका। उनके गश्ती जहाज खाड़ी से बहुत दूर गश्त लगाने में मग्न थे। अंधेरा और अधिक गहरा होता जा रहा था। सूनापन और उमड रहा था।

जब आधी रात बीत चुकी तो सिद्दी के सैनिक खाडी के किनारे के ग्राम पेण में उतरे और गाँव में घुस पड़े। प्रत्येक के हाथ में उजाला करने के लिये एक-एक जलती हुई मशाल और दूसरे हाथ में

तलवार थी। कुछ सैनिकों के हाथों में बंदूकें थीं जो उन्होंने विदेशी सैनिकों से इनाम के रूप में प्राप्त की थीं।

पेण गाँव के अन्दर घुस कर सिद्दी के सैनिकों ने मार-काट मचा दी। वे बस्ती के हर मकान में घुसे और मर्दों तथा बच्चों को मौत के घाट उतार कर उनका माल-असबाव लूट मजदूरों को ढोने के लिये छोड़ आगे बढ़ते गये। देखते ही देखते गाँव में चारों ओर तहलका मच गया। हर घर से स्त्रियों और शिशुओं के रोने-चिल्लाने की आवाजें उठकर आकाश गुंजाने लगीं। पर सैनिकों ने किसी पर भी रहम नहीं किया। किसी को नहीं छोड़ा। एक ओर सैनिक हत्या और लूटमार करने में उलझे हुए थे तो दूसरी ओर मजदूर लुटे हुए माल को ढोकर खाड़ी के किनारे लंगर डाले मालवाहक जहाजों में लादने में व्यस्त थे।

गाँव की सीमा पर मराठों की सुरक्षा-चौकी थी। इस चौकी के शिविर में डेढ़ सौ सैनिक तैनात थे। लेकिन उस रात केवल सौ सैनिक ही थे। बाकी पचास सैनिक स्वर्ण दुर्ग के विशेष प्रशिक्षण-केन्द्र में शिक्षा प्राप्त करने पहुंचे थे। सिद्दी के सैनिकों ने इतनी सावधानी और मुस्तैदी से गाँव की सीमा में प्रवेश किया था कि कोई आहट नही, कोई हलचल नहीं, कोई हड़बड़ नहीं, बिल्कुल दबे पाँव कि मराठा सैनिकों को पता तक नहीं चल सका।

जब गाँव में भगदड़ मच गई और शोर-शराबा हुआ तो सैनिकों की नींद खुली। वे आँखें मलते हुए घबराकर शिविर से बाहर निकल गाँव में दौड़ पड़े। वहाँ मशालें जलाकर देखा तो सन्न रह गये। हर झोंपड़ी का मुख्य आधार कटा हुआ पड़ा था। झोंपड़ियाँ आग की लपटों में सुलग रहीं थीं। मराठा सैनिकों ने म्यानों से तलवारें निकाल लीं। कुछ उन्होंने बचे हुए युवकों को दीं और सिद्दी-पठानों का मुकाबला करने के लिये कहा और स्वयं उस ओर दलों में बंटकर दौड़ पड़े जिधर सिद्दी सैनिकों का जोर था। एक दल खाड़ी की

ओर बढ़ा। जहाजों में लुटा हुआ अनाज और माल-असबाब लादा जा रहा था।

देखते-देखते मराठा सैनिकों और सिद्दी के सैनिकों में मुठ-भेड होने लगी। दुश्मन के सिपाही गिनती में बहुत अधिक थे। वे मराठों पर पिल पड़े। जगह-जगह युद्ध होने लगा। कुछ ही देर में मराठा सैनिक एक-एक कर समाप्त होने लगे। पर उन्होंने पीठ नहीं दिखाई, जान हथेली पर लेकर लड़ते रहे। लगभग चार घंटे तक तलवारें खनकती रहीं। सिद्दी के सैनिकों ने सभी मराठा सैनिकों को मौत के घाट उतारा। जब पौ फटने का समय निकट आया तो वे जहाजों में बैठकर भाग खड़े हुये। अपने साथ वे चालीस मराठा सैनिकों के सिर काट कर भालों पर लटका ले गये। इन सिरों को उन्होंने सतारा में छत्रपति सम्भाजी के पास भेज दिया जिनके साथ एक फरमान में लिखा था—हमें छेड़ने की मराठा नौ सेना कोशिश न करे। यदि हमें तकलीफ पहुंचाई गई तो ऐसे ही परिणाम भुगतने होंगे।

छत्रपति सम्भाजी ने वे सिर देखे और उनके साथ रखा वह पत्र भी पढ़ा। उसे पढते ही उनके बदन में क्रोध की आग धधकने लगी। तुरन्त आपात बैठक बुलवाई। मराठा सरदारों में काफी विचार-विनिमय हुआ। सभी ने छत्रपति को सलाह दी कि मराठा नौ सेना को तुरन्त जजीरा पर आक्रमण करने का आदेश दिया जाये। साथ ही यह भी कहा गया कि इस मोहिम में कान्होजी आंग्रे को नेतृत्व दिया जाए। एक वह ही ऐसा व्यक्ति है जो सिद्दी को नाकों चने चबवा सकता है। कृपया उसे अपनी वीरता प्रदर्शित करने का अवसर दिया जाये। इन दिनों सिद्धोजी गुज्जर बीमार हैं। अब वे शासन का कार्य-भार संभालने में असमर्थ हैं। यदि कान्होजी जजीरा की मोहिम में सफल रहते हैं तो उन्हें ही मराठों की नौ सेना का सर्वोच्च सेनापति बना दिया जाये। हमें विश्वास है कि कान्होजी का कुशल नेतृत्व और योग्यता अवश्य रंग लाएगी और मराठों की शान बढ़ेगी।

कान्होजी की योग्यता, नेतृत्व की कुशलता एवं वीरोचित गुणों की चर्चा छत्रपति के कानों में अनेक वार पड़ चुकी थी। अपने ही साधनों के वल पर, शासन की एक भी मुद्रा खर्च किये वगैर, उसने मराठों की नौ सेना के वेड़े का जैसा विस्तार और सेना को जो संगठन प्रदान किया था उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा सिद्धोजी गुज्जर ने छत्रपति से अनेक वार की थी। उनसे कान्होजी को उच्च पद देने की सिफारिश भी वे कई वार कर चुके थे।

छत्रपति को कान्होजी की परीक्षा लेने का अच्छा अवसर मिल गया। उन्होंने तुरन्त सिद्धोजी गुज्जर को फरमान भेज कर आदेश दिया कि वह समय वरवाद किये वगैर जल्द से जल्द नौ सेना को सुसज्जित कर कान्होजी आंग्रे के कुशल नेतृत्व में जंजीरा पर भीषण आक्रमण कर दें। याद रहे किसी भी हालत में इस अभियान में मराठों को विजय मिलनी चाहिये। जंजीरा की ईंट से ईंट वजा कर रख दो और उसे विवश कर दो कि वह हमसे सुलह के लिये वाध्य हो जाये।

फरमान प्राप्त होते ही सिद्धोजी गुज्जर ने कान्होजी को वुला भेजा। वह तुरन्त आकर उपस्थित हुआ और वोला—प्रणाम वापू, कहिये मेरे लिये क्या आज्ञा है? मैं सिद्दी पर आक्रमण करने की योजना वना रहा था और आप से स्वीकृति लेने के लिये आ ही रहा था।

सिद्धोजी को सुनकर वहुत हर्ष हुआ और साथ ही अपने वेटे की योग्यता पर गर्व भी। वे हंस पड़े और वोले—'शावास वेटे, मुझे कौतुक है कि तुममें समय की पुकार का भी विशेष ज्ञान है। अभी-अभी तुम्हारे आने से कुछ देर पहले छत्रपति की ओर से आदेश-फरमान प्राप्त हुआ है। उसमें मराठों का नौ सेना को आदेश दिया गया है कि वह अविलम्व तैयारी कर जंजीरा पर आक्रमण कर दें। इस लिये अव तुम योजना को विस्तार से लेकर तैयारी कर लो। परसों

सुबह ही तुम्हारा विशाल जंगी जहाजों का बेड़ा जंजीरा की ओर कूच कर देना चाहिये ।'

कान्होजी सुनकर खुशी से उछल पड़ा । स्वाभिमान और गर्व से वह बोला—'जो आज्ञा सेनापति जी ! आप चिन्ता न करें । मैं इसी आदेश की प्रतीक्षा में था । परसों सुबह ही हमारी सेनाएं और जंगी जहाजी बेड़े जजीरा की ओर कूच कर देंगे । मैं अभी जाकर काम में जुट जाता हूं ।'

यह कह कर कान्होजी ने जल्दी से भोजन किया । उसने भर-पेट खाना खाया । तीन सेर गोश्त, बीस रोटियां, दो कटोरी घी, साग-सब्जी आदि उसके भोजन में शामिल थे । इसके बाद पान का बीड़ा मुंह में डालकर वह छावनी की ओर भागा—सेना के अधिकारियों को तैयार रहने का आदेश देने । वह दौलत खान से भी मिला और उसे छत्रपति का आदेश सुनाया । वह समाधान की सांस लेकर बोला—कान्होजी, आप फिक्र न करें । सब-कुछ ठीक हो जायेगा । आपको मैं वहां की ऐसी जानकारी दूंगा कि दुश्मन का हौसला पस्त हो जायेगा । सिद्दी की ताकत का शिराजा बिखरने में देर नहीं लगेगी । मैं उसकी ताकत के सारे भेद जानता हूं । दुश्मन हमारी कारंवाई देख कर सकते में आ जायेगा कि यह कैसे हो रहा है ?

कान्होजी संतोष प्रकट कर बोला—'ठीक है, मैं आपसे यही आशा करता हूं । परसों सुबह ठीक सूरज निकलने के साथ ही हमारा विशाल नौ सैनिक बेड़ा यहां से कूच कर देना चाहिये ।'

दौलत खान से भेंट कर कान्होजी ने अन्य सैनिक अफसरों से मुलाकात कर उन्हें तैयार रहने का आदेश दिया और आवश्यक विचार-विनिमय किया । इसके बाद छावनी में जाकर चक्कर लगाया, सैनिकों को अपना मनसूबा बताया । वे सब बहुत खुश हुये । उन्हें संतोष हुआ कि आखिर मौका आ ही गया जब वे अपनी रण-कला का परिचय दे सकेंगे ।

देखते-देखते पूरे स्वर्ण दुर्ग में युद्ध की हलचल छा गई। सैनिक अपने-अपने शस्त्रास्त्र साफ और तेज करने लगे। कारखाने में ढ़ली नई हल्की लोहे की तोपें लाद कर समुद्र के किनारे लाये जाने का काम प्रारम्भ हुआ। उन्हें जंगी जहाजों में स्थापित किया जाने लगा। तोपों के लिये वारूद के गोलों से भरी गाड़ियाँ पहुंचने लगीं। उन्हें सुरक्षित कक्षों में चढ़ाने का काम शुरू हुआ। खाद्य सामग्री माल-वाहक जहाजों में मजदूर लादने लगे। सिद्धोजी गुज्जर वीमार होने पर भी वहाँ आ पहुंचे। उन्होंने सारा काम स्फूर्ति और चुस्ती से होते देखा। सैनिकों के चेहरे पर अपार उत्साह छाया हुआ था।

कान्होजी ने सिद्धोजी को सारा कार्यक्रम वताया। सिद्धोजी ने उस पर सन्तोष प्रकट किया और कहा—'याद रखना, यह छापामार युद्ध नहीं होगा। आमने-सामने की लड़ाई वहुत भयंकर सिद्ध हो सकती है। इसलिये दौलतखान के नेतृत्व में प्रशिक्षित सैनिकों का अधिक समावेश उपयुक्त होगा। फिर लड़ाई समुद्र के अलावा धरती पर भी होगी। ऐसी हालत में विशेष व्यवस्था करनी जरूरी है। मुझे विश्वास है कि इस वार हमें पहले की तरह पराजय का मुँह नहीं देखना पड़ेगा।'

'मुझे भी यही विश्वास है। हम इस वार सिद्दी को धूल चटा कर ही वापस लौटेंगे। सिद्दी फिर अनेक वर्षों तक मराठों की ओर देखने का साहस नहीं कर पायेगा। मैंने सारा प्रवन्ध पूरा कर लिया है। कल वृहस्पतिवार है। सद्गुरू हमारी लाज रखेंगे।' कान्होजी ने कहा।

इसके वाद सिद्धोजी लौट गये।

—००—

नौ

ललकार

उसी रात बालाजी विश्वनाथ एक छोटी नौका में बैठ कर चुपके से जंजीरा के किनारे-किनारे बड़ी देर तक यात्रा करने के बाद लौट आया। वह उसके आस-पास दो तीन बस्ती-छावनियों में भी गया। लौट कर उसने कान्होजी को बताया कि सिद्दी का जहाजी बेड़ा भी लड़ाई के लिये तैयार है। सैकड़ों सैनिक बेड़े के चारों ओर घूम कर पहरा दे रहे हैं। लेकिन उसके निकट की बस्तियों में काम-काज बिलकुल शांति से हो रहा है। उन्हें इस बात की कोई खबर नहीं है कि अचानक मराठों का हमला होने वाला है। मेरे विचार से जहाजी बेड़े को छ: दलों में बाँटा जाये और छहों स्थानों पर एकदम धावा बोल देना श्रेयस्कर होगा। ऐसा हो जाने पर दुश्मन रसद और मदद पहुँचाने कहाँ-कहाँ भागता फिरेगा? वह एकदम सकते में पड़ जाएगा।

कान्होजी गंभीरतापूर्वक हँस कर कह उठा—मैंने भी यही योजना बनाई है बालाजी! मैंने इसका नक्शा तैयार कर लिया है और योजनाबद्ध तरीके से चला जायेगा। सिद्दी को सपने में भी

ख्याल न होगा कि कान्होजी इतने सुगठित तरीके से हमला कर सकता है। इस धावे में सैनिकों को आदेश दिया गया है कि वे किसी भी प्रकार की ढील अथवा नरमी न वरतें। और सिद्दी के सैनिकों तथा जनता के साथ कठोरता से पेश आयें। एक-एक व्यक्ति को चुन-चुन कर मौत के घाट उतारा जाए।

'अच्छी बात है। तो अब मुझे इजाजत दीजिये। कल मैं भी आप के साथ रहूंगा, अगर आज्ञा हो तो। मेरी तलवार के जौहर भी देखना इस बार। एक-एक को ऐसा मजा चखाऊँगा कि आप लोग देखते रह जायेंगे। मुझे ले चलेंगे अपने साथ ?'

'अवश्य बालाजी !' कान्होजी ने खुश होकर कहा, 'और तुम मेरे रक्षक सैनिकों में रहोगे। क्या तुमने अपने हथियार वगैरा ठीक कर लिये हैं ? उनका जंग निकाल दो। लेकिन यह याद रहे कि मेरे साथ रहने में तम्हें जीवन के लिये खतरा हो सकता है।'

'वह कैसे कान्होजी ?' बालाजी ने पूछा।

मेरे रक्षक होने के कारण दुश्मन की तलवारें तुम पर जोरों से वरसेंगी। उनसे वच पाना तुम्हारी कुशलता पर निर्भर करेगा। इसलिये तुम्हें बहुत सावधान रहना होगा।'

'मुझे मंजूर है कान्होजी ! मैं आपके साथ अवश्य चलूँगा। मराठा जन्मभूमि के लिए सेवा का अलभ्य अवसर हाथ आया है। उसकी रक्षा के लिये मेरा जीवन अर्पण है।' बालाजी कह उठा।

'तो चलो। अब जाकर विश्राम करो। कल सुवह जल्दी उठना। सूरज निकलने के साथ हम यहाँ से कूच कर देंगे। नहा-धोकर पूजा-पाठ कर चलना। मृत्युंजय का पाठ करना न भूलना।' कान्होजी वोले।

दोनों अपने-अपने डेरे में चले गए।

लेकिन कान्होजी को रात-भर नींद नहीं आई। सारा समय वह शिविर में वैठ कर नक्शा सामने रख विचार करते रहे। फिर भी

थोड़ी देर विश्राम करना उन्होंने आवश्यक समझा। आँखें मूंदने तक वह बिस्तर पर लेटे आकाश के तारे गिनते रहे। आकाश साफ था। चन्द्रमा छोटे गोल थाल के रूप में चमक रहा था जिसके कारण तारे ठीक ढग से उजल नहीं रहे थे।

रात का तीसरा प्रहर प्रारम्भ हो गया था। आस-पास की प्रकृति सूनेपन में खोई हुई थी। पेड़ों के झुड सैनिकों की भाँति सावधानी की मुद्रा में खड़े बहुत गंभीर लग रहे थे। हवा चुपचाप गुमसुम-सी पेड़ की पत्तियों पर बैठी ऊँघ रही थी। तभी सहसा कई-एक वृक्षों पर जोर की फड़-फड़ाहट हुई। पेड यकायक चौंक उठे। अनेक पेडो के शिखरों पर बड़े-बड़े मोर बैठ कर मधुर स्वर में पुकार उठे—मेंम्रा ...मेंम्रा . मेंम्रा।'

कान्होजी की नीद अचानक खुल गई। वे आवाजे सुन चौंक कर उठ बैठे। चांद अभी पूरे निखार से चमक रहा था। उसकी सफेद चाँदनी मन को सान्त्वना दे रही थी। एक मधुर और मोहक प्रकाश प्रकृति को नहला रहा था। कान्होजी उठे और बुर्जों पर आकर देखा : सागर में लहरें मचल-मचल कर एक भयकर आवाज पैदा कर तट से टकरा रही थी। चांद की रजत किरणें उन लहरों से बुरी तरह उलझ रही थी।

पर कान्होजी जागकर पुन. सोये नहीं। अपने खेमे मे आकर वे टेबल के पास बैठ गए और सारी बाते पुन: एक बार तरतीब से सोचने लगे। नक्शे को खोल कर उन्होंने फिर एक बार हमले की योजना मन में दुहराई। उसे क्रम से आका। कहां कैसा तरीका अपनाना है इसका ब्योरा तैयार किया। हर दल मे कितनी और किस प्रकार की तोपें तथा सैनिक होंगे इस बात की जाँच की।

इसके बाद कान्होजी उठे। उन्होंने समय का कुछ अन्दाज लगाया। रात का तीसरा प्रहर ढल रहा था। छावनी के सारे सैनिक चलने की तैयारी करने के लिये नीद मे जाग रहे थे। सूना वातावरण

ख्याल न होगा कि कान्होजी इतने सुगठित तरीके से हमला कर सकता है। इस धावे में सैनिकों को आदेश दिया गया है कि वे किसी भी प्रकार की ढील अथवा नरमी न बरतें। और सिद्दी के सैनिकों तथा जनता के साथ कठोरता से पेश आयें। एक-एक व्यक्ति को चुन-चुन कर मौत के घाट उतारा जाए।

'अच्छी बात है। तो अब मुझे इजाजत दीजिये। कल मैं भी आप के साथ रहूंगा, अगर आज्ञा हो तो। मेरी तलवार के जौहर भी देखना इस बार। एक-एक को ऐसा मजा चखाऊँगा कि आप लोग देखते रह जायेंगे। मुझे ले चलेंगे अपने साथ ?'

'अवश्य बालाजी !' कान्होजी ने खुश होकर कहा, 'और तुम मेरे रक्षक सैनिकों में रहोगे। क्या तुमने अपने हथियार वगैरा ठीक कर लिये हैं ? उनका जंग निकाल दो। लेकिन यह याद रहे कि मेरे साथ रहने में तुम्हें जीवन के लिये खतरा हो सकता है।'

'वह कैसे कान्होजी ?' बालाजी ने पूछा।

मेरे रक्षक होने के कारण दुश्मन की तलवारें [illegible]र जोरों से बरसेंगी। उनसे बच पाना तुम्हारी कुशलता पर [illegible] रेगा। इसलिये तुम्हें बहुत सावधान रहना होगा।'

थोड़ी देर विश्राम करना उन्होंने आवश्यक समझा। आँखें मूंदने तक वह विस्तर पर लेटे आकाश के तारे गिनते रहे। आकाश साफ था। चन्द्रमा छोटे गोल थाल के रूप में चमक रहा था जिसके कारण तारे ठीक ढग से उजल नहीं रहे थे।

रात का तीसरा प्रहर प्रारम्भ हो गया था। आस-पास की प्रकृति सूनेपन में खोई हुई थी। पेड़ों के भुंड सैनिकों की भांति सावधानी की मुद्रा में खड़े बहुत गंभीर लग रहे थे। हवा चुपचाप गुमसुम-सी पेड़ की पत्तियों पर बैठी ऊँघ रही थी। तभी सहमा कई-एक वृक्षों पर जोर की फड़-फड़ाहट हुई। पेड़ यकायक चौंक उठे। अनेक पेडों के शिखरों पर बड़े-बड़े मार बैठ कर मधुर स्वर में पुकार उठे—मेग्रा ...मेग्रा . मेग्रा।'

कान्होजी की नीद अचानक खुल गई। वे आवाजे सुन चौंक कर उठ बैठे। चांद अभी पूरे निखार से चमक रहा था। उसकी सफेद चांदनी मन को सान्त्वना दे रही थी। एक मधुर और मोहक प्रकाश प्रकृति को नहला रहा था। कान्होजी उठे और बुर्जी पर आकर देखा : सागर में लहरें मचल-मचल कर एक भयकर आवाज पैदा कर तट से टकरा रही थीं। चांद की रजत किरणें उन लहरों से बुरी तरह उलझ रही थी।

पर कान्होजी जागकर पुन. सोये नहा। अपने खेमे मे आकर वे टेबल के पास बैठ गए और सारी बाते पुनः एक बार तरतीब से सोचने लगे। नक्शे को खोल कर उन्होंने फिर एक बार हमले की योजना मन में दुहराई। उसे क्रम से आंका। कहा कैसा तरीका अपनाना है इसका व्योरा तैयार किया। हर दल मे कितनी और किस प्रकार की तोपें तथा सैनिक होंगे इस बात की जाँच की।

इसके बाद कान्होजी उठे। उन्होने समय का कुछ अन्दाज लगाया। रात का तीसरा प्रहर ढल रहा था। छावनी के सारे सैनिक चलने की तैयारी करने के लिये नीद से जाग रहे थे। सूना वातावरण गज

रित हो रहा था। उसमें एक प्रकार की गर्मी आ गई थी। सैनिक उठकर फूर्ति से काम निपटाने में लग गए। सैनिक अफसरों की भाग-दौड़ शुरू हो गई थी। वे सैनिकों को आवश्यक हिदायतें दे रहे थे।

कान्होजी ने भी जल्दी से काम निपटाया। नहा-धोकर शिव-खंडोवा की पूजा की। नवग्रहों का तथा मृत्युंजय का जाप किया। सिद्धोजी की पत्नी ने अल्पहार की वस्तुएँ तैयार कीं। कान्होजी नें छक कर अल्पहार किया। इसके बाद वे खेमें में आ गए। वहाँ अन्य अधिकारी उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। कान्होजी नें उनसे बातें कीं। उन्हें आवश्यक हिदायतें दीं। योजना दुहरा कर बताई। फिर सैनिकों को जंगी जहाजों पर बैठने का आदेश दिया।

धीरे-धीरे समय बीतने लगा। रात का अन्धेरा छटने लगा। उस की जगह उजाला आना शुरू हो गया। पूर्व दिशा में अपार लाली छा गई। ऐसा लगा जैसे प्रकृति ने बोरियाँ भर-भर कर गुलाल बिखेर दिया हो। यह गुलाल सूरज के स्वागत में बिखेरा गया था। पेड़ों पर पक्षियों की किलबिल शुरू हो गई थी। धरती जैसे अंगड़ाई लेकर जाग उठी थी। फिर कुछ ही मिनटों के बाद सूर्य उदय हुआ। उसने अपनी उजली किरणें अनंत सागर पर फैला दीं।

सागर के किनारे सजे-संवरे जंगी जहाजों के बेड़े खड़े थे। जो दूर तक फैले पानी पर तैरने वाले थे। उनमें मराठा सैनिक चढ़ चुके थे। जहाजों पर लोहे की तोपें गोला-बारूद और खाद्य सामग्री लद चुकी थी। सब कान्होजी के आदेश की प्रतीक्षा कर रहे थे।

इधर कान्होजी आंग्रे सैनिक वेश में सुशोभित मंच पर बैठे सिद्धोजी से बातचीत कररहे थे। सिद्धोजी गुज्जर महाबली कान्होजी का मार्ग-दर्शन कर उन्हें सिद्दी सेना के साथ युद्ध में होने वाली अनेक मुसीबतों का कैसे सामना किया जाएगा इस बारे में हिदायतें दे रहे थे। सिद्धोजी एक कुशल एवम् अनुभवी नौ-सेनापति थे। उनका

सारा जीवन युद्ध करते बीता था। लगभग सभी युद्धों में वह सिद्दी से असफल रहे थे। लेकिन उन वर्षों में मराठा नौसैनिक बेड़े की कभी भी उतनी ताकत नहीं रही थी जितनी कि कान्होजी ने इस बार गठित की थी। यही नहीं, कान्होजी ने अनेक मुठभेड़ों में सिद्दी के सैनिकों को परास्त किया था या उन्हें अपार हानि पहुंचाई थी। इस बार सिद्धोजी को पूरा विश्वास था कि सफलता कान्होजी को वरण करेगी। इसलिए उन्होंने बड़ी आत्मीयता से अपने मुंह-बोले बेटे को हर बारीकी समझा कर बताई थी।

इसके बाद कान्होजी ने सिद्धोजी और माँ रेवतीबाई के चरण स्पर्श कर उनसे आशीर्वाद लिए। महल की लड़कियों ने कान्होजी के मस्तक पर रोली-अक्षत लगा कर आरती उतारी। फिर भावावेश में कान्होजी ने जोर से पुकारा—'जय भवानी, जय शिव !' और वे बेड़े की ओर चल दिए। उनमें उमंग थी, जोश था, आत्मबल था।

जब वह समुद्र के तट पर पहुंचे तो बालाजी विश्वनाथ और दौलतराव ने उनका स्वागत किया और एक विशेष जंगी जहाज में बैठने के लिए कहा। इस जहाज का नाम था 'मर्द मराठा'। कान्होजी ने उनका अभिवादन स्वीकार किया और जहाज पर चढ़ गए। इसके बाद वह बालाजी से बोले—'चल दें बाला जी ?'

'जी हाँ, मेरे विचार से चल ही देना चाहिए। दोपहर तक हर हालत में हमें दुश्मन के ठिकाने पर पहुंचना होगा। अगर देर हो गई तो हमें लाभ बहुत कम होगा। हम कल तक वापस लौटने का प्रयत्न करेंगे।' बालाजी बोले।

इसके बाद कान्होजी ने हाथ ऊपर उठा कर चलने का सकेत किया। उसी क्षण तुतारियाँ बज उठीं। सैनिकों में जोश फैल गया। फिर क्षण बाद जंगी जहाज किनारा छोड़कर आगे बढ़ चले। समस्त जहाजों को किनारा छोड़ने के लिए पन्द्रह मिनट लगे। सब से पीछे

खाद्य सामग्री से लदे गलबत जहाज थे। सभी जहाजों पर मराठों का भगवा ध्वज लहरा रहा था।

लगातार पाँच घंटे चलने के बाद मराठों का विशाल जहाजी बेड़ा जंजीरा के निकट पहुँच गया। मार्ग में ही सभी तोपों में बारूद भर दी गई और उन्हें बिल्कुल तैयार रखा गया। जंजीरा से पाँच मील दूर पर ही योजना के अनुसार जहाजी बेड़े को पाँच भागों में बाँट दिया गया। आदेश के अनुसार ये पांचों बेड़े अलग-अलग स्थानों पर जाने लगे। एक विशेष जंगी जहाजी बेड़ा जिसका नेतृत्व स्वयं कान्होजी आंग्रे कर रहे थे जंजीरा की खाड़ी में पहुँचा। सब सैनिक सतर्क और सावधान थे।

जंजीरा के सिद्दी का यह प्रदेश हबसाण नाम से जाना जाता था। इस प्रदेश में जंजीरा का किला मुख्य केन्द्र और गोला-बारूद का सबसे बड़ा भंडार था। इसके अलावा और आठ फौजी किले थे जिनमें मुरुड, नाँदगाँव, मांडले और श्रीवर्धन प्रमुख थे। तीन और किले थे, म्हसले-गोवले और पंचायतन जो सामरिक दृष्टि से अधिक उपयोगी न थे। लेकिन इनमें बड़ी-बड़ी सैनिक छावनियाँ थीं। इस प्रांत का क्षेत्रफल लगभग तीन सौ पचीस वर्गमील था। इसके उत्तर में कुण्डलि नदी बहती थी। पूर्व में कुलाबा जिले का रोहा, माणगाँव और महाड़ तहसील के भाग थे। दक्षिण में सावित्री नदी और पश्चिम में अरब सागर हैं। इस प्रांत को सबसे बड़ा फायदा उसका सागर का किनारा है। पश्चिम में चालीस मील समुद्री किनारे के अलावा बाणकोट की खाड़ी का सत्रह मील लम्बा किनारा और रोह्या की खाड़ी का साढ़े मील लम्बा किनारा जहाजी बेड़े के लिए बड़े महत्त्व का था। इसके अलावा राजपुरी का मध्य आखात चौदह मील लम्बा और काफी चौड़ा होने के कारण समुद्री सैनिक शक्ति की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण समझा जाता था। यह सारा प्रांत ऊँची-नीची पहाड़ियों और घने जंगलों से ढका हुआ था। इसकी भूमि दल-

कान्होजी आश्वस्त हुए। उन्होंने तत्काल तोपों के मुंह किले की ओर घुमाने का संकेत किया और दूसरे ही पल बारूद के गोले धड़ ''धड़''' धड़'''धड़ाम ''धड़'''की भयंकर आवाज करते हुए किले की दीवारों से टकराने लगे। आवाजें सुनते ही सिद्दी के सैनिकों ने बुर्ज पर आकर देखा तो उनके होश-हवास उड़ गये। आँखें फटी रह गयीं। किले के सागर के किनारे अपार मराठा सैनिक तलवारें लिये खड़े थे। तोपें आग उगल रहीं थीं।

किले में एकदम भगदड़ मच गई। एक सेनापति ने दौड़कर सिद्दी को बताया—'खान साहेब, गजब हो गया। कान्होजी आंग्रे ने हमारे मुल्क पर हमला कर दिया है। उसका जंगी जहाजी बेड़ा हमारे समुद्री किनारे पर आ धमका है और तोपें आग बरसा रही हैं।'

सिद्दी खान सुनते ही भौंचक्का रह गया। गुस्से से काँप कर बोला—देखते क्या हो ? भागो दौड़कर फौजों को लड़ने का हुक्म दो। किले की सारी तोपें दागनी शुरू कर दो। दुश्मन को आग में भून डालो। एक भी सिपाही जिंदा न बचने पाये।

'जो हुक्म !' कह कर सेनानायक दौड़ पड़ा। उसने सैनिकों को आदेश दिया। किले में बीस तोपें थीं। उन्होंने आग उगलना प्रारम्भ किया। लेकिन सिद्दी के सिपाही इतने भयभीत हो गये थे कि उनके निशाने अचूक न पड़ते थे। उनकी तोपों से छूटे गोले या तो सागर में गिरते या किनारे की रेत में धँसकर फटते थे।

ठीक इसके विपरीत मराठों का हाल था। उन्होंने कुछ ही मिनटों में अर्ध गोलाकार परिधि से अपनी तोपें पेड़ों के झुरमुटों की आड़ में जमा लीं। ये गिनती में अस्सी से कुछ अधिक थीं। सभी लम्बे पल्ले का मार करने में समर्थ थीं। उन पर तैनात तोपची भी कुशल निशानेबाज और अव्वल दर्जे के साहसी वीर थे। कान्होजी

बारी-बारी से इधर-उधर घूम कर उनका हौसला बढ़ा रहे थे। उन्होंने एक तोपची को लगातार दुश्मन की उसी तोप पर मार करने का आदेश दिया जो कि किले के एकमात्र फाटक की ओर ही थी।

आदेश के अनुसार गणपतराव इंगले ने अपनी तोप का मुंह उसी ओर निर्दिष्ट निशाने की ओर फेरा और गोले फेंकने शुरू किए। लगातार अनेक निशाने साधे गये। लेकिन बुर्जी ऊँची होने के कारण गोले आस-पास जाकर फटते थे। तोप का निशाना नही बनता था। पर कान्होजी लगातार उसका हौसला बढ़ाते रहे और वह अथक प्रयत्न करता रहा। लगातार की कोशिश कभी असफल नही जाती। लगभग आधे घंटे के बाद एक निशाना ठीक जगह जाकर लगा। तोप पर गिर कर गोला फटते ही उसके टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर गये। तोपची वहीं गारद हो गया। यह देख कान्होजी ने इंगले की पीठ थपथपा कर शाबाशी दी और दो सोने की मुहरें इनाम में दीं।

तोपों की लड़ाई बहुत भयंकर हो गई थी। मराठों के पन्द्रह तोपची मारे जा चुके थे। लेकिन उनकी जगह और कुशल तोपचियो ने ले ली थी। एक गोला कान्होजी के बिल्कुल पास आकर गिरा। पर कान्होजी उसके फटने से पहले ही दूर जा कूदे और बाल-बाल बच गये। इसी समय कुछ और तोपे किले पर लाई गयी और देखते-देखते उन्होने काम करना शुरू कर दिया। लड़ाई और भयकर हो उठी। मराठों के लिए जमीन से ऊपर की ओर किले पर मार करना कठिन था। लेकिन सिद्दी के लिए तोपों की मार जमीन पर करना सुगम था।

लड़ाई प्रारम्भ हुए तीन घंटे हो गये थे। अनेक मराठा तोपची घायल होकर इहलीला समाप्त कर चुके थे। उन्हे तोपे दागना बहुत कठिन हो रहा था। दूसरी ओर दुश्मन की तोपों की मार बढ़ती ही

जा रही थी। कान्होजी हिम्मत नहीं हारे थे पर मरते सैनिकों को देख उनकी आकुलता बढ़ती जा रही थी। इसी समय दौलतखान दौड़कर पास आया और कान्होजी से बोला—कान्होजीराव, यह लड़ाई अगर दस दिन चौबीसों घंटे भी चलती रहे तो खत्म नहीं होगी। इतना बेशुमार गोला-बारूद है सिद्दी के पास किले में! उसके चार गोदाम भरे पड़े हैं। हर गोदाम में हजारों मन बारूद मौजूद है। ये चारों गोदाम हर बुर्जी के पीछे हैं। उन्हें उड़ा देना बड़ा जरूरी है, वरना लड़ाई रुकेगी नहीं जारी रहेगी।

कान्होजी का चेहरा तमतमा उठा सुनकर। उन्हें दौलतखान पर क्रोध आया। बड़े व्यंग से बोले—यह बात तुम्हें पहले ही बता देनी चाहिए थी। हमें दगा देने का विचार था क्या?

दौलतखान ने कानों को हाथ लगाकर कहा—तोबा-तोबा राव, आप यह क्या कह रहे हैं? मराठा राज्य की रक्षा के लिए जहाँ पानी बहाया जाएगा वहाँ मेरा खून बहेगा। पठान कभी दगा नहीं देगा। एक बार जो फैसला कर लिया उसे आखिरी दम तक निभाएगा। मेरे ख्याल में यह बात अभी आई। पहले गोदाम किसी और जगह थे।

'खैर, कोई बात नहीं। मेरे कहने का बुरा न मानना। अपने कहे के लिए मैं क्षमा चाहता हूं।' कान्होजी लज्जित होकर बोले। फिर उन्होंने कुछ क्षण सोचकर एक काम किया। चार-चार तोपें कुछ हट कर छः जगह स्थापित कीं। इस जगह से किले पर के बारूद के गोदामों की ऊपरी छतें दिखाई पड़ती थीं। उन्होंने तोपचियों को लगातार तोपें उस ओर निशाना बनाकर दागने की आज्ञा दी।

आज्ञा के अनुसार तोपें दागी जाने लगीं। ये तांबे की तोपें और अधिक दूर तक मार करने वाली थीं। देखते-देखते मार तेज हो गई। उनके गोले भयंकर शब्द के साथ गिरकर विस्फोट करने लगे। यह देख सिद्दी को पसीना आ गया। अब क्या किया जाये, कैसे

गोदाम को बचाया जाये ! उसके सामने समस्या थी। मराठों की तोपें भयंकर आग फेंक रही थीं। ऐसी हालत में वहाँ से बारूद हटाना भी संभव नहीं था। उसने चिल्लाकर तोपचियों को मार और तेज करने की आज्ञा दी। उनकी तोपें भी भयंकर हो उठीं।

कान्होजी विचलित नहीं हुए। वे तोपचियों के साथ थे। अचानक आबाजी शिर्के की तोप का एक गोला गोदाम की छत पर जा फटा। एक भयानक धमाका हुआ और दूसरे ही क्षण गोदाम की छत फट गई। इसके तुरन्त ही बाद एक और गोला वहाँ आ गिरा। गिरते ही कान फटने वाले धमाके शुरू हुए। उस धमाके से पास ही स्थित अन्य गोदाम भी फट गये। लगभग एक घंटे तक धमाके-धड़ाके होते रहे और किले की दीवारों में दरारें पड़ गयी। सारा किला खिलौने की तरह हिलकर लड़खड़ा गया। दो बुर्जियाँ ढह कर गिर पड़ी। उन पर रखी तोपें तोपचियों के साथ नीचे लुढ़क गयी। सिद्दी और उसके सिपाही ढीले पड़ गये।

कान्होजी सोचने लगे, अब क्या करना चाहिये। समय गवाना ठीक नहीं। दुश्मन को समय मिलेगा तो वह फायदा उठायेगा। उसे ऐसा नहीं करने दूंगा। अब किले में प्रवेश कर सिद्दी से आमने-सामने भिड़ना ही ठीक होगा।"""सोचकर उन्होंने दौलतखान को बुलाया और कहा—खान, आप यहीं रहें। तोपखाने का भार आप पर सौंपता हूं। जब तक दुश्मन की तोपें आग उगलना बन्द न करें तब तक आप भी तोपों से उन्हें जवाब देते रहें। मैं सेना के साथ किले में प्रवेश कर सिद्दी को ललकारता हूं। वह इस समय आग-बबूला हो रहा होगा। हमने उसकी ताकत बिल्कुल नष्ट कर दी है। अब वह अधिक देर तक तोपें न चला सकेगा।

इसी समय बालाजी विश्वनाथ दौड़ते हुए आए, अभिवादन कर बोले 'कान्होजी, जल्दी चलिये। किले में भयंकर मार-काट मची हुई है।

सिद्दी के सैनिक किले के विशाल लोहे के फाटक को बन्द कर लेना चाहते थे। लेकिन हमने ऐसा नहीं होने दिया। हमारे सैनिकों ने फाटक तोड़ कर खाई में फेंक दिया। पर सुना है जंजीरा प्रांत का स्वामी सिद्दी वहां से निकल भागने में सफल हो गया। हमें वह कहीं दिखाई ही नहीं दिया। हाँ, उसका बेटा फतहखान अंबर राक्षस की तरह विकराल बन बैठा है और मराठा सैनिकों पर प्रहार कर रहा है। मालूम पड़ता है जाते हुए सिद्दी अम्बर किले की रक्षा का भार अपने बेटे को सौंप गया है।

कान्होजी ने बालाजी विश्वनाथ की बात ध्यान से सुनी और उसकी गम्भीरता को परख वह कह उठे—'हाँ-हाँ, अभी चलता हूं। और गर्जना कर बोले—'आओ बहादुरो, किले पर हमला बोल दें। दुश्मन को चबा-चबा कर खा जाएं। आज आपका सामना फतह-खान अम्बर से होगा। सावधान, चुस्त और वीर बनिये। दुश्मन को नाकों चने चबवा दो।'

और कान्होजी तीन हजार पैदल सैनिकों के साथ दुर्ग की ओर बढ़े चले। उन्होंने दरवाजे के अन्दर प्रवेश कर कहा—'आप लोग किले से बाहर जाकर थोड़ा आराम कर लें। पर सावधान रहें, सिद्दी अम्बर अवश्य ही अपनी सेना-छावनी में गया होगा। वह भारी सेना के साथ आएगा। आप सब उसकी प्रतीक्षा करें। हम तब तक किले के सैनिकों से निपट कर बाहर आ जाएंगे।' यह कहकर उन्होंने म्यान से दुधारी तलवार निकाली। भयानक गर्जना की और 'हर हर महादेव' का उद्घोष कर दुश्मन के सैनिकों पर चढ़ दौड़े। मराठों को ऐसा लगा जैसे कोई विशाल पहाड़ घूम रहा हो।

अन्दर घुसते ही कान्होजी वज्र की भांति सिद्दी सेना पर टूट पड़े। उनकी तलवार तेजी से लपलपा कर दुश्मनों का सफाया करने लगी। उनकी तलवार का जौहर देखते ही बनता था। वे जिस ओर

भी टूट पड़ते सैनिकों की लाशों का ढेर लग जाता। सिद्दी सैनिकों के मुकाबले मराठा सैनिक अधिक चुस्त और अनुभवी सिद्ध हुये।

देखते-देखते लड़ाई में रंग आ गया। मौत का बाजार पूरे जोर-शोर से गर्म हो उठा। तलवारों की खनखनाहट से किले का वातावरण गूंजने लगा। घायल सैनिकों की कराहट और चिल्लाहट से उसमें विचित्र सजीवता भर गई। कान्होजी ने जैसे राक्षस का रूप धारण कर लिया था। वे चपलता से बेफिक्र सैनिकों के झुंड पर पिल पड़ते और मार-काट मचा देते। दुश्मन के सैनिकों के सिर गाजर-मूली की तरह कट-कट कर जमीन पर लोट पड़ते थे। कान्होजी ने अनेक सैनिकों को आपस में सिर टकरा कर मारा और खाई में फेंक दिया।

इसी समय फतेहखान अवर आग-बबूला होकर अपने कक्ष से बाहर निकला और जिस तरफ कान्होजी रण-हुंकार मचा रहे थे उस ओर दौड़ पड़ा। उसका चेहरा अंगार की तरह लाल हो गया था और भुजाएँ फड़क रही थीं। वह कान्होजी के सामने आया और आदर-सूचक सलाम करके बोला—आइए कान्होजी, आपसे दो हाथ करने के लिए दिल मचल रहा है। देखूं आप में कितना जोर है। तारीफ तो आपकी बहुत सुनी है। आज दर्शन भी हो गए।

कान्होजी हुंकार उठे—मैं तो इसीलिए यहाँ आया हूं खान! आपने छत्रपति सम्भाजी को मराठा सैनिकों के सिर भेंट में भेजे थे न उनका जवाब देने। आज आपका सिर उतार कर छत्रपति को भेजना चाहता हूं। कहिए क्या इरादा है? जैसा आप फरमाएं वैसे ही करूंगा।

फतेहखान सुनकर अवाक् हो गया: 'लुटेरे, तेरी ये हिम्मत!' बौखला कर वह कान्होजी की ओर लपका। कान्होजी भी कच्ची गोलियां नहीं खेले थे। उन्होंने उससे अधिक चपलता से खान के वा को झेला और तलवार घुमाना प्रारम्भ किया . के अनेक सैं

फतेहखान की मदद के लिए दौड़े। लेकिन वालाजी ने लपक कर उन्हें रोक लिया।

कान्होजी और फतेहखान में तुमुल युद्ध हुआ। दोनों देर तक लड़ते रहे। खान ने दिल खोलकर अपनी युद्ध-कला का प्रदर्शन किया। पर कान्होजी के आगे उसकी एक न चली। कान्होजी ने उसे अपनी तलवार के अनेक जौहर दिखाए जिन्हें देख कर खान दंग रह गया। खान की तलवार टूट कर दूर जा गिरी। वह निहत्था हो गया और भय से काँपने लगा। कान्होजी रुक गए और बोले-- 'बेफिक्र रहो खान! कान्होजी निहत्थे पर वार नहीं करता। जाओ और तलवार ले आओ। आप भी याद रखोगे कि किससे पाला पड़ा था।'

लेकिन खान नहीं माना। उसने तलवार लाने में लज्जा अनुभव की। वह अखाड़े का पहलवान था। अनेक नामी पहलवानों को उसने धूल चटाई थी। बोला, 'नहीं कान्होजी, तलवार नहीं उठाऊँगा। तलवार की लड़ाई में मैं हार गया। अब दंगल हो जाए। मैं तुमसे कुश्ती लड़ना चाहता हूं। देखना चाहता हूं कि तुम में कितना जोर है, या इतने भारी-भरकम शरीर में केवल हवा है।'

नहीं खान, यह शरीर—यह सेहत बड़ी मेहनत से कमाई है। मैंने साँड से जोर आजमाया है। उसे पछाड़ा है, शेर से कुश्ती लड़ी है, उसे चीर कर रख दिया था। तुम क्या खाकर मुझसे लड़ोगे?

पर खान नहीं माना। कान्होजी ने भी इन्कार नहीं किया दोनों तैयार हो गए। तोपों की आवाजें अब मामूली रह गई थीं। बीच-बीच में कभी कोई गोला फटता था। लेकिन बाहर दौलतखान की ओर से भारी गोला-बारी हो रही थी।

कान्होजी और खान में कुश्ती हो रही थी। खान ने बढ़-चढ़ कर कई दांव आजमाए पर कान्होजी ने उन्हें भीख न दी। कान्होजी हंस कर बोले, 'खान इस मामले में मेरे सामने तुम बच्चे हो। व्यर्थ में जोर



आजमा रहे हो। लगता है अब तुम्हारा आखरी समय निकट आ गया है। और मैं पहले बतला चुका हूं कि तुम्हें छोड़ूंगा नहीं। मुझे तुम्हारा सिर उतार कर छत्रपति को सतारा भेजना है। मैं फैसला कर चुका हूं।' यह कह कर उन्होंने खान को ललकारा। फिर उसे ऐसा पछाड़ा कि उसे दिन में ही तारे नजर आने लगे। कान्होजी ने उसे जमीन पर बार-बार पटक कर हड्डियाँ तोड़ दीं। फिर उसका तलवार से सिर काट कर एसाजी मेहेंदले के हवाले करते हुए बोले—'इसे छत्रपति सम्भाजी महाराज के पास पहुंचा दो और बोलो, 'आपके आदेश के अनुसार जंजीरा पर आक्रमण किया गया। वहाँ की अनमोल भेंट और पिछले दिनों मराठा सैनिकों के सिरों का जवाब श्रीमंत की सेवा में कान्होजी आंग्रे ने भेजा है।'

'जो हुक्म !' कह कर एसाजी फतेहखान का शीश लेकर वहाँ से रवाना हो गया। सिद्दी के सैनिकों ने उसे रोकने की बहुत कोशिश की लेकिन कान्होजी ने उनकी एक न चलने दी। उन्होंने पुनः मार काट मचा दी और ताव में आकर बासठ सैनिकों को धरती सूंघा दी।

किले की लड़ाई में चार घंटे की अवधि में सिद्दी के बारह सौ सैनिक काम आए। अकेले कान्होजी ने दो सौ सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया। उनकी दो हजार ढाल-तलवारें और बारह तोपें मराठों के हाथ लगीं। तीन सौ सैनिकों को बंदी बनाया गया। कान्होजी ने यह सारा सामान एक मालवाहक जहाज पर लदवा कर स्वर्ण दुर्ग की ओर रवाना कर दिया। इसमें बंदी सैनिक भी थे। इस लड़ाई में मराठों के केवल एक सौ सत्तर सैनिक मारे गए और साठ घायल हुए। इन घायल सैनिकों को एक छोटे गलबत में चढ़ा कर भेज दिया गया। साथ ही मराठा तोपें भी भिजवा दीं।

इसके बाद कान्होजी ने दौलतखान और बालाजी विश्वनाथ से परामर्श किया। निश्चय हुआ कि मराठों के जहाजी बेड़े की रक्षा के

लिए आठ सौ सैनिक आबाजी देशपांडे के नेतृत्व में रसपार शेष सैनिकों के साथ जंजीरा के भीतरी गाँवों पर धावा बोला जाए। वहाँ सेना की अनेक छावनियाँ तथा हथियार व युद्ध-सामग्री बनाने के कारखाने हैं। उन्हे लूटना और नष्ट करना बहुत आवश्यक है।

निश्चय के अनुसार कान्होजी ने सैनिकों से कहा कि वे अपनी खून से सनी तलवारें सागर में धो लें और कुछ देर विश्राम कर तैयार हो जाएँ। अभी तुरन्त जंजीरा के भीतरी भागों में प्रवेश कर दुश्मन के ठिकानों पर हमला बोलना है।

आदेश मिलते ही सैनिक हथियार धोकर तैयार होने लगे। आधा घंटे के भीतर सारी तैयारी पूर्ण हो गई। सैनिकों ने कुछ खा पी लिया और ताजा-दम हो गए। कान्होजी, बालाजी और दौलतखान ने भी नाश्ता किया। कुछ फल खाए। इसके बाद तीनों जंजीरा के भीतरी इलाकों की ओर रवाना हुए। उनके साथ सात हजार मराठा सैनिक थे।

सबसे पहले कान्होजी ने मुरुड पर हमला किया। वहाँ छोटी-सी सैनिक छावनी थी। इसमे केवल तीन सौ सैनिक थे। सबकी जान आफत में आ गई। कान्होजी ने छावनी पर जबरदस्त प्रहार किया और तमाम सैनिको को काट कर फेंक दिया, फिर लूट मचा दी। इस लूट में तीन तोपें, सौ मन गोला-बारूद और पाँच सौ तलवारें हाथ लगी। फिर वे नाद गाँव की ओर बढे। इस गाँव की सीमा पर एक कारखाना था जहाँ तलवारें बनाई जाती थी। कान्होजी ने सैनिकों को मार कर कारखाना लूटा और आगे बढ गए। दूसरी ओर बालाजी विश्वनाथ पूर्व की ओर तथा दौलतखान पश्चिम की ओर अपने-अपने दल-बल के साथ गाँवो को लूटते हुए बढ चले।

गया कि लोग उन्हें देखते ही···हौवा आया···हौवा आया ! जान बचाओ, भागो···चिल्लाते हुए घरों की ओर भागते और दरवाजे बंद कर दुबक कर बैठे रहते।

इसी समय कान्होजी को सूचना मिली कि तादिल गाँव की सीमा पर सिद्दी दो हजार सिपाहियों के साथ उनकी राह रोके खड़ा है। यह खबर मिलते ही कान्होजी ने अपना मोर्चा उसी ओर बढ़ाया। उन्होंने तेजी से मार्ग तय किया और एक घंटे के भीतर ही तादिल के निकट पहुँचे। खबर सही थी। सिद्दी सैनिकों के साथ डटा हुआ था। कान्होजी ने बिना सोचे-समझे उस पर हमला कर दिया और भयंकर मार-काट मचा दी। 'हर-हर महादेव' और 'अल्ला हो अकबर' के नारों से आकाश गूंज उठा। लड़ाई भड़क गई। एक-एक मराठा पाँच-पाँच सिद्दियों के लिए भारी पड़ गया। कान्होजी का साहस और शौर्य दुश्मन ने फटी आँखों से देखा। सैंकड़ों सिपाही—हौवा···हौवा कहते हुए जहाँ राह दिखाई दी भाग खड़े हुए। लगभग डेढ़ घंटा युद्ध हुआ। इतने समय में दुश्मन के आठ सौ सैनिक ठंडे हो गए। साठ मराठों को भी जान से हाथ धोना पड़ा। सिद्दी का बेहद नुकसान हुआ।

कान्होजी का युद्ध-कौशल देखने लायक था। उन्होंने अपनी तलवार के ऐसे करिश्में दिखाए कि ऊँचा-पूरा तड़ंग सिद्दी भी हाथ मल कर रह गया। कान्होजी में भयंकर जीवट देखने को मिला। किसी भी सैनिक को उनसे लड़ने का साहस नहीं होता था। आठ-दस सैनिकों से अकेले ही टक्कर लेना यह उन्हीं का काम था। गजब की ताकत, शौर्य और साहस था उनमें। जब तलवार हाथ में लेकर घुमाने लगते तो उनमें इतना जोश भर जाता था कि उन्हें काबू में कर पाना असम्भव हो जाता और दो-चार सैनिक मौत के मुँह में चले ही जाते।

सिद्दी भाग गया था। सैनिक बन्दी बना लिए गए थे। सूरज ढल रहा था और शाम का अंधेरा फैलना चाहता था। हवा सर्द होकर

बहने लगी थी। कान्होजी बेहद थक गए थे। उनके शरीर का हर जोड़ दर्द करने लगा था। वे थोड़ा सुस्ता लेना चाहते थे। उन्हें किसी खतरे की आशंका नहीं थी। एक बड़े आम के पेड़ के नीचे बैठ कर वे विश्राम करने लगे। मराठा सैनिक भी इधर-उधर चले गए। तभी सहसा सिद्दी के बंदी बनाए गए दो सौ सैनिक घेरा तोड़ कर आजाद हो गए और उन्होंने कान्होजी को घेर लिया। कान्होजी बेखबर थे। उन्हें सपने में भी ख्याल नहीं आया कि ऐसा हो सकता है। दुश्मन के सैनिकों ने कान्होजी को घेर कर बन्दी बना लिया और उन्हें अपने एक विशाल शिविर में ले गए। वहाँ एक सैनिक अफसर बैठा हुआ शाम की नमाज अदा कर रहा था।

उसने कान्होजी से पहले मुठभेड़ की थी, इसलिए वह उन्हें तुरत पहचान गया और बोला—"इन्हें कड़ी निगरानी में रखना। अब रात हो रही है। कल सुबह होते ही इन्हें सिद्दी के सामने पेश किया जाएगा।" इतना कह कर वह सिद्दी को खबर देने चला गया।

कान्होजी शिविर में बन्दी बनकर रह गए। उनके चारों ओर सैनिक घेरा डाले बैठे रहे। कान्होजी आँखें मूंदे आगे आ सकने वाले संकट पर सोचने लगे। इसी सोच-विचार में काफी रात बीत गई। जब उनकी आँखें खुली तो उन्होंने देखा कि अनेक सैनिक घेरा डाले पड़े सो रहे हैं। उन्होंने तत्काल जोर लगाकर लोहे की हथकड़ी तोड़ दी और चुपके-से घेरा लांघ कर डेरे से बाहर निकल आए। द्वार पर मशाल जल रही थी। उसे हाथ में लेकर तंबू को आग लगा दी और बेतहाशा गाँव की ओर भाग खड़े हुए।

शिविर में चारों ओर आग लग गई थी। सैनिक हड़बड़ा कर जाग उठे तो देखा दो पहरेदार मरे पड़े हैं। घोड़ों के लिए सूखी घास के अनेक गट्ठर बंधे हुए रखे थे जो आग की लपेट में आकर धू-धू जलने लगे थे। इसी भगदड़ में खोज हुई तो कान्होजी को नदारद पाया। यह जानते ही सैनिकों का खून सूखने लगा। उन्हें

सिद्दी का भयानक चेहरा नजर आने लगा। इस युग की महान हस्ती पर काबू पाने का आनन्द पल भर में नष्ट हो गया।

उधर कान्होजी बेतहाशा भागे जा रहे थे। कुछ देर बाद थककर वे सांस लेने खड़े हो गए और पीछे की ओर मुड़ कर देखा—शिविर जोरों से जल रहा था। वहां से काले घने धुयें के गुब्बार ऊँचे उठ रहे थे। वहाँ मचा हुआ कोलाहल रात के सूनेपन में स्पष्ट सुनाई पड़ रहा था। पर कान्होजी अधिक देर तक रुके नहीं। वे फिर दौड़ लगाने लगे। सामने तादिल गाँव की बस्ती दिखाई दे रही थी।

पौ फट रही थी और सूरज पूरब में उभरने के लिए मचल रहा था। लोग जाग गए थे। सड़कों पर आना-जाना शुरू हो गया था। कान्होजी ने पगड़ी उतार कर सिर पर साफा बांध लिया और गाँव में प्रवेश कर गए। वह एक-एक मकान पर नजर डालते हुए आगे बढ़ने लगे।

सहसा उन्हें घोड़ों की टापें सुनाई पड़ीं। देखा, कई सैनिक घोड़ों पर सवार हुए उसी रास्ते पर आगे बढ़ रहे थे। कान्होजी ने हड़बड़ा कर इधर-उधर देखा, सामने एक बड़ी कोठी दिखाई दी। वह तेजी से उस ओर भागे। वहां पहुंच कर उन्होंने तुरन्त घर के अन्दर प्रवेश किया। सामने एक अधेड़ उम्र का आदमी बैठा हुक्का गुड़गुड़ा रहा था। कान्होजी को सामने देखते ही वह उठ खड़ा हुआ और बोला—"तुम कौन हो ? यहाँ किसलिए आए हो ?"

कान्होजी ने इशारे से उसे चुप रहने को कहा। फिर उसके पास जाकर रात का सारा किस्सा सुनाकर कहा—मैं कान्होजी आंग्रे हूं। मैंने सिद्दी अम्बर का सारा प्रांत तहस-नहस कर डाला है। लेकिन सहसा मुसीबत में फंस गया हूं। इसलिए यहाँ चला आया। मुझे कहीं इस तरह छुपा लीजिए कि दुश्मन के हाथ न लग सकूं। अगर आपने उन्हें मेरा भेद बताया तो सारा घर-बार तबाह करके रख दूंगा।

"नहीं, कान्होजी आंग्रे, मैं आपको बचाऊँगा। आप किसी उम्मीद से मेरे दर पर आए है। मेरा फर्ज बन जाता है आपको बचाने का। मेरा नाम फकी है। यहां व्योपार करता हूं।" यह कह कर वह कान्होजी को घर के भीतर ले गया। उसकी पुत्री ने कुछ सप्ताह पहले एक बच्चे को जन्म दिया था। फकी ने उसे पड़ोस के घर में भेज दिया और कान्होजी को बच्चे के पास उसके बिस्तर पर सुला दिया। थोड़ी ही देर में कान्होजी को खोजते हुए सिद्दी के सिपाही वहां आ पहुंचे। फकी के रोकने पर भी उन्होंने घर की तलाशी ले डाली। पास आकर उन्होंने कान्होजी को देखा। वह चादर ओढे पड़े थे, पास में नवजात शिशु सोया था। इसलिए उसे व्यापारी की बेटी समझकर उन्होने उसे सोता ही छोड़ दिया। वे मुँह लटकाए वापस लौट गए। कान्होजी की जान बची। फिर फकी ने उन्हें भोजन कराया। कान्होजी उसके व्यवहार से बेहद खुश हुए। इस खुशी में उन्होने सोने की एक हजार मुहरें बच्चे के हाथ में थमा दी। फकी ने घोड़ा देकर एक आदमी को उनके साथ भेजा। कान्होजी सागर के किनारे आ पहुंचे।

बालाजी और दौलत खान वहां बड़ी देर से उनकी प्रतीक्षा में चिंतित खड़े थे। कुछ देर बाद गोविन्द कान्हो, मायनाक भंडारी और कोंडाजी फरजन्द भी भारी लूट के साथ वहां आन पहुचे। फिर सब मिल कर जहाजी बेड़े के साथ स्वर्ण दुर्ग की ओर चल पड़े।

दस

हौवा

जंजीरा की अप्रत्याशित विजय से कान्होजी के यश और कीर्ति में चार चाँद लग गए। अरब सागर पर उनका दबदबा बढ़ गया और आतंक दूर-दूर तक फैला। इस विजय के उपलक्ष में छत्रपति सम्भाजी ने कान्होजी को पूना दरबार में बुलाकर उनका यथोचित सम्मान किया। उन्हें रत्नजटित तलवार और स्वर्ण से सुसज्जित वस्त्र भेंट किए तथा मराठों की नौसेना का उप सर्वोच्च सेनापति का खिताब देकर आदर किया। कान्होजी इस पद और मान सम्मान को पाकर फूले न समाए।

कान्होजी आंग्रे का यह हौवा उत्तर में बेसीन से लेकर दक्षिण में कारवार तक फैला। पश्चिमी समुद्र तट की पतली पट्टी कोंकण से जुड़ी हुई है। चार सौ मील तक फैला यह क्षेत्र कहीं भी चालीस मील से अधिक चौड़ा नहीं है। कोंकण प्रदेश शासन की दृष्टि से दक्कन का एक भाग रहा है। लगभग चार सौ वर्ष तक इस पर मुसलिम शासकों का शासन रहा। सबसे पहले संत रामदास ने इस क्षेत्र में आजादी की हुंकार भरी। लोगों में जागृति की लहर पैदा की। छत्रपति शिवाजी ने अथक मेहनत से लोगों को इकट्ठा कर एक सेना बनाई। उन्हें स्वतंत्रता का महत्त्व समझाया। फिर उनका मजबूत संगठन तैयार करके दक्कन पर हमले शुरू किए। धीरे-धीरे एक बड़ा क्षेत्र अपने अधीन कर लिया। यह क्षेत्र बीजापुर के सुल्तान का था। इस क्षेत्र को हथिया कर शिवाजी ने मराठा राज्य की नींव डाली थी।

इसके वाद उनकी आगरा के मुगल शासकों विशेष रूप से औरंगजेब से लड़ाई चलती रही। मराठा ताकत ने औरंगजेब द्वारा मंदिरों के तोड़े जाने और गैर मुस्लिमों पर लगने वाले कर जजिया का कड़ा विरोध किया। दूसरी ओर समुद्र की ओर से आने वाली यूरोपीय शक्तियां अंग्रेज, पुर्तगाली और डच व्यापारियों के रूप में पनप रही थी। पुर्तगालियों को भारत में आए दो सौ वर्ष पूरे हो चुके थे। ये भारत में आई दूसरी यूरोपीय ताकतों की तुलना में सबसे अधिक ताकतवर थे। इसमें कोई शक नही कि वे हिंद महासागर पर प्रभुत्व जमाए हुए थे। उन दिनों कहा जाता था, यदि मुगल थल के शासक हैं तो पुर्तगाली जल के। डचों की ताकत धीरे-धीरे घट कर अंग्रेजों के हाथ में आ रही थी। लेकिन इनमें से किसी भी यूरोपीय ताकत के आपस में अच्छे सबंध नही थे। कान्होजी आंग्रे ने अपने बल, योग्यता और कुशलता के सहारे मराठा नौ सेना-शक्ति सुदृढ़ सगठित कर अपनी धाक विदेशी ताकतों पर हमेशा के लिए बैठा दी। उनका हौवा इन शक्तियों को डराने धमकाने लगा। इस प्रकार अठारहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में कोंकण के किनारे जमी हुई किसी भी ताकत से एक ही दुश्मन चुनने के लिए कहा जाता तो वह मुगलों या मराठों को ही चुनते। उनका एक ही उत्तर होता– कान्होजी आंग्रे।

लगातार चालीस वर्ष तक पश्चिमी किनारे की समुद्री ताकतों के लिए कान्होजी आंग्रे एक चुनौती बना रहा। सभी विदेशी उससे डरते थे। इस अवधि में कान्होजी ने मराठा जहाजी बेड़े की ताकत को खूब अच्छी तरह सगठित कर उसका विस्तार किया और उसे उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर पहुचा दिया। अपने इस जहाजी बेड़े का उन्होंने एक विजय के वाद दूसरी विजय में नेतृत्व किया और महाराष्ट्र की नौसैनिक प्रतिष्ठा में चार चाद लगा दिए। उन दिनों मराठा कप्तानों को ब्रिटिश व्यापारी शिवाजी के समुद्री डाकू कहा करते थे। ये लोग निडरता से पुर्तगालियों, डचों और अंग्रेजों के जहाज लूट लिया करते थे। सच पूछा जाय तो कान्होजी ने [illegible] इस

परम्परा का पूर्ण पालन किया और उनके जहाजों को आए दिन लूट कर नाक में दम कर दिया।

कान्होजी ने किसी से डरना नहीं सीखा था। वह जो काम करते वह अपनी हिम्मत और बलबूते पर ही करते थे। उनका हर काम खूब सोच-विचार कर तथा सुनियोजित होता था। वह अक्सर गलवत में दस-पन्द्रह सैनिकों के साथ बैठ कर सागर पर बहुत दूर निकल जाते और आने-जाने वाले विदेशी जहाज को घेर कर उस पर हमला बोल देते। अपनी तलवार के प्रहारों से निगरानी करने वाले सैनिकों को मार कर जहाज का सारा माल लूट लेते थे। उन्हें देख पुर्तगालियों को पसीना छूटता। वे उन्हें धन देकर जान बचाने की कोशिश करते। जब कान्होजी को विश्वास हो जाता कि जहाज में अधिक माल या धन नहीं लदा है तो वह कुछ ले देकर ही उन्हें छोड़ देते। लेकिन अगर उन्हें पता चल जाता कि जहाज में बेशुमार कीमती माल लदा है या सोने की ईंटें, सिल्लियाँ लदी हैं तो वह किसी कीमत पर भी उसे न छोड़ते और पूरा लूटकर ही दम लेते थे।

ब्रिटिश लोगों को तो कान्होजी ने विशेष रूप से बहुत हैरान कर रखा था। वे समय और स्वभाव के बड़े पारखी थे। उनकी हलचलों से कान्होजी ने यह समझ लिया था कि ब्रिटिश लोग भारत के लिए सबसे खतरनाक साबित होंगे। अल्पकाल में ही वह पुर्तगालियों, डचों तथा फ्रांसीसियों के पाँव इस धरती से उखाड़ फेंकेंगे और अपना प्रभुत्व जमाकर हमारे देश के लिए मुसीबत बन जायेंगे। वे बहुत होशियार, चतुर, परिश्रमी और धुन के पक्के लोग हैं। हमारी आपसी फूट और द्वेष का लाभ उठाकर वे कालांतर में हमें गुलाम बनाकर देश पर शासन कर सकने में समर्थ हैं।

अपने मन में यह दृढ़ धारणा बनाकर उन्होंने अंग्रेजों से निबटने के लिए कमर कसी। उनकी ताकत को नष्ट करने का सदा प्रयत्न किया। इस नीति के कारण कान्होजी ने ब्रिटिश जहाजों को सदा परेशान रखा। वे समुद्र पर दूर तक सतर्क गश्त देकर जहाजों को ढूंढ

निकालते। उन पर आक्रमण कर सैनिकों को मार डालते और फिर उसे लूट लेते। कान्होजी के इन साहसी और वीरतापूर्ण कारनामों से ब्रिटिश बहुत घबराने लगे। उन्होंने अपनी सुरक्षा के लिए उन पर तोपें लादना शुरू की। पर कान्होजी कब घबराने वाले थे। एक-दो बार मार खाकर वे सम्भल गए। उन्होंने अपनी युद्ध-नीति बदली। गलबत की जगह उन्होंने पाल जहाजों का उपयोग शुरू किया जिनमें तोपें लगी रहती हैं। इनकी सहायता से कान्होजी ने ब्रिटिशों के विभिन्न जहाजों पर हमले प्रारम्भ किए। उन्हें बुरी तरह पछाड़ा। उन्हें लूटा और डुबो दिया। जहाजी बेड़े को अपार नुकसान होने लगा। ब्रिटिश लोगों के मन पर कान्होजी की भारी दहशत पड़ी। वे उनसे डरकर मित्रता करने के प्रयत्न करने लगे।

कान्होजी के भयकर और साहसी कारनामो से ब्रिटिश लोग इतने डर गये कि उन्होंने अपनी सुरक्षा के लिए बम्बई में, नगर के चारो तरफ एक खाई खुदवाकर, उसके पीछे एक दीवार खिचवा दी। यही नही, उन्होंने कान्होजी से मुकाबला करने के लिए अपने जानी दुश्मनों, पुर्तगालियो से भी दोस्ती कर ली। पुर्तगाली कान्होजी से समझौता भी कर लेते थे और मौका देख कर युद्ध भी कर बैठते थे। चुपचाप वे लोग कान्होजी आग्रे के खिलाफ षडयंत्र रचते रहते थे और उसके विरोधियों को सहायता पहुचाते थे।

एक बार डचों ने अपने जहाजी बेडे के साथ स्वर्ण दुर्ग पर हमला कर दिया। वे यह समझे बैठे थे कि कान्होजी के पास सैनिक शक्ति नहीं के बराबर है। वह केवल लूट-मार ही कर सकता है। लेकिन कान्होजी बडे तेज तर्रार थे। डचो के हमले की योजना [illegible] विश्वनाथ ने पहले ही कान्होजी को दी। इसलिए वे तयार [illegible] बड़ी उत्कटता से उनके आने की प्रतीक्षा करने लगे। जैसे ही [illegible] जहाज खाड़ी के निकट पहुचने के लिए आगे बढे कान्होजी ने जहाजों से तोपों की भारी वर्षा शुरू कर दी। इतना ही नहीं मराठा ने रास्ता

काट कर पीछे से डचों पर आक्रमण कर दिया। डच बुरी तरह कैंची में फंस गये। मराठे सैनिक उनके जहाजों में घुस कर मार-काट मचाने लगे।

दो घंटे की लड़ाई में उनकी ताकत का शिराजा बिखर गया। आठ में से सात जहाजों को आग लगाई गई। वे धू-धू कर जलने लगे। कप्तान एण्ड्रूज एक जहाज में बचे-खुचे सैनिक लेकर भाग खड़ा हुआ। इस मुठभेड़ में उसके दो सौ सैनिक काम आये। मराठों के केवल पाँच सिपाही जख्मी हुये और दो मारे गये। डचों को अपनी ताकत संवारने के लिये बटाविया तक से युद्ध-पोतों का एक बेड़ा मंगाना पड़ा।

ब्रितानी लोग कान्होजी को 'स्थली शार्क', दस्यु, समुद्री डाकू, खलनायक और बागी कहा करते थे। वे हर कीमत पर उससे मित्रता करने के लिए भी प्रयत्नशील रहे। पुर्तगाली उनसे और भी डरते थे। उनका हौवा उनके दिल और दिमाग पर भयंकर रूप से बैठ गया था। वे कान्होजी को हर माह दो लाख रुपये देकर उन्हें अपना बनाये रखने लगे। साथ ही उन्हें बहुमूल्य उपहार भेज कर खुश रखते थे।

कान्होजी नें ऐसा कड़ा प्रबन्ध कर रखा था कि कोंकण क्षेत्र में कोई भी विदेशी जहाज अकेला नहीं गुजर सकता था। युद्ध-पोत भी उनके सुरक्षित नहीं थे। व्यापारी लोग ऊपर तक अस्त्रों से लैस सुरक्षा-नौकाओं में बैठ कर जाया करते थे। व्यापारी हल्कों में ऐसी परम्परा पड़ गई थी कि अगर साथ चलने वाले युद्ध-पोतों के कप्तान उनकी नौकाओं को बन्दरगाह तक सुरक्षित ले आते थे, तो उन्हें पांच सौ मोहरें भेंट-स्वरूप दी जाती थीं। कान्होजी का समुद्री रास्तों पर ऐसा हौवा बैठा हुआ था।

—oo—

ग्यारह

पैर लड़खड़ाये

समय पलटते देर नहीं लगती। जिस मराठा राज्य की नींव छत्रपति शिवाजी ने डाली और उनके पुत्र सम्भाजी ने उसे दृढ़ता और विस्तार प्रदान किया। वही सम्भाजी कालान्तर में मुगल सम्राट औरंगजेब द्वारा मारे गये। मराठा राज्य को जैसे ग्रहण लग गया। सम्भाजी की मृत्यु के बाद पूना की राजगद्दी पर उत्तराधिकार का प्रश्न मुख्य रूप से पेश हुआ। दरबार के सरदारों एवं जागीरदारों में फूट पड़ी हुई थी। वह खुलकर सामने आयी। उनकी सहायता से सम्भाजी के सौतेले भाई राजाराम गद्दी पर बैठे।

लेकिन शासकों के इन परिवर्तनों का नौसैनिक शासन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। कान्होजी आंग्रे पहले की भांति अधिकारी बने रहे। राजाराम उनकी योग्यता और गुणों से बहुत प्रभावित हो चुके थे। इसका परिणाम अच्छा ही निकला। उन्होंने कान्होजी आंग्रे को उस समय के सुरखेल (ग्रैंड एडमिरल) सिद्धोजी गुज्जर का डिप्टी कमाण्डर नियुक्त कर उनका मान और दर्जा बढ़ाया।

सन् १६६८ में सिद्धोजी गुज्जर चल बसे। कान्होजी का भाग्य

और चमका। राजाराम ने उन्हें मराठा नौ सेना का कमांडर वना दिया। वे २६ वर्ष की आयु में सिद्धोजी गुज्जर की जगह सुरखैल की उपाधि से विभूषित हुए। राजाराम ने दूसरे डिप्टी चीफ भवानीराव मोहिते को भी स्वतन्त्र रूप से कमांडर वना कर दक्षिण की वागडोर उसके हाथ में सौंप दी। लेकिन सुरखैल वनने के कारण कान्होजी का दर्जा मोहिते से वड़ा रहा।

कान्होजी आंग्रे ने अपने अधिकार का पूर्ण प्रयोग मराठा नौ सेनाशक्ति के गठन के लिए किया। उनका सदैव यह सिद्धांत रहा—'पहले देश फिर और कुछ'। और इस सिद्धांत का उन्होंने मरते दम तक पालन किया। उन्हें जिस नौ सेना की वागडोर मिली वह काफी टूटी हुई और दुर्वल थी। गिने-चुने जहाजों में इतनी ताकत न थी कि वे विदेशियों की नौ सेना से टक्कर ले सकें। लेकिन कान्होजी ने इन्हीं वचे-खुचे पुराने युद्ध-पोतों और लगभग आधा दर्जन समुद्र-तटीय किलों से काम चलाया। उन्होंने मराठा नौ सेना का पुनर्गठन किया और धीरे-धीरे उसमें नव शक्ति का संचार किया।

कान्होजी आंग्रे ने मराठा नौ सेना में ५१ तरह के जहाज वनवाए। इनमें लड़ाकू जहाजों में पाँच तरह के जहाज प्रमुख थे—घुराव, गल्लीवत, मंछवा, शिवर और पाल। जहाज की वागडोर नखोदा (कप्तान) के हाथ में रखी। उसके एक या दो सहायक हुआ करते थे जिन्हें तांडेल कहते थे। कान्होजी आंग्रे ने मराठा वेड़े में मुसलमान नौ सैनिक भी ऊँचे-ऊँचे ओहदों पर रखे। वरसात के दिनों में जहाजों का परीक्षण और मरम्मत की जाती थी। उन्हें ताड़ के पत्तों से ढककर रखा जाता था। नौसैनिक सरदार इन चार महीनों में आराम किया करते थे। नारियल पूर्णिमा के वाद जहाज फिर समुद्री थपेड़ों के साथ खेलने निकल पड़ते थे।

कान्होजी साहसी नौसैनिक थे, वीर सेनापति थे। वड़े विद्वान् और ब्राह्मणों का आदर करने वाले थे। भट की सेवा में रहकर उन्होंने

ग्रंथों का अध्ययन और मनन किया था। संस्कृत के अनेक धर्म-ग्रंथ और दर्शन-शास्त्र की पुस्तकें उनको रटी हुई थी। इन पुस्तकों से वह समय-समय पर उद्धरण भी दे सकते थे। अपने देश और उसकी मिट्टी से उन्हे बहुत प्यार था। मराठा राज्य को लड़खड़ाती और बिगड़ती हुई हालत को वह जल्दी ही भांप गये और खूब सोच-विचार कर अपने जीवन का मार्ग उन्होंने तय किया। एक विद्वान से वह सैनिक बने थे। अपनी योग्यता, अथक परिश्रम और चतुर स्वभाव के बल पर वह इतने महान् पद पर पहुंचे कि उनके गुण सार्थक सिद्ध हुए।

इस महान् नौसेनापति को सबसे ज्यादा संघर्ष जंजीरा के सिद्दी को धूल चटाने के लिए करना पड़ा। वास्तव में मूलतः इसके ही लिये नौसेना का गठन हुआ था। सन् १६८० में जब शिवाजी की मृत्यु हुई तब कान्होजी केवल ग्यारह वर्ष के थे। उसके बाद शिवाजी के पुत्र सम्भाजी को छत्रपति बनाया गया। उनके शासन-काल में कान्होजी पन्द्रह वर्ष की आयु में स्वर्ण दुर्ग में सिद्धोजी गुज्जर की शरण में पहुंचे थे। कुछ ही दिनों में सेना में अधिकारी का पद उन्हें मिला। इन दिनों सम्भाजी की लगातार सिद्दियों के हाथ पराजय हो रही थी। आंग्रे ने इन समुद्री लड़ाइयों में भाग लेकर काफी सबक लिया और व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त किया। उसने अथक परिश्रम से युद्ध की ऐसी बातें भी सीख ली जिनका बहुत सारे मराठा कमांडरों को भी ज्ञान नहीं था, जैसे खतरे का पूर्वानुमान लगाना या लड़ाई में जाने से पहले उसका नक्शा खींच कर रख लेना। सुनियोजित हमला आदि करना।

इसके बाद मराठा शासन में काफी गम्भीर मोड़ आया। मार्च सन् १७०० में राजाराम की सिंहगढ में अचानक मृत्यु हुई। राजगद्दी के लिए फिर विवाद उठ खड़ा हुआ। अनेक लोगो ने कान्ह जी आंग्रे को उत्तराधिकारी चुनने के विवाद में घसीटना चाहा। पर वह अंत

समय तक इस पचड़े में पड़ने से बचते रहे। एक मराठा सरदार आवाजी पन्त से उन्होंने कहा—भाई मेरा काम अपने वतन की सीमा को दुश्मन से सुरक्षित करना है, राज्य की राजनीति से मेरा क्या सम्बन्ध ? कोई आये, कोई राजा बने। मेरी जिम्मेदारी वही है और रहेगी। अपनी चालों और हथकंडों का मुझे शिकार न बनाओ। मेरे पास दरबार और दरबारियों के लिये समय ही कहाँ है ?

मराठा-राज्य की गद्दी के लिये दो पक्षों में झगड़ा प्रारम्भ हुआ। एक पक्ष था शाहू का और दूसरा ताराबाई का। दोनों उत्तराधिकार के लिये लड़ने लगे। इस विवाद में बालाजी विश्वनाथ तथा सभी बड़े-बड़े सैनिक अधिकारी उलझे हुए थे। ताराबाई अपने पुत्र को शासक बनाना चाहती थी। एक दिन उन्होंने अपने पक्ष के लोगों को दावत का निमन्त्रण दिया। सभी बड़े-बडे अधिकारियों और सरदारों ने इस दावत में भाग लिया। कान्होजी को भी ताराबाई का बुलावा आया। दावत में मुख्य पकवान चावल की खीर बनी थी। लोगों ने खीर खाकर पन्हाला के किले में कसम खाई कि वे ताराबाई के वफादार रहेंगे। आंग्रे जान-बूझ कर दावत में नहीं गये। वे पहले से ही ताराबाई के पक्ष में थे। उन्हें अपना समर्थन सिद्ध करने के लिये वहाँ जाने की आवश्यकता महसूस नहीं हुई।

लेकिन ताराबाई को समाधान न हुआ, उसने आंग्रे को वश में करने के लिये उसे पूरे जहाजी बेड़े का कमांडर बना दिया। साथ ही उनके वेतन में प्रतिमाह दो हजार रुपये की बढ़ोतरी भी कर दी। इतना ही नहीं उसने सम्पूर्ण कोंकण प्रांत का प्रभुत्व ही कान्होजी को सौंप दिया और कोलाबा में उनके नये पद की पोशाक भेजी। अब वह हमेशा के लिये मराठा नौ सेना के सर्वोच्च सेनापति सुरखेल और कोंकण प्रांत के वाइसराय हो गये। दूसरी ओर सत्ता के लिये युद्ध चलता रहा। बालाजी विश्वनाथ शाहू जी के पक्ष में थे। उनका विचार था कि वे कान्होजी आंग्रे और धनाजी जाधव को भी अपनी तरफ कर लेंगे।

लेकिन उन्होंने तारावाई का नमक खाया था। बालाजी विश्वनाथ और ब्रह्मेन्द्र स्वामी के खुल कर शाहूजी का समर्थन करने पर भी वह तारावाई के विश्वास-पात्र बने रहे। हवा के साथ वह अपनी पगड़ी बदलना नही जानते थे। परिणामतः शाहू जी के सबसे बड़े प्रतिद्वन्द्वी कान्होजी आंग्रे हो गये।

लेकिन समय सदा एक-सा नही रहता। वह परिवर्तनशील है। कभी किसी का साथ देता है तो कभी किसी का। मराठा शासन में अंततः राजनीति के पासे इस प्रकार पलटे कि बालाजी विश्वनाथ ने हर प्रकार से प्रयत्न करके कान्होजी आंग्रे को भी अपनी तरफ मिलाने में सफलता प्राप्त की। कुछ दिनों बाद कोलाबा संधि हुई। फिर सब लोग एक हो गये। राज्य के आन्तरिक झगड़े समाप्त हो गये। शाहू को सत्ता प्राप्त हो गई। वह छत्रपति बन गये। कान्होजी को भी लगा कि शाहू का अपना हक मांगना भी निराधार नही है।

कोलाबा संधि के बाद मराठा शासन में अनेक नये मोड़ आये। अनेक सरदारों के अधिकार छिन गये। नये चापलूसों को अधिकार और पद मिले। लेकिन बालाजी विश्वनाथ कमाल की योग्यता और दूरदर्शिता वाला व्यक्ति था। उसने शाहू से अनेक अधिकार पाकर अपनी साख कायम रखी। उसी के प्रयत्नों से कान्होजी आंग्रे भी बच सके। अन्यथा उनका पत्ता साफ करने में भवानी मोहिते ने कोई कसर न उठा रखी थी।

२ अप्रैल सन १७२० के दिन बालाजी विश्वनाथ अचानक चल बसे। उनकी मृत्यु से कान्होजी को बड़ा सदमा पहुंचा। अब वह बहुत कमजोर और अकेला-सा महसूस करने लगे।

इस महान 'सुरखेल' और 'वजारत मा-आब' का शत्रु पक्ष पर इतना प्रभाव था कि वे मराठा राजाओं की जगह उसे ही सब-कुछ समझते थे। डच और फ्रेंच लोग मराठा जहाजों को 'शिवाजी के

युद्धपोत' या 'राजाराम के युद्धपोत' न कहकर 'आंग्रे के गल्लवित' या 'आंग्रे की नौ सेना' कहते थे । अपने सारे जीवन कान्होजी आंग्रे मस्तमौला रहे। उन्हें नाच, गाने और नाटक देखने का वड़ा शौक था। वह सात वच्चों के पिता थे, जिनमें छह पुत्र और एक पुत्री थी। ऊपर से वह जितने ही वीर पराक्रमी और कठोर थे अन्दर से उतने ही कोमल, सहृदय और शौकीन तवियत के थे।

सन् १७२७ में वह वीमार पड़ गये। उन्हें राजयक्ष्मा हो गया। धीरे-धीरे उनकी हालत गिरने लगी।

—००—

उनके दिमाग में काफी उथल-पुथल मच गई थी और गर्मी बढ़ चली थी। इस गर्मी से राहत पाने के लिए बड़ी मुश्किल से शरीर में ताकत लाकर उन्होंने शरीर को पोंछा था। पर मन की थकान दूर नहीं हो सकी। उनके शरीर का जोड़-जोड़ दर्द में लिपटा हुआ था। इस हालत में भी उनके दिमाग में सैंकड़ों प्रश्न बन-बिगड़ रहे थे।

विगत बीस दिनों से कान्होजी अस्वस्थ थे। दो दिन से उनकी हालत शोचनीय हो गई थी। छत्रपति शाहू के पत्र ने उनका चैन हराम कर दिया था। छत्रपति ने पत्र में यह इच्छा प्रकट की थी कि कान्होजी सिद्दी के खिलाफ अभियान छेड़े और सतारा पधार कर उनसे आ मिलें। शाहू महाराज उन्हें समुद्री आरमार का सर्वोच्च पद देने के लिए लालायित हैं।

ऐसा भाग्यशाली मौका कब किसको मिलता है भला! इस पदोन्नति से उनकी शान में चार चाँद लगने का अवसर आ गया था। इस महत्त्वाकांक्षा को पूर्ण देखने के लिए आंग्रे तड़प उठे थे। पर स्वास्थ्य साथ नहीं दे रहा था। राजयक्ष्मा की बीमारी ने उनकी इच्छाओं और मनसूबों पर पानी फेर दिया था। एक-एक दिन गुजर कर उन्हें मृत्यु के निकट खींच रहा था।

कान्होजी आंग्रे की बलिष्ठ एवम भारी-भरकम देह को ग्रहण लग गया था। मन के साथ-साथ उनका शरीर कपूर की तरह दिन ब दिन कमजोर होता जा रहा था। खून की कमी के कारण सारा तन सफेद पड़ चुका था। उसे जैसे किसी ने झकझोर कर निचोड़ डाला था।

तीनों पत्नियाँ मथुरा, लक्ष्मी तथा गहिना और अनेक उप-पत्नियाँ आंग्रे की सेवा में जी जान से जुटी हुई थीं। उन्होंने न दिन देखा न रात। हर समय सब उनके करीब बैठी रहती, उनकी सेवा सुश्रूषा कर धैर्य दिलाती रहतीं। कान्होजी राव पत्नियों का मन रखने के लिये मुस्कुराने की कोशिश करते और कह उठते—आंसू न बहाओ



रानी ! तुम सबके आंसू देखकर मेरा दिल बैठ जाता है। मैं बस ठीक हुआ हो जाता हूं।" लेकिन कोई भी देख सकता था कि उनकी आँखें दिन-ब-दिन गढ़ों में घुसती जा रही है, रौबीले चेहरे का तेज फीका पड़ता जा रहा है।

दिन-भर में पाँच-छः बार महाराष्ट्र के तत्कालीन सुप्रसिद्ध वैद्य पांडुरंग सोहनी महल में आकर कान्होजी का परीक्षण करते और उनकी दशा देखकर चिंतित हो उठते। निराशा में हाथ ऊपर उठाकर कहते—अब ईश्वर का ही सहारा है। यदि राव की जीवन की डोर मजबूत है तो वह निश्चय ही चंगे हो जायेंगे।

लाडली रानी लक्ष्मीबाई चिंतित स्वर में निवेदन करती—वैद्यराज, मुझे राव के लक्षण ठीक नहीं लग रहे। कृपया आप कुछ कीजिये, इनकी बीमारी किसी भी तरह ठीक करो। आपको मुंह-मांगा इनाम दूंगी।

लेकिन बेचारा वैद्यराज ! वह लाचार था। दिल मसोस कर रह जाता। लक्ष्मीबाई को दूसरे कक्ष में ले जाता और धीरज देकर कहता—मैं अपनी ओर से पूरा प्रयत्न कर रहा हूं। लेकिन होगा वही जो ईश्वर को मंजूर है। मैं जानता हूं कि कान्होजी का मन चिन्तित है। उनकी हार्दिक इच्छा है कि सिद्दी को स्वयं परास्त करूँ। छत्रपति शाहू के दरबार में नौसेना के सर्वोच्च अधिकारी बनने का सौभाग्य प्राप्त करूँ। पर बीमारी ने उन्हें इस इच्छा से वंचित कर दिया है और मेरे पास शरीर की दवा है, लेकिन मन की कोई दवा नहीं। मन की दवा मैं कहाँ से लाऊँ ?" बात भी ठीक थी। कान्होजी आंग्रे शरीर से कम मन से अधिक बीमार थे। जीवन पर्यन्त उन्होंने अपनी तलवार के बल पर दुश्मनों को रोके रखा। वे उनके सामने हतप्रभ थे। पर जैसे ही कान्होजी बीमार पड़ गये सिद्दी ने पुनः अपना पैंतरा बदला और मराठों की नौसेना पर हमले करने लगा। इस विवशता ने कान्होजी को जीवन से बिल्कुल उदासीन कर दिया

था। दवाओं के पीछे पानी की तरह पैसा बहाया जा रहा था, लेकिन……।

एक दिन कान्होजी ने तीनों पत्नियों को अपने पास बैठाकर कहा, "मेरा कहना मानोगी ?"

मथुराबाई ने पति की आँखों में देखा। उनका दिल फट कर रह गया। कान्होजी राव टकटकी लगाये सामने फैले अथाह सागर की ओर देख रहे थे। फिर वहाँ से ध्यान हटाकर सागर में तैरते हुए जंगी जहाज की ओर देखने लगे। उस पर हवा में फहराती हुई पताका जैसे उन्हें बुला रही थी। उसकी ओर देख उनकी आंखों में तरह-तरह के भाव तैरने लगे थे। उनकी यह चुप्पी देखकर लाडली लक्ष्मीबाई की धड़कन बढ़ी और उनसे रहा न गया। "आप कुछ कह रहे थे न ?" उन्होंने पूछा। फिर बोली—"यह दवा पी लो।"

"अब मुझे दवा न पिलाओ !"

लक्ष्मी चौंकी, "क्यों ? दवा कैसे न पिलाओ ? फिर जल्दी आराम कैसे आयेगा ?"

कान्होजी कटुता से मुस्कराये और कुछ देर मौन रहकर बोले, "मुझे लगता है लक्ष्मी, अब मैं नहीं बचूंगा।"

"कैसी बातें करते हैं ?" यह कहते हुये लक्ष्मी ने पति के मुंह पर हथेली रख दी, "आपको ऐसा कभी न सोचना चाहिये।" आर्य की बात सुनकर लक्ष्मीबाई कांप उठी थी। कहीं ऐसा हुआ तो··· उनके सामने जजीरा के सिद्दी, मुगल और पुर्तगालियों के पंजों में जकड़ती हुई मराठों की नौसेना-शक्ति घूम गई · अपनी लुटती हुई शान शौकत, स्वाभिमान एवम् ऐश्वर्य नाच उठा·· नहीं, मराठों की शक्ति अजेय है। मैं उस समुद्री शक्ति को किसी के हाथों लुटने नहीं दूंगी।

क्या सोच रही हो लक्ष्मी ?

रानी की आँखें छलछला आईं।

कान्होजी ने हाथ उठाकर बड़े स्नेह से लक्ष्मीबाई की आंखें

पोंछी। फिर कुछ देर तक सोचते रहे और पूछा—सेखोजी वापस आया या नहीं ?

लक्ष्मीबाई ने मुख पर हास्य लाकर कोमल भाव से कहा—अभी-अभी आ पहुंचा है। थका-मांदा है। हाथ-मुंह धोकर नाश्ता करेगा। कहो तो मैं उसे अभी बुला लाऊँ।"

"नहीं अभी नहीं, उसे नाश्ता कर लेने दो। फिर उसे मेरे पास बुला लाना।" आंग्रे बोले।

सेखोजी नौसेनापति आंग्रे का ज्येष्ठ पुत्र था। वह अपने पिता की ही तरह वीर, साहसी, चतुर एवम् कुशल सैनिक था। अनेक समुद्री जहाजी बेड़ों के युद्ध में कान्होजी ने उसे अपने साथ रखा था और उसे समुद्री युद्ध की ऐसी शिक्षा दी थी कि बड़े-बड़े अधिकारी नहीं दे सकते थे।

पिता की बीमारी की सूचना उसे सुवर्ण दुर्ग में पहुंचते ही मिल गई थी। इसलिये उसने अपना नाश्ता जल्दी से निपटाया और कक्ष में चला आया। पिता के चरण स्पर्श कर वह उनके पैरों की ओर पलंग पर बैठा।

उसे देखते ही कान्होजी को जैसे कुछ राहत का अनुभव हुआ। कह उठे—आ गये बेटा ? मैं तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर [illegible] कहो यात्रा कैसी रही ? कुछ काम बना ?

का बेटा सेखोजी समुद्री ताकत के विस्तार में लगा हुआ है। उसने लगभग डेढ सौ पानी के जहाज बनवा कर अपनी ताकत बढा ली है और वह हम पर फतह पाने का मौका ढूंढ रहा है।....'' सेखोजी ने धीरे-धीरे सारी बातें कह दीं।

कान्होजी पलंग पर लेटे-लेटे पुत्र की बातें ध्यान से सुन रहे थे। पुत्र की दृढ़ता, उसके साहस, वीरता एवम ओज-भरी वाणी सुनकर उनकी कमजोर भुजायें भी फड़क उठी थी। आगे की बाते सुनने की प्रतीक्षा करते हुये वह सागर की ओर देखने लगे। इस समय सूरज सागर से काफी ऊपर उठ आया था। सागर के पानी में तीव्र हलचल थी। लहरों में काफी जोश था। बड़े गर्जन के साथ वे बहुत ऊँची उठ कर गिर पड़ती थी। जैसे सूरज को छूने की असफल कोशिश कर रही हों।

जब कुछ क्षण गुजर गये तो कान्होजी से रहा न गया। धीमी आवाज में कह उठे—फिर आगे क्या हुआ बेटा ?

सेखोजी अपने पिता के क्षीण जर्जर शरीर को देख कर हताश हो गया था। सम्भल कर बोला—वही बता रहा हूं पिताजी, आगे सुनिये : सिद्दी की बात सुनकर उनका एक अधिकारी धमक कर बोला—लेकिन मराठे हमसे क्या खाकर लड़ेगे। उनका सर्वोच्च सेनापति कान्होजी आग्रे तो बिस्तर पकड़ चुका है। जिन्दगी और मौत के बीच झूल रहा है। अब वह कुछ ही दिनों का मेहमान समझो। रहा उसका बेटा—सेखोजी सो उसमें इतनी हिम्मत और ताकत है नही कि हमसे लोहा ले। वह भला हमसे क्या लड़ेगा ?

इस पर सिद्दी खीझकर कह उठा—'नही मीर खान. सेखोजी को किसी भी तरह कम नही समझो। वह तो अपने बाप की टक्कर का बहादुर है। कई समुद्री लड़ाइयों में हमने उसकी तलवार का जौहर देखा है। वह कान्होजी से भी खतरनाक साबित हो सकता है। हमें उससे बचकर रहना होगा.....''

सेखोजी की बाते सुनकर कान्होजी के मन को कुछ राहत मिली। उन्हे विश्वास हो गया कि उनका बेटा अपने वीरतापूर्ण कार्यों से

दुश्मन को दवाये रखेगा। वे उसके आगे सिर न उठा सकें
कुशल सेनापतित्व से वह मराठों की समुद्री शक्ति की उन्न
विस्तार करेगा।

और उसी रात कान्होजी की दशा बहुत बिगड़ गई। र
में चारों ओर उदासी छाई थी। उनके पलंग के चारों ओ
पत्नियाँ और उप-पत्नियाँ, पुत्र सेखोजी, वैद्यराज सोह
सभासद खड़े थे। महल के बाहर सारा गाँव उमड़ पड़ा था।

कान्होजी ने डबडबाई आँखों से कहा, "जो पैदा हुआ है
न एक दिन मरेगा ही। इसके लिये दुःख क्यों? आप सब
हमारे जहाजी बेड़े के गौरव की रक्षा कीजिये। मराठों की ता
मजबूत बनायें। मैं अपने पुत्र सेखोजी को वसीयत के रूप
महत्त्वपूर्ण लड़ाई देकर जा रहा हूं। मैं विश्वास करता हूं
अपना कर्त्तव्य अपने शरीर के रक्त की अंतिम बूंद समाप्त हो
निभाएगा। आप भी सब मिलकर इस बात को देखते रहें कि ह
देश जंजीरा के सिद्दी की चालों में फंसकर गुलाम न हो जा
कहते-कहते वे हांफ उठे।

सन् १७२९ की ८ जुलाई का दिन उगा। सुबह ही कान्होजी
हालत और बिगड़ गई। वे बेहोश पड़े थे। शरीर का अंग-अंग ज
गया था। वे आखिरी सांसें गिन रहे थे। राजगुरु दत्तोपंत मृ
...य का जाप कर रहे थे। वैद्यराज ने अन्तिम बार मात्रा घिस
उनके मुंह में डाल दी।

चढ़ते सूरज की किरणें फैलने के साथ ही महान् वीर की आँ
सदा के लिये मुंद गईं। परिवार के लोगों के जीवन में अंधकार-स
छा गया।

सुवर्ण दुर्ग के किले के बुर्ज से कान्होजी आंग्रे के सम्मान में
इक्कीस तोपें दागी गईं। सागर तट के किनारे उनका दाह-संस्कार
किया गया। माटी का शरीर माटी में मिल गया। लेकिन कान्होजी
अमर हो गये। संसार मनुष्य को नहीं वरन् उसके गुणों को याद
करता है।

—०—